

049893 gyannandir@kobatirth.org प्रगानुस्य ट

प्रस्तावना.

त्या नुनाराध्ययनसूत्र लगवंतमहावीरस्वामीएमुगतिबराजता बेला ऋषसरें ऋदारदेसनाराजावेगेरेने नुपदेस दीघी. ते साधु श्रावकनेजस्तर बांचवो.जो इए मूलन्त्रर्थ बांचवाथी सुसलबुद्धि वृद्धि थाय जीबादिकनुं जाए।पएं षट्डव्य षटसेस्या वगेरे इव के त्रकास लाव सुद्ध श्रद्धा सिहत ग्नाननी प्राप्ती थाए. सकत्वशास्त्रनी तात्पर्य प्रथम ज्ञान पर्व किया एवं हे. तेदसद्धांनें प्रक्तिपामीने वृथा गमाववं नहिं। जाएापएं जरूर करवं ओइए. हासकास शेव सानकार जैनधर्ममां घए। देषायवे तेन्ने ज्ञाननी वृद्धि करवी ओइए. ते रीत देस कु सपरे पराएं कारजिकया त्रावे तेवेलाएं संसारनी सोलानीमंते पैसा खर्चायहे पण पुस्तक रहि करवी ते रीत हाल देषाती नथी. पण जो प्रथमनी रीत काढीने ज्ञानशासा बासकोने लएवासार तथा ज्ञानत्नं मारा जेकोईने पासे पुस्तक न होय तेने वांचवा लएवा काम त्र्यावे प्रथमनी घएगि प्रतोञीतां घएग त्रायुद्धदेखवामां न्त्राविने । तखनारें तो पैसाना को लिया तस्वी . पए पेसा त्र्यापनारें बीजी प्रतसायें मेलवीशुद्धकरवी जोइए. तेशुद्ध करनारा खपाबी प्रसिद्ध करना र घए। प्रतोसाथे मेलवनारने मदद आपबी जोइए मदद आपवाथी बीजी प्रतो शुद्द करीने छपावे जेम कोइ काशी देसमा ब्राह्मए। लए वागयो तेने अन्तवस्त्रनी मदद मसवाधी लए। जेने मदद नहिं मसे ते सीन टमागीनेपेट पूरो नहिंथाय तो सूं लाएं १ तेथी पुरतक सरवाववानेक रतां ग्याववाथी घएए फायदो थाय हे तेथी जो बीजावरवत ऋमोने प्रथमथी त्रासरेत्र्यापसोतो घणास्त्र बपावीसुद्धकरी प्रसिद्धकरवामां त्र्यावसे बपावनार एजत्र्यरजकरेबे.

| रवा६ | मदद श्रा | पवावासानेनुं नाम | शेबसूरतफतेला६ हरिदास हस्ते नगीनदास |
|------------------------------------|-------------------------------------|---|---|
| शेव रामजीमादवजीहरते हेमकुव | | | शेव पुनातरकुकमचंदनयु नवानगरवासा . |
| » दामजी लखमी-चंदत्रमफीए।वाव | ा. n मादवजी गोवंदजी. | n दीलाधरत मोनजी गिरगांम. | ग मूसचंदतयाजीवनतः चतरत्मुजगोवंदजी |
| » कालि दास लखमी चूंद . | ग पीतांबर मानजी | ^{११} धारशीजु ब्लाब्या गिरगांम | श्रम्भलयचंद देवजी पोरबंदरनाः |
| " खुशासलाई तथा चतरलुज | n जगजीवन धरमचंद | » बीजपारलाइकानजीवाकर्दा | ग जवराजनेग पोरबंदरनाः |
| " वललजी ऋमर-चंदलासजी | " धरमसीलाइनाराएाजी | ग सीमचंदजवेरहः नोइनसास | n लगवानजी जीवराज क ढ ईजार |
| n मदनजीजू वा | » चतरलुजनेमचंदः | तथाप्रलुदास लाई. | » लगुलाइत• हीरात्नाई, सुरतूना,्मा |
| ग नेमचंदाविसनजी. | » सोमचंद नुत्तमचंद | » त्रीकमजी छगरचंद | |
| » श्रमरचंदवीरजीः | n जेवालाईन्ग्रीधवजी च त्तमपु | 1 | " पोरबंदरनी जैनशाला तरफयी |
| ण सोमचंदमीवा | » घेलालाई वरसंग | श कबलाजवीर चंद खेंगार रेजि | » मांगरोलबंदर जेनशालातरफथी. |
| » कानजीजीबाहस्तेकडवासाङ् | ्र संसा | " कर मांनवीनयुत्नाई खेतसी. | ण वेरावला जैनशाला तरफयी मदनमीजूग |
| ⁿ बीरजीभाई रूधा, | n देक्र्यनगंगाजरहीरानेलायाः | " भ्रम्सीरायचंद्रुडमां नवी | " मडास नरसी लाइजगजीवनहस्तेपीतांबरला " धनराज बीयराज्यपूरवाला. |
| ^ग मूरजी हरस्वचद मागरीलः | Aumst a state | इत्यान् सुन्धार चारण त्र प्रमादिसमा | " न तान नान् राष्ट्रान् दूरनावा. |

| ١ | | | | |
|---|---|--|---|------------------|
| | शेव नरसीलाइ केशवजी | शेव नुधवजीनाराएाजी बंगासी | शेवचांपसीलाराहस्तेवावजी. | शेववासन |
| Ì | » त्नीमजीशामजीलास <u>जी</u> शा | फतेलालमास्तरजामनगरना | » तत्त्वमसीन्पुनेपासी | n केशवज |
| | " हीरजीलाई इंसराज. | » मानवंता रायचंद रवजीकवी | ⁷ रवजी लाइ विवले मीबजार | ग कलकत |
| | » त्मारमसत्नाई रतनसीवकीय | n वीरचंदीपचंदबीरचंदरागंबन | n मुंगरसी तेजु मुंगरसीदेवा. | <u>" वोकारा</u> |
| | | » रतनसी जीवराजः परेक्ष | » देवसी तथा केसब कचरा | ह सोकाग |
| | n बेलजी लाङ नाथा प <u>रबतन्त्र</u> ा | n हरचंदनाचा दाइत्र्यात्राशमण | n संघा कस्या ए। | n जेरुदा |
| | ाग १वत स्राक्तरमन / | । ग १५। पत त्नारम लगराम पहल | । ग के ब्यान ज ला ना चु दस्ता | » लोपास |
| | n वेसजी ही रजीधेसात्नाइपुन | । » मण्डीवागाशीक्जी हंसराज | "जेयुरबीजराजजीबाविया | n जतीगोव |
| | | » हीरजी रतनसी | n सुजाएगम् रतन-बंदत्र कुन्म तरामशैर्या | " रतसाम |
| | " गोबंदजी सालजी पोरबंदरना | ग सगना थ लाई मूसजी | » विदासरसोत्नान्वंदवीगाँएी | " नजीन |
| | » धरमसीजगजीवन | " इंदरजी जू वा हीराक चरा | ग मुंबइह्रेमसज्जिनीमार्गीफसी | " जोधपू र |
| | श नमीदासहेमचंदरवाबाईनात्रह भ वारपार सीमादेवनीजूण | ी " बूजपार मोप्राशी | स्रारसेहेरशेक्जेवमस्जीगृहेया विकोने रबादरमस्जी वेगवार्शी | " दुरुसा |
| | ं बार पार स्थाना व्यवना गर्य | । त्राचाच चक्राराय ा झाता ः | Manager of an deep report of the late of the | । य साजाना |
| | E . | | * | |

नजी क्रसनजीत ॰ रामदास जीपमु परेजः कबगुदारावालाः न्ता अतीजी छदे चंदजी. तनजी बीका नेरवासा घोटयाँ सचूनी सासमूलचंद खजानगीः रिधनजी देव चंद काविदास परसोतम म गोमाजी मयाजी. हीराचंदहररवचंद गबजाराज पबणानमीचंदसगी

न

श्रीवीतरागने नमस्कार संब्बाह्य श्रद्भंतरसंजीय बाह्यते मातपिताप्रमुष ऋप्यंतरते ऋ॰ नथी ऋगगार मिथ्यातविषयादिक संव संजांगथी विविधिष मूकाएा। वे क रहे बं सङ्गागाविष विव विनयने पान प्रगट करीस्य स्वसानपमुज काई-त्र्या॰ गुरू बे जेने तेने निन्तु कहिए एवा साधुनो. कहीसः ताथका नीत्र्याझान गुन्युक्तनी नुन्समीप रहेवानी. **दृष्टी**नें करी जाएिइं मननां ऋतिपाय करएाहार कार करए।हार त तेवी नितशिष्य इ० इम कहिए त्र्यान त्र्यासानी त्र्यहतनी गुब् गुरूनी अन् असमीपरहवानो द्धीने करणहार का॰ करएाहार. सरषी. च्र ॥२॥

गुत २

सन् सर्व धानकथी निहां अपन् इ॰ इम कहिए ३ जि॰ जेम सूर कूतरीको ह्या नि॰ काढीने ऋ • ऋषिनित जाएतिहां कोई पेसवा काननी श्रजाए नदे एवं एपो दृष्टांतें दुव ग्राविनीत वेरीजेनो ते मुषरी संपदाथी ध कएासमाने एक त्र्यसंकार प॰ मत्यनीक ए एए। सी विनयने एं॰ असं य विनयन नसनि सूयर नव त्रीजो त्र्यविनित विच यसि विनयने विषे श्रव पोताना मनुष्यनी ३। त्र्यात्माने ताना त्र्यात्मान ऋरनी २ त या जाव ॥ साएास्स्य सुवरस्स

नुनः ३

तन ते मारे विनयने सी॰ नदोनाव प॰ पामे जे विनय कीधा बु॰ त्राचा पु॰ पुत्रसरषो वदंभ न तेवी नित पर्धा ते केबो होई र्यनो. होइनि॰ मोन्सनोऽर्थ तथा ऋाचार शिष्य वेग भिन्निरंतर संध्यांत सातडोइ श्रुतपदारथथकी ऋन मुपरी निवानिस्थक शास्त्र वव वर्जी त्रान सिषामण्डे देतां नी ज़िक्त सिषं पंचपंक्तित विनीत थका मा रषे समुचय चं वंमते क्रोधा संबसंसरी परिचय हासने की माने चन्वसी वर्जे ए तथा बास्नाव हासकी मचवद्यए ॥ ए॥ मायंचना वियं उ

नुत्तर ध

न्त्रा॰ कदाचित् चं क्रोधा अवोब तनिवार झान ध्याए ने एक सी १० ऋव सूत्रने श्रिध ति अएगिने काले यव्यक्ती त्र्यक त्र्यणकी धाने नोक नधी की धा ११ इ॰ इम कहे कः चावषाने दः देषीने वच वचनन क॰ चावषा वांबे श्रा॰ जातवन घीमी 724 श्रव गुरुनावचननी श्राएासां पत मि॰ प्रकृतिसुँ हालागुरुनपण् बांखएहार कु॰ ऋविनितमागसनावनोधएी. न्तमनन

या- १

नुम् ५

त्रानिपार्य वासएाहार देशविजनरहित कारजना करण <u> ५० इराराध क्रीध</u> पर मसन हार इत्यादिगुएों करि सहित शीघ्र करे शिष्य निश्व वंत गुरु पसायग **५**रकाववया श्रवश्रणबाद्याच्या नार्व कांच क्रांध नहीं धकोन बोसे ग्रथम जूमे न बोदो स की भी डे ते मिगमि इसू नं विक ए विनयनो करतव्य ते मुंजने पियकारी ऋक आत्मा चेच पूर्ण एक एएरे प्रकारें मने ऋविनयपण् मुजने ऋभियकारी दः दुमवी भएग इ॰ दमता ऋ श्रात्मा दे दमता सार सुधी हो इ ऋ इह साकन प॰ परलाकन वन् मधान मेन ऋ श्रात्मान दोहिस विने १५ थको थाय ऋसिसाय॥ सुहाहाइ॥

<u> उ</u>त्तः ६

माठ रषे कं दन इमतो बंब बंधने करी वब वधेकरी सन् संजर्भ वसी वसी १६ वाठ वचन त्र्यव्यवा कायाए करी याः ऋयेवा यद्यपि समुच्चये श्राः पर करतब्धें करी करी मगर बानो ए॰ नबेसे गुरुने पुढि त्राविनवपएी न॰ जुं॰ नकरे सघटगुरुना सामी निश्चे बरोबर साथ लेचक पोतानी साथ ले नज्ञ ख नर समीप न बेसे. सांबाकरीने न वेसे साध

न १

बाब ऋथवा नच्नरहे एमगुरुने समीपे १ ए। बा॰ बालाव्यायका तुः ऋएाबा त्या त्र्याच त्र्याचाय काकिवार साद करे एहवानो सं सदाइ २० सावे बते **विविधे गुरु स** त्र्यावत्रासनने धीर्यवंत जनजन्ने जनसावधानपए। साजस २ ्बा हेवंत नव नपूर्व प्रशादिक. एव निश्चे नवसेव संवारे कविवारेपण बेगेयको ं नम्योधको नेवसिद्यागर्ने ॥ कयाइवि॥ त्याग

जुन क पं बेहाथ जोनीने २२ एवएणि परे विव विनयजुक्त 🕝 सुव सूत्रपाव अप्रथव सी सी० शिष्यने पुरुष्ट्रवता ऋ.१ शिष्यने न्यस्थन वर्जी. ाभेव साधु नः जः निम्त्रेकारएी प्राषाने होइ तेम २३ न बोसे बसी. ्पु॰ बीसी सा॰ सावध ऋोधादिकने ट्योयको नाषान सब लोहारप्रमुपनी ने विषे वसी साखाने विषे पए अधिया न बीदे २५ U

नुत्त. (प

ने छनो मन राजपंथ य.१ कामज पन्त्रपतिहे सावधान वचनकार फच कवणवचनकार ऋ गुरुनी लाग्लाजने उथै एइवी बुद्धे करी सीष पन सामले इ॰ पापकरतव्यनी नुपाय बे करी माने धने २८ तन तीसिषामण ऋ गुरुनी सीषामण मूरु मूदत्रम्विनीतने त्र्यएम सासएा

नुनः १०

खंन्समा त्र्यने मननी निर्मलता ए बिक्स पदा-त्र्यान भारी प्रमुप त्र्यासनने विषे रथनीकरनारी वे वली ज्ञानादिकनो पद थानकरे २०। नि॰ न प्रयोजन नि॰ बेसे हाथपंग ममुष त्राएा हलावताथको काव गोचरीत्र्या निव निकसे नुवे दिक ने विषे कासवेलाई) क्रचेषा नकरे ३० कानक्रियाने अवसरे का॰ तेकिया ऋनुष्टानना त्र्यक्रायने जे भणी वर्जी ने वसी कासन पर साधूने विषे गवेषीने षणिक सुद्दन्याहारने कास 30

या १

नक ११

नाव त्र्यति हे वेगली जन्नी नरहे त्र्यतिहे नव नुनोरहे नही त्र्यनेरा एवरागद्वेष चिव्नुमीरहे ढूंकमी नुनी नरहे निका चरादिक फाव गोचरीफरसता च न न संघीने ते भे द्याचरादिकने ना दातारथी त्र्यति नंचे थानके नावनीचेधानके लुभो रहीने नाव अधदा दातारने ऋति श्रव त्र्याघाप्रवेशनकरे. ३३ एवानिस्री ढुंक मो ऋतिवेग बोरहीने लुनो निन्दा न लिए तो केम लिए तातनइकम्म।।३३॥ नाइनुच एव न नासन्ननाइ दुरन फार मासुक पर परने कार्ज की भी हो है ज्याहार तेने यह संक संजती ३ ध अन्नोहे पान बेंडियादिक प्राप्त अन्नोहे वीज तिहा त्र्यवित पिरं॥पिरं गाहिख सजए ॥३५॥ पन नपरे ढांच्या होइ संब चोक फेर ढाक्या संविपाताना मतसर्थी मत्वज साधूनो त जवज्ञायत ग्राहारन श्रापानापता सन्हर्भाव होए एवा धानकने विषे साधसहित संजती साध जमे धी धान्यादिक सुपके निस्को पाका समयसजए भुद्ध जयंश्रणरिसामियं

१२

इव इगकहे स सान सावद्य त्रसीमनोझ कन्या भाषाने वर्जे साधु

बिक निर्दा तेची सनेह सक निर्दा हरथी ऋतियों की श्री हरारेन थी आत्मा मने निर्देशन पंतित मर- अ एो सक ने ने निपजायों संवरयोग सुक नियोगना ने साधुनी वेध जेनी सक जलां कीधो ए जीजन शाकादिक रक जली हस्त्री एजमएने विषेशा-क सान असी एहनी धनहत्त्वी इव इमनकहे सा समीपच्यी एघुनादिक घेवर इ० इमनकहे सु॰ रुमो बेचो ए पत्रशाकादिक स्त० जले मूझे घीसाकादिकनेविषे जसानीपना मोदकादिक

पं विनित्तशिष्य सा विषामण इव नद्जातना घोमाने व व षे खावती जैम गव गांधिया घीमाने जैस बेलीवतां बान् अविनितने सन युरु सिषामए। त्र्यसवार षेद पामे ३७ मुजन सुजन दतायका गिंबियस्सववाहए॥३७॥ समङ

नुसं-१३

अक गास देवे. वक वध क मेर कर कथ्याएा अपक सीवामए। देता- पार पापद्षि अक अविनीत रेबे. मुजने कारएी नीपरे परेशक सु-इंबइमकरीमाने पावादाधात्तमञ्जद्भ ॥३८॥ पुत्ताम सान ते विनित शिष्य होई पान त्र्यविनित होए त्र्यः पोताना त्र्यात्माने सिखामण देतांथका करे वे कर सिषामणाने कल्याणकारीमाने दासपणाने इ॰ इमकरीने अपार त्र्याचार्यने अन्त्र आत्मानेपए। न न न कोपवे बुर युक्तना घातनी करणहार एाद्वार ॥ ।।। नकावए त्र्यायरिय त्र्यपाएपि नकावए बुधावधाइय विव क्रोम ऋप्तिने पंव बेहाय जोनीने वर बोले नहि पुव वर्षी अविनय अगान अग्राचार्यने कु० कोप्यां जाएगिने पन प्रातितकारी पन प्रसन्त च पसमावे. एह इम यन पदपूरी।।धर्॥ १३

. .

विश्वविश्व

नुस. १४

धव दशविध जव्यापाज्यो प ्वव तत्त्वनो जाएाते तन्तेशुद्ध व्यवहार ग० ही खाने नार नपामे सन स-धर्मेकरी श्राचरतो**धको** दपूरएा व्यवहार व्यवहारने श्रादस्थी दाए गतना-नुक्तारथी तंबने ऋनिमा कः काया जः निपजावे श्राव श्राचा र्चने एीने यने तहनकरीने एंकरि कायगत जावन विव वि खिन शीघ होइ सुनगुरु ए स्कीपरें जन्जेमगुरुएने कार्य कहा है जेती सुन पर गुरुकह कार्य करे सदाए सिषवते थके तिमाहिज करे एते कार्य करो योव सो कि कीर्ति ते विनित्त होई सन्सदाए एवा विन- नच जाएति कार्य करे विनयवंत होइ कनेविषे यना गुएा गुरुना ऋनुष्ठाननी पजतां कार्यं करे

94

नुसः १५

पुरु गुरु जेवीनितनें पर प्रसन्त सं गुरुतत्त्वना जाएा हे पुरुपूर्व सेनाकरि जि जेम श्राधार भूत ञुष्पाएीने सन्त्रा परिचय मूकाव्या ब प्रथवी धारमूत विव विपुत त्र्यव मन्ति दिक स्तेषपा म्यानी नीक के होइयसी केवो होइ प्रसन्त्रथयीथका घएा। चिंव तेम प्रवर्ते वसी संग्रहा असमी वे जहने तह तपद्स सं रुध्या है त्र्याश्रव जिए क०श्रद साधनीकर विधसमाध तेलेकरी जेमरुचि होई तहज तच्य पार पासीने धत सन्तेवि देन ज्योतिषवे मानिकदेव पूर्पूज्यावे चक्रव-पं पाच महा मनमेटी तप सब्धि रूप गं॰ गंधर्वादिक व्यंतर व्रतनेविषे तीरिक मनुष्य ज्योति कांतीबेजेने विषे पालिया ॥ ४७ ॥ स दव

उत्तः १६

मठमानु रु. प बापनं वीर्य वे पूर्वी कारण जे हनं सि किस इ इ होइ अथवा दे देवता होइ अवधी नारह्या वे ए विनयसमाधि प्रथम ऋध्ययन संपूर्णे थयुं है।।१॥ न्याव ह विनय वंत सहै बमे ते माटे परिसइ ऋध्ययन पारं ने हे. नस्यो भगव तेंज्ञानवंते एक एम कहा सच तपसि बान बावीस परिसह जिनसासतने विषे त्र्यन परिसह जिन् गोचरीने विषे सो गुरुनीसमीपे न जांएनि परिचत करीने जांएी सांजसीने श्रुज्यास करीने जीतीने

80

तन्तुएाना फरसनो परिसाह १९ रोक रोगनो परिसह १६

रोगपरिसहे ॥१६॥ तएाफासपरिसहे ॥१९॥ जञ्चपरिसहे । ५० प्रज्ञा नुकर्षनो परिसह २० ऋ ऋजाएपएगनो परिसह२१ दंव समक्षित

गोत्री महावीरे परूपी

नि साधु था संजमने न न बेदे न पचेनहि

नुक्त २०

सन्तेहनीमध्यनाग तहवी पातली. तला अथवा का॰ काक जंघा वनस्पतिनी गांग त्र्यसंच तेसरषा अचए। प्रमुख जेइना कि॰ सरीरे दुर्वेषा ४० न साजसें करि वे मार मर्यादानी जांए। मर मन जेनी एवीथकी प्रवर्त ३ हवे तथानी परिसद्द कहे वे न्य्राहारपाए। नी नथी दीनान्य तिवारपूरी फर संब संजती सी सिचनपाणीने सेवे नहि सान दगनसावधा न्प्रत्यत न्त्राकु लच्याकुल शरीर थाए जेनो पिन्न्य्रतिहे त्यानंत *স্মা*ত तं व हषाने सहे परिसहने ५ दिकने विषे प्रवर्तना साधने मुष् जहनी

२घ

ग्रनः २५

संव संकाएवीतो नवनजाएति त्र्यक्र त्र्यनेरात्र्यकत्यनीक नुब्हवे सिद्यानो परिसह कहे बे नुब्हनी धको श्रासन प्रते २१ प्रधानताढ तापनीवारण एवी नीची तापवा निवृत्ता त्र्यवमासए।॥२१॥ नाव सञ्ना त्र्यादिकनी मरजा पान पापदृष्टि ज्या थानकं करितवतप विव मरजादा चुलंघे २२ ास साध्य था॰ संजमने विषे बलवंत दा चुलंघे नहि प्रमादी नुपाश्रयन पामा नातावसावहन्नद्या किनिकस्यु एकएकएसम्बद्ध त्र्यव श्रयवा त्र्यसो एकएन तिहा विषम *ऋ*न्सुषड्घऋदिया नीक लनीक थानकने विषे मुजन करस कासपरिसहकहे वे त्राव आकास सन्सर्था होई बाब्बास मुरष पन्नकरे ऋोध वचनेकरि यहस्तादिक साधूने कोसेद्यपरोलिस्क्रा नतेसिं पइसं जर्ले ॥ सरिसो होई बाबाएं ॥ तम्ह्रा लिस्क्रू न संजर्ले ॥२४

२५

श्रु २६५

दान्त्र्याकरी गान इंदियना समूहने तुन्त्र्याषोध्योधको कगेर नन्ते बोलएाहारप्रते हेष एां असंकारे फ करो लाषाने सेषामाह नगएो कांटा सरवा रलाषा त्सिए। निन्वहिखा दारुए। गामकरगा तंतिं क्मानं नुत्ऋष्टी मन्मनेपण देवनकरे. मण्पिनपर्नसए ॥ ततिस्क परमन्त्रा नर्नधी जी जीवनी विनास एक एम एँ एपिए विचरे नाय किहाक त्रप्र• त्रप्रागारने लिन्सा इन्दोहेलो निश्चे लोन्त्र्यामंत्रणसदाई

२९

नुस् २३ गोन्गोनरीने पन्त्रवेशकरता पान्हाधा नोन्स्कवें सांबानधाए सेन्त्रवेयत्वसो त्र्यनगृहस्वावासएका र्श ल्ला गोयरम्ग पविवस्त ॥ पाणि नोस्तपसारण्॥ सेर्न हवे पनरमा ऋसात्मनो परिसह प॰ गृहत्त्वना लो॰ लोजन नीपने बने सन्ताचे श्राहारे ऋ ऋषेवा ऋ घरनेविषे स्थाहारने गवेषे त्र्यान एव कदाचित् के नयी पाम्यो त्र्यवसंलावनाए त्र्याहारनी दाले जोन जो साधु एणी परें सार त्रागले कालेसई मनरहित सालना वाहन सलामि ॥ स्रविसाला स्कर्णस्या। त्माने थावए

नुत २७

पन्यज्ञा पुन्रोगे फरसोधको तिहां प्रज्ञानेविषे त्र्यात्माधापे तेन तेपिनगएत कराववी नन त्र्यन मकरावे किहांधी सन समाधिसहित रहे त्र्यनुमोदे नहिनोकरेम बते त्र्यः त्र्यहियासे षमे सहै ३२ विधे त्र्यन त्र्यात्मानी गर्वषक जं जेपिन गएन वे नन्परगृह रख पाहे नकरावे हवे त्रण फासनो परिसह सतरमी त्र्या न्त्रास्प वस्त्राना द नकरेपोतें घणीने तथानभ्रसाधूने सुषवरतीने तबतृणाने विषे सक सता सा होन्होइ त्र्यान् शरीरनी विराधना ३४

धुने

ए ब एए। परं जाए। ने नः लोगवेनहि तंवत्रम्मनी मरजादायी स्प्रियिक तथा स्प्रकष्पिनिक जंवजे तद ऋ घएी होइ

त्रुणें करी तब पीम्यायका साधूने ३५ इवे१ च्मोमहलपरि २ ज

नसंवति

ऋ २

નુત્ત. ગ્રહ્મ

गान्सरी मेन मरजा दा सा पंत्र सरीरने वन श्रथवा परसे वेरज ला थिन जुनालाने सरदऋ तुने सुषजिंकरि गीतेएं करीस मुचे तापेकरि त्र्याव त्र्यार्य धर्मे चारित्रधर्मने प्रधान आएगिने जाविन सन्सरीर लेन विनास होए एत ले जावजीवसधी जनएम हां लगें र्जश थको कार पुरस्कारनी १० मी त्राव नेमस्कारनी त्राव नुवी नुत्नी थावी साव राजा कुवकरे निवन्नामंत्रण परिसह कहे छ त्रप्राहारादिक्नी करवी साधु कहेवा न्य्राव पात सा कषाय है जेने त्रान त्रमस्प हे वां हा जेने त्रान त्रातात कु लेत्राहारनी दिक ने विषे गृद्ध नहीए एवा साधुहीए मान सन्मान पामे के साधु होएते प्रशंसेनहि

ुतः ३७

हवे प्रजापरिसह कहें इवे तथा जे सापु एम कः शुलकत्रं व्यविनयादि नारं ग्यान पामीएए नाः तपे नहि सत्कारादिक दीधे ऋएादी धे बते प॰ हवो फ॰फ स ब जेनो एवा कर्नच्य प्रजावत ३९ ॥३५॥ सन्ए मए पुरुपशादिक पूर्विकति केव को इक प्रश्नने पूर्वणहार केव को इक्यानकने विवेएम जाएरि प्रज्ञावंतगर्वन करे बली एमजाएरि गर्व नकरे ते कहे छे छ० सन्मध्यको जाएत मे ार्वमकरी जाणीने कर्मनील पराजनकी घा कर्मेफल कः कमज्ञान फल हे जेहनो एहवा की धातिएका ए॰ एहवा श्रात्माने स्त्रासातना रएा त्र्याबाधकाल पहिलां तेरासी नुचमकरको थै ताइरा नुपराज्याकम ज्ञानएम पदा पत्ना परिसह धर महिन एवमस्सासि श्रापार व्यात्माचे एहकाचारिका मेन मिथुनथकी निवन्धी एन से विषयसुख जेन्वणीहों सान्दात् मगर नजाणे जेधमेक वीधर्मवास्तु स्वरूपजेपदार्थजेहवोडे स्याण णवगंकर्मनरकादिक्तोकारणाउसका नेविषेत्तं निर्धक वती फीकट बांम्या स्वन्यादरीने मेजुणा ने सुसंवमो क्जोसरकं नात्मिजा एगा मिनवक्षको धम्मं कन्नांण पावगं

ग्राव्य

नृत्तः ३१

तन्तपत्नद्रमहात्नदादिकते तप नुपने निधा पन प्रतिमा १२ साधूनी मास १ आदि एव इएी कथाये त्यमुखने पन बन्बदमस्त झाननी आवरए। राखना ए तिबंधे विचरे जे मुजने नसिद्धांत संबंधी त्रा त्र्यांविलने त्र्यादरीने देर पि वर्जी त्र्यादर करीने सिध्य २० रहप क दिपए तप अब ऋषवा नेपवास सो चप्रमुख क्षेकरिक जेनस्यो लोगथी सीने नथी वांहा यातरनी वांबा हिवाविनवस्सिएगे अञ्जवा वंचिर्रमिति इइलिखानचितए ॥ ४४॥ असिक त्र्यन्त्र्रथेवा निश्चै जिनतीर्थेकर मुन्ध्वा जुर्गे गीता रथ एवा साध विनवे नहि एवो कामतायका फरस्यो पाम्यो किएो २२माहिले ऋोरें देशकालं विषेगो े नुदृश्यो एतले परिसहऋष्ययननो ऋर्यितव लेसेथीकहाँ परिसहसहेबाकद्मा नेसाल्डीचोरंगीजीबनेडर्झलपामबोनेकहेबेध६ तिएो प्रवेद्यो प्रकाश्यो चरी प्रमुषे एहवी सुधमी स्वामी जंबूपते कहे

च् ३२

इ॰ इति परिसहन्त्रध्ययएां संपूर्ण ॥ २॥ च॰ चार प॰ चत्कृष्टान्त्रा॰ ऋं छ॰ पामतादोहिलो इ॰ न्त्रा संसार मा॰ मनुष्यपएं सु॰ सिद्धांत मा जंग जीवने गमुक्ति पामवानां नुसालपवु शम्द्र सद्दर्णा संव संयमने विषे यव्वकी बीव बलपराक्रमनु सवपाम्या एव त्रा स॰ संसारनेविषे नाव नानामकारना गीव गांत्रने विषे फोरवर्षु ॥१॥ संकारे जान जातिने विषे नाः नाना प्रकारना कः करीने पुञ्जूदे ज्यूदे त्नवेकरि लक लस्योजीव सर्वे ॥२॥ एक एकदा प्रस्तावें देव देव विन संपूर्ण लोक नुपजवेकरि एा गः जीव जाय ए एकदा तेचे कमें करि ्कमार संबंधि कायने विषे वारपढी **म**स्तावे

गुता ३३

ते वारपढी कीमापनंगीया ॥ तब ने वारपबी पिन कीमी होय ॥ ध॥ बापनीजातिथी कं कर्मने कि मसे क सं सर्वे ऋथेनेविषे जैम खंब सन्ससारन राजा तृतिनपार्म ५ विन विशेषें हुए।य बे त्र्यनमनुष्यनी योनिविना नरकादि बन्धएगि वेदना योनीनेविषे पीना पामे बे थाय जीवएमजनिश्चे त्र्याव प्रह्मा त्र्यप्रामन टालवेकरिकव त्र्याव त्र्यगीकार कर त्र्यनेकत्वपरित्वमुणकरेतेत्र्यनुक्रमें सो विशु इकमने

-双·3

33

मान मनुष्यसंबंधी शरीर मा॰ मनस्यपएक ब्लि 38 श्राच कदाच संच सांत्रलवु तन्पा त्रवारप्रकारना तपने खंव दामाने त्र्याने चसी बन् घएा। जमासी प्रमुषत सुव सूत्रधर्म सालातीने पन ल्रष्ट्र धायबे ए श्रदापण्य निवजीनहि अंगीकार

करे नहीं

सन्पामीने सुन्सां धन्धर्मनो <u> इन्डर्</u>सल जेन्जे सोन्सा पा त्र्यंगीकार धमी लसीने लंबवी सोरसांत्म नेवमोक्त मार्गन सन् शुद्ध सीने सदहणा बन्धणा धर्मने ज्न मान मनुष्यपणामा स्राव त्र्याव्योधको जोव धर्म धर्मने सोव सां जेजीव पामीने पितवकाए ॥ १०॥ माएकसन्ति स्रायाने ॥ जो धमा सोच

30

चेपा ३५

संबन्धात्रवनी रुधनार निबटादी सोब्कायादिकरहिता निर्मल स्राय धव जिन लाषित धर्म सः मिथ्या एवा घ॰ घत सिचेशो जेम ऋशि स्वस्त्रपएं पाने विनदासीने कमना हु जो निष्या त्र्योताय नहीं तेम धर्मवंत जीव निरात्तिपएंत पामे न्त्र्योतायनहीं १२ त्वादिक तेने स्मृणा इन ॥ विन्त्र्यनेक प्रकारना सीन्द्रतादिक शुद्ध जन्देवता होय नुन प्रधान माहे दारिक शरीर ढांनीने **कियाएक**री प्रयान परें।दे० तेजें करी नधी १४ क्रपनी करनार देवताना गमाह

३६

नुसः ३६

तः तेविमाननेविषं जधास्थानके पु न्यसंख्याता पूर्व नु नुपने मार मनुष्यनी जीर योनी द्वाच्चाकर पोचपुरुषए चच्चार काव काम खंब खंध समूह नान ज्ञाति वान वसी अन् रोगरहित मन्महामज्ञावंत

3/3

<u>ज</u>. ३3

धर्म पाल्यो बे नत्रोवो जीव दुर्लल जाएगने मरजन इण्इति चतुरंगिया नामक त्रीजुं स्त्राध्ययन सपूर्ण ॥ ३॥ इ० एम कु ककु बु र्शाधीन\$ 11 30 11 प्रमाद जाए त्राएा सरएा

३८

30

जेब जेपापकर्में करि सन्मेलेबे द्विं हिंसानाकर अन्त्र्याजितेंद्री ध॰ धनने म॰ मनुष्य गः केहने ग्रएकरे ॥१॥ वे॰ वेरे बंधाएा अका न॰ मनुष्यनरकने विषे नुपने ॥२॥ ते॰ चीर जेम सं॰ षात्रना मुषने विषे वि रह्या थका मनुष्य विषे पम्योधको तपयविष्ठ प्रति वराएमबद्धाः कि॰पीमाइ पार्वापनीकरणहार ए०एम वया त्नाग साः साधारण जेवली परस्स श्रद्धा ॥साहारएजच

For Private and Personal Use Only

नः ३५

न तेबां बं बंधवपएर नु न पामे ध वि धनेकरी ता त्राए। न नपामे ऋ॰ ऋ कात्मनिषे सरए र्यकाले ॥ नबंधवा बंधवयं जुवेति ॥ ध ॥ विकास समक्रित क्षपदीवी अरु त्र्यज्ञाननी मोहरूप त्र्यनंती वित्तेण ताण नखलपमत्त दे देषीने त्र्यः त्र्यदीग सरषो सु द्यानिदाएसुनां छनां त्रप्रंधकार होइ ने न्यायमार्ग पः उत्यनिदाएं गतोसंजमजी द्रवृमद्रवृम्य । घो॰ रीदकाख श्रा॰सी घे सब सरीर प्रजावंत सं संकाताथका जं जेकोई से पा पास ३० एसंसारनेविषे मानती ला लालना अवसरनेविषे जीव्संजम जी ततव्यने धारीने सारना स्वस्हपन सरपा **जांकेंचि लालंते जी वियबूह** इत्त पास

ગુ.

नुव पामे मोन्दाने अप्राव निश्चीं जव जीमसीखब्यी म कर्मतथा सरीरने टाले १ बं॰पोताना नि॰ रुधि प॰ जाएगिनें डांदाने ॥ ७ ॥ बद **नुब**इमारक च वित रागने खांदे तक ते खिक शीध तक पामे मोक्तने चाले अप्रममादी माटे तुम्हने सानिश्रय यांदीने विव विसवाद पामे सिव क्य पामे पर्व ए॰ जपमा रिव दीघि न धर्मकरी विन बांमवानात्र्यव तेन तेमारे सम्यक्ष्मकारें सरने पार्भीने कामल्तीगने सावधानधः स्वरूप समतात्मावराष ন্ত্ৰ ভ

अप्रे प्रगित पमतां रव राषे विचरे त्र्याव त्र्यममादियकी १० मुव वारंवार मोव मोहने गुणकारे जिन्जीवणहा पोताना आत्माने ना साध्न सन्स फा॰ शब्दादिक फरस न्त्रा॰ स्राक्तरा जि॰ सुंहाता जे ते॰ तेशब्दादिक मनेकेरी नकपे हैं प नकरे ११ नुपरे लि॰साध फरस ब्दादिक फरस नतान रः जुफ्जतोधँकोराषे बन्घणु लोन् लोल नुपनावे तन् तथा प्रकारना म॰ मननकरे काम लोगने विषे जीवने तु समिकतादिकें बोलतापरनाकीधां पीतायका परवसे पन्या है. संसकृतलाषाना बोसएा द्यास्त्र तेहना परूपए।हार

श्रुः ध

ध१

धर धर

०एपूर्वेक ह्या ते त्र्यः त्र्यधर्मना इव तजनां यका जा॰ जाव इण्डमक ककु खु ॥१३॥ हेनुकारए एवा मिध्यानने जीवसुधी अ॰ ससारसमुद्र म॰मोटा लवरूपनुंघ 11811 प्रवाह ने जेहने विषे ७१ हा देवा-इ॰ ए नपदेशने के ता द्वाया 'लाषासहित मरएा ते ऋकाममरए। चे से बीज् ऋलिलाषारहित बा॰ ऋज्ञानीने श्रव श्रकाम मरएतं सकाममरए। २ तन्तेमज रबी कुए धर् त्रप्रकामतु

ર્ચ. ઇરૂ

श्रील० होई धानक त्र्यकाम मरएा कामलाम यद होइ का कामलोगनेविषे व्याथीनपनीजेरति त्र्याव्या अन् वे गान् अधना नन्नथी अधेवा वि त्त<u>रेपामिएत</u>्तेता झानी पाम्या त्र्यां विवापुणो ॥६॥ जाएेए। सिंहां स्वामिइ इवासे

≱T. u

र्जे० धध प॰ धीगइपएं का कामलोगने ऋ अप्रातिहेरागें के क्स सं सम्यक् मकारें तः निवारपवि पव ऋंगीकारकरे बे ु कामत्नागा रुपुराएए। अन्पोताने अर्थे अन् अनर्थे बोसएाहार त्रज्ञानी से श्रेय त्मलुं ए • एममदिरामां सनी का • कायाए व • वचने करी म • वामीत लोगवबी एम मांसने ए भ्रवसी थको भतारा दु॰ बीदु प्रकारे रागद्देष तथा मिध्यात सि॰ त्रावसिन् जेमेबी हु प्रकारे माटीनो संचयकरे पीम्यो रोगें करी त्र्यविराति सं कर्मनो संचयकरे षाए त्राने सरीरे घरने १० 88

मा ५

86

ર્વ.

मो॰ मिथ्यात मोइनि जुँ॰ ज्योतिवंत ऋन सुधर्मादिदेवलोकथीमां नि अनुत्तरविमान नु॰ सर्वथकी सुधी त्र्यनुक्रमें संच्याप्त संकीए देवें करी एपांचित सेवए कित मोहाहि जि जसवंत देव १६ दी विधिन्मान इ कि दिवंत त्र्याब त्र्यावास विमानएवा विमानने विषे देवता जे होए त्र्यः सूर्यना कांतिथी त्र्यधिक पर मला कांति त्राव ततकालना नुपना सं ने सरवा सदाए दीसे पुणा बेजेनी २९ ालि॰ साधु बार् अधिवागृहस्य बार्ष जेन्ने कोई उपनामकरे अतिहै निर्मातिही सेवीनें

र्जः चुः

बुन्इंडियत्र्यने त्र्यात्मावस बेजेने एवा संजितनी सुंदरगती. सीन सी खवन बन् पंनित समिकत दृष्टि नेसांत्नतीने नः त्रासन पांमेमः मरएने वेने चारित्रवंत करिसहित्वे वि॰ मसन्न करे वि विशिष्ट लाला पंतिनमरएनि द्रदसविध यतिधर्ममाहे खंग कंमारूप धर्म करीने विसेषे त्र्यंगीकार करीने विच श्रुक मननाजींग त्र्रपाहीए। करते बते एत जेमननाजींग सहीए। नकर सन तेह्वो जेह्वो प्रवर्जा सेवाने समर्थे हतो तेहवा प्रकृतमाटे *न्त्र्य*० गुरु समीप न्त्रव हर्व मरएाकास संवन्नावंबते न्त्राव समस्तपकारे कं चांबे यो दोमना नुला लेव विनासने हा **घा॰ घातयनह** एति थको कांटाने

ગ પશ

ति॰ त्रएमरएमां हे त्र्यंगितमरए १ पादोप्यम्न २ लत्तपच्चषाए ३ त्र्यः त्र्यनेरे एकको इकमरएो मरे साफ्न देः इमकुं क कुंबं ३२ सकाम मरण मरे तिबेमि ॥ ३२॥ जा॰ जेतला ऋँ मिध्याति ऋ स- सधसा ते पुरष उषपामवाना सम्मन् ॥ ५ ॥ द्विपीमा बन्घणां वार मिथ्या ज्ञानिपुरुष कारण है उप लोगवणहारः स॰ विचरीने पं॰ पंमिन त॰ तेकार पा॰ एमजाएी जे संसारतेपास हे जाउँ एकेंदि यादि जाल पामचानी मार्ग है घएगे एलएी तम्हा मिनमित्राइ लून संघला कनकरे २ मा॰ माता पिता ल॰ लायापत्र य॰ वली एक नुदरना न भाः लाइ जीवने विषे पना कपए ॥२॥ मायापियाद्वा सा लाया ॥ लद्यापुत्ताय नुरसा

ર્ પર

सुरुपीनापामता जीवने पोताने कमें करी ३ ए॰ ए पूर्वे कह्या ते सं॰ पोतानी ऋर्यने पु॰ पूर्वे जेह सुपरिचय होइ नः न वार्व ए। त्र्यसंकारें संजेमपालीने का॰ त्रालिसाव करे तेवा रू॰ रूपनी था॰ गृहादिक मनुष्यादिक बां मीने करनार देवता थासे ना॰ नहीं ५०५ वथिकी मुकाबबाने ६ न्त्रव मननेविषे सव सर्वे सुष सर्वे मकारे इपना संजीनिधी समर्थ पन्तता जीवने काइमोयए। ॥६॥ ऋप इंड सब्रे सब्

चन ६१

न्म्राभन्नागमिए सुन्त्रमिहे घणे कार्से पए १० ए० एणिपरे हारो पे पोता नी ज्ञान बेगती माहे थी कासें दृष्टिन्त्र्यादो चीने जोजो मनुष्यनी जोनीमनुष्यप्णात्रते मण्मनुष्य पएहं पांसे ते केवी होए १० सि॰ल ५परिएगमादिकच्यारशिष्याएं । मान मनुष्यसंबंधि जोनी कः लोकिककरएी साची पान प्राएी जीव २ च हे जेनी ते सत्यवादी निश्चेते मतीनकारी यासुवृत्ति सं प्रधानमाहे प्रधान मू मूलगीपुजी ऋ अपिकम्या दिकनी मनुष्यपणाप्रत गुएसहित

દ્દ્

ઈ દ્વ

जि॰ हारतीयको न न जाएी ऋपित ए॰ एपिपरे देवपापुं म॰दीनपणारहित आ॰वासि न्या॰ यहत्त्वजा क॰केमरि जि॰ हारवीएवी देवम ाले साध देसवृत्ति चारए। नुष्यपएम कागिए व राजा ३ वाणिया धे ए ५ द्रष्टांत जन् जीम कालना त्र्यम नुपरें सब्समुद्रना पाएरी संघातें क्र॰ मालनी ऋगरी श्राव्यमीपें २३ दे॰ देवतानाका मि॰ बिंदमात्र सर्वा ्नपरं पाएगना मलोगन इं एकामलाग क किस्यं हे हे तूने जोव त्र्यणपामता सुद्रकमेवाबना करवी तेत्रम न० नजाएी त्राझानीजन मिध्यातादिक तेजोग खेर पाम्या सुद्धर्मनी पासवी २४ विषयादिकने विषे त्र्यास क्षप्रकं हेतु इब एस जीगखेमंनसंविदे॥२४॥

६३

जित ध्र

जं॰ जे लए। बितल्लाष्ट्र थाए ते साल सीन ज्ञानादि मारगने अ आत्मानां ऋरधविएासं वर्त्या पुरुषने व्यर्थ नाः निवएसि जब जस कीर्ति ३ सरीरनी वर्ण गंतनी सु॰ सर्वे सुषए ६ बोल रादिगुणनी सलाधा ध त्र्प्र**धरमने** ते पुरुष जपज

६्४

नुत्त ६६

धी॰ धीर्यपएं देषे धीर्यपएं स॰ षमादिक दसविध धर्मने विषे कोमलपरिए।।मपरोप्रवर्तवानो सलाव न नर्भनेविषे न नप्ते २० बेजेने एवानु धीर्यपणु देषे चि॰ बांमीने नरएसु नववहाई ॥२८॥धीरस्सपस्सधीरतं सद्यधम्मा एकवित्ति। न्या न्या न्या निष्के नेपने २० नुः तीलीने जोजो वचन बार बाल ऋ ऋज्ञानपएर्त चे पुनः एम च ऋ पंक्ति बांकीने ज्ञानपन एवा जीवने त्र्यां कार लए। इ॰ एतलयं एहवे नामें ऋष्ययन संपूर्ण पयो से॰सेवेत्र्यंगीकार एगेन इ साधु अं श्रायिर श्रव श्रासास्वती द्वा संव संसारने कु चएगा कुछ जैने विषे ए ध विशेषएग संसार कि सुं संलावनाए तं वे ने करणी जेव जेणी क ना एवा एवा संसारने विषे विषे ादे पदारथ श्री कालधी संसारंगि इस्कपनुराए॥

For Private and Personal Use Only

६५

जन ६५

पु. गंभीने पहिला नः सर्नेहने वलतो अ सनैहरहित तो विवारपढी कपिसमुनि नाव ते श्रीताज वि मिध्यातादिक पासंथी विशेष ला नुपदेस कपि एमुनि के ने वि विसेषेगयों ने मोह जेहथी केवा बेमु॰ साधुमाहे मूकाववाने अरथें तः तथाप्रकारना कर्तसना कारणजाएरिने से सर्व का॰ काममनोझ शब्दादिकना जारू प्रका देपती यकी નું. દર્ફ ताः बकायनारेषः त्नोः त्नोगरूपत्रप्रावन्त्रामिष विवतनेविषेषुतो हिन्त्र्यात्मानेहित निवमोत्तः वुतविपरीतबेजेनी बाव त्र्यजाए।धर्मनेविषे एटले लोगरूप ऋ मि ए बेना नुब्नुपायने विषे त्र्यण नुदमी मंबमुरष खे च षेलने विषे वधाए नेम इण्त्रानिहे तजता इण्एकाम लोग ने निह सोहलां कामलोगनेविषेबंधाए५ दोहेला सु-क्रमावतना धर जे॰ जेसंसारस अ॰ तस्तादी है आ बे एवा संसारसमुद्रने नार साधु जेहीए वा॰ वाषाया जेम ६ स॰ साधु बो स्मन्हो त्र्या त्र्यापातायका मंन् मद् धर्मकरवा निन् नरके जाए बाव त्र्याचा पार पापद शेकरीने सरधा गर्गति

63

. ઇક पान्प्राए।वधने नहन्त्रा० न त्र्यनुमोदे पाएवहं व हिंसाने ने अपाजाएी अनुमोदे तेनसच नमूका मुच मूकाए ए एक किवारे पए। सर्वे द्वप्रथीएं ॰ ऋतंकार वा॰ वचने न्प्रर्थ ५ निर्मे पाव तेमारे ं जुरु पाणी वर जेमजलयकी सुत्तरी जाए जर नि॰ जाए ते पापकम रषपाल ते॰ तेमाहिसो ने॰ ऋ॰नेकरेवध यथी करी त्रसने विषे जपना मनि चद्यें करी कीएक जीवते करी करी

नुत्त ६८

ऋ•पोताना वः निश्च स्थापे घाः त्र्याहारनेग नेतः तेवात्र्याहारनिष त्र्यात्माने साधु ' ववरा पं निरसने चे समुचे सेवे सी॰ सीतव नने मं•बोरक्काटने १२ ानवीहने ऋरथें स्त्रीपुरुषनालन्दाएा बु॰ नकहिए ए॰एम आन स्राचार्य इब एमनुष्य जीवस त्र्यवतपसजमा 13 साध्यस्प जन्मनेविषे जमजीयत्यने निर्म्मणकर्तुक ते साधु नक्तते समणा बुच्चंति एवं श्रायरिएहिं त्र्यस्कायं ॥ १३॥ इह जीवियं

र्ने ६२

ते • ते काम लोगना र • रसने विषे सः समाधिना जोगथी नु॰ नुपजे गुद्ध थया. थया त्रप्रवारंबार परिल्लम एकरे बन्चए। कर्मना लेन लेपेकरि लेपाए। बोन समकितनीला निकसीने जीवने नरने **ा**री परे ज•जिमश्साल पुम पनादिकेकरी पुरोकरता दोहेलो त्वतिम २ स्तिल लाब सात्न थकी सोल श्राव त्र्यातमा लोत्भी जीव १६ नकरी

30 2

नो॰ रु रान्तसी समान स्त्रीने विषे रवे कीमा करे जन्जवा दान्दाससंघाने जैम दास पाहे नितवा काय कराबीने पोते कीना करे तेमाटे लाविविसतारीने. धन्बह्मचयादि चन समुचे मनीगन त्यजे विश्वासः नाए क धर्म ते बन्निम्बलयाए साधु क ॰ कपिलमुनी। न पद्पू वि॰ निर्मल प्रज्ञा हे जेनी नेपों राध्या . ઉર

चि॰ गंभीने एत- अ सन्युषधरी दः बलचतुरंगीसेन्या त्र्यंतनुरपुनः सजना मिन्नियिला स॰ ऋनेरापुर ज॰ देससहि सांवाना कोलाहल ययो त्र्यात्र्यो ज्ञानवंत ध थीवनादिक लाव थी ज्ञाना-मि तइयारायरिसिमि निमन्निलिनिरकर्मतं दिक धानक तेथानक केवो के जब प्रधान सब सकें दबाह्मणाने ऋषे एवा थानक प्रते सावधान थया बे निम विचारणा रूवेएां ॥ इमंवयं एा मञ्जवि राजाएं वे ऋवसरे

ज. ज उन्हें बेखोक इन्हमक कर् बुं इन्एकविवियंनामा आवमो अध्ययन संपूर्ण लोव लोकने उक नधी जुदय मोब दर्सन मोह सब संला पोवपाब ली जातिने सर्वस्वयमेव त्र्याफणीए त्र्यन्मधानश्चनचारि- पुरुपुत्रने नि॰ नीकले के घरथी त्रधर्मनेविषे प्रतिबोध पाम्यो तेनमीराजा दे ब्देब लोकना वः प्रधानलोगने लोग सरिषा लोग निमराजानेवाबे

. કર

मिनमिथिता स॰ ऋनेरपुर जन्देससिह ब- बलचतुरंगीसंन्या त्र्यंतनुरपुनः सजना नि॰ गंभीने एत- त्रा॰सन्प्रथभी तबे सांवाना की विलापादिकनी शब्द ऋा॰ जता त्र्यात्रमी ज्ञानवंत ध कोलाहल थयो. तिवारे नः नमी घरधी निकले है श्रे॰ सावधान ययो रा॰ राजकु रिषीसर तैराजकषी थीवनादिक लाव थी जाना-दिक धानक ने थानक केवो के जुन प्रधान सन सकें दब्राह्म एाने रहेपें एवा यानक प्रते सावधान थया है निम विचारणा त्रएम्स राजाएं वे त्र्यवसरें

चुः **उ**३

का को लाह सेंकरी व्यापित है सुन सांत्र से दा हद्यने मनने न देग पा॰ राजानाम कारी शब्द एहवा है ॰ हेतु त्र्यातला लोकने का नेपरजीवने जेह्यी देव नुपने नि॰ सालवीं तः तिवारपढी नमीराजे ऋषि ते ऋर्धने उषन्हेतु नाहरी दी द्वा तेनापरित्वमणनो कारणाएवं प्रेस्ता सीव सीतल बाया में मनने रम बे जेनीएवो चे वनने विषे मन मनोरम पुन प्रिषया ही इलायनीयको ब॰ पंषीत्रप्रादिक घए।। जीव ब॰ घए।। गुएनो करएाहारक्रती सन्सदाएं ए करी

For Private and Personal Use Only

नुष् प्रध

ए॰ य॰ उनः ए स्रर्थिनि॰ सांत्मधी है॰ हेनुए कारए। लो॰ एषंषी १० विचारीने दे ब्देवेंद्र शकेंद्र शमबोलतो कुन ११ ए॰ एम तस ना॰ नयीजोतो नन्त्रसकार गवन् वारपढी ॥देविंदेइएाम ब्रवि ॥१३॥

श्रान्थ

नुष ७५

च वांम्या वेटा ५ लायजिएों किं काए ऋस्पमा मुब बसती बती मेव मारु नथी त्रपएा १ध म्ब बस्त ऋ ऋपियकारी नः नथी १५ पि॰ एमाहरीवस्तु प्रियकारी वृतला मुब्सा धुने किक नथी थो मं पए। पएन्स्रलषाम्पी वि विसेषेपकर्षे ए ई एक लो हुं एहवा -एकत्व पएगर्न स्य स्रिएागारने लिल्साधन प्रकारंत्रप्रारंत्नपरित्रहथी मुकाएए बे तबतिवार न॰ निमराज्ञाषि देच सर्वेडएमबीसती पेरचोधको पढी डनातन

ऋ० ए

ye

. કુ का॰ करावीने एा॰ गो॰ पोतिने पतिष्पए शिकमाः जि॰ षाई सु॰ सोसुषनो घानकरेते ति॰ तिवा। गे॰ जाजो रव॰ हेषत्री १८ वचना लंकारे लोगलकोटन पत्याकोग विति शता रास्त्र करावीने रपढी कार इत्ताएं ।। गोपुरुदा तगाए। या जुसु तग सय धीने तन् गढिस रवित्या। १८ ए॰ एक्सर्यने नि॰ इत्यादि है॰ हेनुएं कारए। प्रेस्थोयको त॰ तिवाति निम्ति वित्र है॰ सेनुएं कारए। प्रेस्थोयको त॰ तिवाति निम्ति वित्र एम बोलतो जाने १० स॰ रपढी वीप्रतें ।। एयमइं निसामित्ता ।। हेनुकारए। चोइने तन् निमरायरिसि देविंदोइए। महावि ।। १० ।। सम सङ सदहए। । कि॰ त०१२ लेदेतपमिथ्यातादिकनो रुधवो ते संवर एससे तप गढकरीने ति॰ शत्यन जोगळप ते को वा १ वचन

सुद्ध सदहएगा कि त०१२ लेदेंतप मिध्या तादिक नो रुधवो ने संवर एतसे तप गढक रीने ति शुल मनजोगरूप ते को वा र्वचन रूपणी न०नगरने करीने ते कमान संवर लोग स खं न्द्रमारूणी ने त्नाची पाठ जोगरूप ते षाई २ कायजोगरूप ने शति विश्व पार्थ कि चा नव संवर मंग्य सं ॥ २०॥ एति इत्र एक री इने गृति के पार्थ में ॥ २०॥ एति इत्र एक री इने गृति के पार्थ में मानने मुढिएं गढनर उप को धि धि विषय के पार्थ करीने विषय से विषय के पार्थ मध्य लाग साहवानी करीने एपराल व्योनजा धिएत परक मं कि चा जीवंच इरियं स्या ॥ धियंच के यण कि चा

. 33

बेधनुषते एोकरीने त्नेदीने तः तपस्य लोहना बाएा नेएोकरी जुल्साहत विदारीने कव कर्मरूपीया वेरी नासे विसेषे पोता ने लावसंत्रामने विषे एवास्धु ए॰एऋ ऋषेवा लब्संसारथी ऋाति हे मूकाए २२ र्धने /वारपढी लवाज देण्सकेंद्र इन् इमबोलता क्रवा २३ पा । सिषरबंध का करावीने नंचा त्र्यावासने एष्त्रअसकारे तसावमां है कीमाक/यन पूर्णी तुन्ति गन्जाजे रवन हेषत्री २४ एएएमें क्रार्थने राववाना महेल (करावीने पिंडी पठी ॥ २४ ॥ एयम्बं निसामिन्ता

34.60

F F

संव संदायने रवक सीव तेनर करे ए जीव जे मव मारगने विषेधक घरत्र्य कारए। नः नमिराजरुषि रपडी. रात्रपार्व तेवाफासियाचीलं ७ ग न्वति गव्जाजो खब्हेषत्री करीने यः पुनः निवारीने वारपढी न न नगरने

. . . .

નુદ નુદ

है॰ हैतुएं कारए। प्रेरयोधको त॰ ति न॰ निमराजिरिसी दे॰ दार्केड प्रते एम बोखती जार्र २० ऋ॰ ऋनेक वारपढी मुच ६ कारया जणा ॥ ३ व तन्तिवारपंची निमराजिरिसि देव शकें ५ न सक ा ॥ हेनुकारणाचाइन ॥ तन्ननामरायार ना॰ नथी नमना न॰ हेराजन् से॰ पोताने ने॰ तेराजामने ग्रन्थापीने ऋसंकारें

For Private and Personal Use Only

न्त ए०

हे ॰ हेतु कारएा ची॰ प्रेरचो तनतिवार नमिराज्ञकाषि देन शकेंद्र इन्इम बीजनो पढ़ी दु॰ तज्तां दोहेलो ७१ से॰ तेदसलाषना जीतए हारथकी प॰ जन्ऋषी जीतए। हार ३५ तीया सुन्नुधकरी त्पाहार श्रज्ञान त्र्यात्माने जीतस मजनाव सुहमहए ॥३५ ॥ पंचिंदियाएां

जन ८१

इ॰दोहेलो ए॰ स्रारमाने जीततां स॰ सघलुं कि जीते है ११ जीत्युं ए॰ ए ऋर्थ त्र्यात्मा प्रतें सकें अ पबी ने जि॰ पदपूर्णेजयने अर्थ म्हएान त्र्प्रधे तन्ति नन्निमरायक्षि देन सर्केड इमबोलती कुत्रा ३० वारपढी

जुत्तः ए२

दानार सहस्रने सहस्र युएा करीएं मार महीने गर्गाएने दीए संजमनी यहवातेहज सेव श्रेयनुं कारण नेपएा १०००००वाष किं कांएक यो मूंए अदानीनेपण संजम ए ए एअ नि इत्यादि है॰ हेतुएंकारएा प्रेस्योयको तन्ति नमीराजऋषी ते श्रेयनुकारण होए ए० ए रथ वारपंची मत एां न त्र्यलंकारे त्रा निर्व हानधाएतेमाटे इन्त्रा न्त्रा श्रमने त्र्यनेरु प्रवजिरूपपः वांबेवे ह्यिको श्रान्यपन्नास श्रासम ए॰ एऋर्थी इत्यादिक पो॰ पोषधादिकनेविषे र॰ तत्पर थार्र मक हे मनुष्यना हे॰ हे तुकारएं। ऋषिपति ग कूर वारपंची जरुषीयती ग्रा **८**३

जोबजोबादामि कुरुमालनी त्र्ययत्रप्रणीए मा॰ मासमास वमणान त्र्यावे एतसेत्र्यने कदाचितजमे सीव्सीतिमकसाएनावे ଧଧ न्प्रग्धं सोलिसि दे॰ समें द झाबीतनी हनी ७५ हिन्धम्यो सोनाने तथा स्त पढी न चंद्रकांतमणीने मुक्ता फलने कोगरनेवधारीने एक ऋषेंकारे तेवातवार्गवजाजो वा॰ ऋम्बादिक वाहनने

नुत्त एध

तन्तिवा नन्निमराजरुषी देन वार्केद इमबोलता जुवा रपढी पानी के॰ मेरे पर्वत सरषा ऋ॰ ऋसं घ्याता न॰ नरमनुषने सोत्नी थाए ने॰नोहे नेए धने करी। इ त्र्या-केवाससमा त्र्यसरवया ॥ नरस्स वु इस्स नताहाकाच इ पु॰ संघली सा॰ सर्व ज॰ सर्वदा चे॰ शब्देशीसर्विधान सुवर्णीद्क सर्वधन वन् ३ ए न त्र्यवधार एो ध हिन पृथवी १ सिला २ त्र्यपात्या ॥ ध द ॥ पुढिवि साक्षि जवाचेव ॥ सन् सहित पन संपूर्ण लोक त्रराए एतलीं सगलो नन अन तथ्या मिटानवा एन एन्प्रभे इत्यादिक समर्थन्ह्य ए॰ एकेक सी लिया मनुष्यने १० एकेनाएरिने त॰ सं तीषनिवृत्ति रूप च० नासमेगस्स ॥ इइविद्यातवचरे ॥ ५० ॥ श्राचरे विवेकवंत एयम इंनिसामित्ता ॥

2U. N

एध

ज ८५

त॰ तिवार न॰ निमरायक् दे॰ सकेंद्र इम बोखता हवा ए० ऋ ऋ ऋ ऋ दूत स्रो॰ बता त्नोगने प॰ हे पार्थिव अ ए ए अर्थ इत्यादिक हे हेतु कारण ची प्रेर्या त निवारपढी नमी लोगने बांबीस संग्रसकला विकल्पें करी वि॰ हणाइस ५१ सकेद १० एमबोलतो हवा ५२ सन्सत्य कान काम विनविष त्र्याः सर्पसरषी नुपमा कामलागर्न २३ पच्या 'सरषाकाम लोगबे बतायका जीव नथी त्र्यास वसापमा मार्गानेकरी ऋर ऋधममारीग कोमलोगबोते जेनेपण वांबताथका जीवजन अ नरकादि अधोगतीने जि जाए सपने दुर्गतीयते ५३ विषे यु जाए को न को धें करी

वि चैक्रिय करीने इ इंडप के वांदे सो॰ बोलयकी दु॰ इस्रोक परलोक लय होए नुनः ऋपने TES ५५ तेहने ३३ जीत्यो ऋ ऋाऋयं मु वनिसीलता नुवमधान ५३ तारी नार लवु तसारु महव ॥ त्रहात जनमाखात ॥ त्रहात्मान जनमा

14.

णु लखं

धान

न्त्र एउ

सी सीकमाहे न अतिनत्तम सि मुक्तिप्रते गं तूंजा ल हेपूज्य पे परलवने हो हो ईस नी॰ कर्मरजरहितयको मधान थानक श्रमुक्त सादिक लच्छान्द एांडे जेने विषे त्र्यात्माने म्बतिरीनी ॥६० ॥नमीनमइ ऋप्याए।

नुत्त एट

सा-चारित्रनेविषे उदमवंत ऊत्ते ए॰ एपिपरे निक्वेपएं करे सं तलना जाए। अन्जेमतेनीमे राजक्रीप ला॰ लागयी इ॰ एनामपच्चा नवमु श्र्यध्यय ज॰ जेम जहा त्र्यः त्र्यतिक्रमेखेए एएिपरे मन् मनुष्यनु ऋान्ष - जुव गरना स॰ हासनियको त्र्याः त्र्यानुषानं विषे जी विषो माजीवनव्य गायम मापमायए

ट ७ वे.

वि- कर्म रूप रजने टाले पु- पूर्वकृत स- इत्यादिसमयमात्रपण माः मकरममाद ३ ख्द मान मनुष्य संबंधिहीए कि घएों काले अन्यपा सर्व पा॰ जीवने गा॰ त्र्याकरो छ नियाने गाढाय सिमयमात्रपण हेगीतन मार मधा <u>ममादि</u>मकरम पुरुप्रधिवीकायमाहे ऋरगयो धिको जिर नृत्ऋषो जीवजीव नुरुवसी रहे सः तेमाटेसमयमात्रपरा गो० हेगोत्तममकर्ममादमया त्र्या त्र्यपकायमाहे गयथिको नु नित्रश्राजीव काञ्कालसंख्यातीत्रभ्रसच्यातीनुत्रपेणी त्रप्रदः सन्समयमात्रपण हेगीनममधाप्रमादी मकरप्रमाद तेञ् एम् ऋप्निगयीधको सर्पणीते माहे 11611 कारे काल अनंती अनंती तत्सपे एरि अही पुद्रसपरावते नेमारेसं • समयमा त्रपए हे गीतम मकर ममाद ज अनंतानो उषे अंतत्रावे समयग

74- (B

उन∙ ए•

कार कालत्र्यनंती त्र्यनंती नुत्सर्पएी त्र्यदिपुद्गत परावर्तत्र्यनंतानी नु॰ नृत्रम्बाजीव त्र्यावे ते माटे सम वः वनस्पतिकायमाहे गयो धको यमात्रपण हेगातम मकरप्रमाद नु नत्रष्टा जीय काल काल ग्र नंती त्रानंति हत्सपेंएगि त्राहि पुद्रात परावती त्र्यनं तानी पुषे श्रांत श्राव ते गारे न्वन्त्रष्टां भीव वसे का का नस प्याता एवा सं सङ्गानामर्के जेनु एतली संख्याता हजारवर्षे तेमाटे सजावा समयस ते एमनेदिकायमां हे गयीयको उ॰ छत्कष्टो जीव छ वसे रहे का काससंख्या सव समयमात्रपण हंगोतम् मकरप्रमाद मयाप्रमादी १० नीएवी संव सज्ञानागढे जहनी एतलासव्याता हुनारवष मन्त्रिय नेमारे

FIT.9.

नुत्त ०१

ग्रे बसे रहे का काल संख्यां हो एवी सक संज्ञानामबे जेहनुं एतले संख्यातो हजारवर्ष नसवस काल मखदा पं एमप्चें रीकायमाहे गयोथको ड॰ नृत्कष्टाजीव जु॰ वसेरहे मकरममाद १३ ए॰ एकक लवनु ग्रहण कर तमार स॰ समयमात्रप ए। ई गीतम मकरममार मया प्रमादी १४ जी॰ जीवप्रमादं करी ब॰ व्यापितपृष्टी वे ते पु॰ वित्रपर्धे ५० इसेलपामवी बेब जिल्ला लन्पामानेपए। मान्मनुष्यपणाने त्रमाचायपएम

क १

न्नः ए२ मिन्मलेबदीसेवे त्र्यार्यथोमाचे सः समयमात्रपण हेगीतमम् १६ **क पामीने प**एा तेमाटे पंचें औपएं ते नेपएं ते जीव सं पामे तोपएं न प्रधान **उ**लंल हे मि॰ मिथ्यातने शुद्ध सब्हण पु॰वनीपण नि॰ सर्वे एवा लाक ब धः धर्मनेपए। निऋषे स॰ सद्हणाकरी सद्हतिथको उच्दोह्सा 11 8 60

ग्रि.१०

७२

4.

मार्ट सार पूर्ण आनंदीना बलहता तथा श्रोतेंदीनोब सर तेमारेसमयमा धाला हु॰ होयं हे तारा तेथी पे॰ सर्वेथा प्रकार तेनेत्रनीबस सर्समयमात्र गोन् हेगोतम मकरभमाद्ययाप्रमादी २२ तममधाप्रमादीमकरप्रमाद २३ ए॰ सर्वेथाप्रकारेंजू वयहीएरिपामेंबेजीएरि

₹T.9.

03

લ મ

श्चित्त स्थ

स्र समयमात्रपप्र गो॰ हेगीतममा॰ म करममाद मयाममादी २४ यः सर्वथा प्रकारे वयही ए। पामे बे जीए विषा है तारुशरीर से व ने पूर्वे स्पर्शें दीनुं बलकू नु नेथी स्पर्शें दी नोबलही एति सक समयमात्रपण है गीतम मार मकरप्रमाद २५ थाए हो ते मारे पक सर्वधा मकारे जूरे वयही एापामे बे आएधि। एबे के के से धी सा हाए तारा से बे ने जे पूर्व सर्वैत्र्यवयवनु बलही एाथाए ते सि समयमात्रपण अप-चितनोन्नद्दंगगंन करमातादिक गुबमा विन अप्रजीएर आन ततकाल घात पामे एवर रोग विन ॥२६॥ स्य समयमात्रपण हंगीतम मान मधाममोदीमकरप्रणदश ते तारोसरीर वि जीवरहित यह पर्न रोगेकरी तारुं सरीरतेमहे कु कमात जैमजामसा सरद ऋतुनी

লুনা ৫५

चि॰ डांभीनें असं ध॰ धननेवसी लार्याने सन् समयं मात्रपणाहेगीतम् मान मकर प्रमाद २० प॰ प्रवजिने पाम्यो जेह लए। गोयम मापमायए ॥२ छ ॥ विचाएं करे धएंच लावलिषूपणाने पाम्यो मार रषेवमीव पुरु फरीपणवि न्त्रादरे ते माटे सः समयमात्रपणागोः हेगीतम गाः मयाप्रमादीमकरप्रमाद२० त्रार 双 मिन मिनने बंधवने विच घएँ विविचेष्यद धर् धननासमी हुने संचयने रषेते बांम्यापदार नक नहिनिश्चे जिन्जिनतीर्यंकर त्रारु एकालनेविषे दिन्दीसंबेतवा देषा मधोळे ते मारग एत से जिनीक सि फातने त्र्याधारे लब्य जीव संदेहराहितयका धर्म करसे न्यायमार्गनीपरूपक तीर्थंकर बेनेमारे सं । समयमात्रपण हे गीतम मकर प्रमाद ऋ डांभीने

न्य-१०

quy.

न्तः ए६

गैतमद्पंपान्यानादिककरी मोटामुक्तिना पंथमवर्तवानो । यह आएवे महमोन्स्मार्गप्रते विवि**विसेष विशुद्ध निश्चेंकरीजे** पहमहालय गो॰ हे गीतम मधाप्रमादी मकरप्रमाद अर असमये जे औम लारलारनी स॰समयमात्रपएा पर्वं पर्वं प्रश्वात्ताप करेरवे विषम ल्यूमामारगने प्रवेश स॰ समयमा त्रपण करीने थाप्रमादी ३३ ति वहें गीतम मंतरयो हि निश्चे वे संसाररूप समुद्रने कि किस यसि वि जलोरहे वे ति वसमुद्र तीर कां वाने पाम्यो यकों श्रक सिद्ध थावानी वह रूपक श्रेणीक त्र्यक्र नुताबसीयाएपाक संसार ना पारने जावाने तेमारे सकसमयमात्रपण हंगीतम मकरप्रमाद ३ध गी॰ हे गीतम तो॰ लोकप्रतें गन्जाइस सिद्धलोक से रचच कादि नप्रव रहित

(७ ध

(૫૩ વ્યુવ

सब समयमात्रपए। गोठ हे गीतम मया प्रमादी बुक् तत्वनोजाए। पक्सीतिषुत्रूतथको चक्संजमनेविवे गाक्गांमने विवेगकगयोथको साधु । **बुधं परिनिवुर्म** सन्समयमात्रपण हे गीनममा न मकरममाद स्क लामों कह्यों है ऋ ऋरधे करिशोलित है। खा गि॰ हेगीतमगए वर इ॰ इमक कु ब् इब्ए इमपत्तदसमु ऋध्ययनसपूर्ण १० प्रमाद तजे तब जिश्ला हाए तमार 33 विनविशेषें प्रकर्षे मूकाएग हो श्रवण्या साध्नी त्र्याः त्र्याचारने पारुमगरकरीस सजागा सु॰ सालव निब् श्रुत ज्ञान विद्यारहित थे॰ त्र्यहंकारी लु॰रसादिना का लगी श्राच त्र्यनुकर्म मुजकता पका

6ε Ω.

नु त्र्यसंबद्धत्माषा एवो हो एते त्र्यविनीत त्र्या त्र्यबद्ध श्रुत कहिएं २ थे अहं कारपी की की भी प ब प्रमादी माहे तो प्रमादेकरी ३ रोगे कर श्रतपामवाना तेग्हण त्र्यने वतपामवाना **ड** ॥ त्र्यासेयन शिष्या नः न पांमे यला सि॰ ज्ञान त्र्यने वत पामवाने श्रव श्रथ हवे श्राव धानकं करि ासे ब त्राल्यासनेशिष्या इ० एस स्वपने व **ा**डी ष्याने त्रार ने प्र बोस नथी हसवानो स्वलाव जेने १ सर सदाए इंडीनो दमए। हार नर नहो एएवो समुचय मर परमार्थने मु॰ बोल ध थिक नव्नहो ए देसथी नव्नहोए अव्यातिसोसपी ६ अन असोधी सन् सत्यमारगने विषेरातो होए सिन्ए द्रगु एनी धए निस्थाने विराधक त्र्यकाह सचरए अंत्यासनोकरणहार ५६० स्वरूपनेवनेकहिएं अं हवे चनुद धानक प्रवर्ततो धको गु॰पूरणे संजती साधु ऋ ऋविनीत

AT: 99

Q C

द्य.

सो॰ तेमाटे नि॰ मुक्तिनेज्ञानपण नि॰ नपांमे ६ श्रव वारवार मि॰ त्नलीजेसाध तेसमतिएकरतीयको तेमित्राईने बांने एतसे कृत मधाए ३लीपी सिद्धांतना ज्ञानने लब् ऋ॰ सला न्य्र परनेमाये घालवानी स्वलाव स् व्यतिहेपियकारी अव पणामित्रने ँ है जैनो अप सं लावनाए पन्त्र्यसंबंद लागा न उन्दोही ए धन्त्र्यहंकारी बुन् लीलपी संवि लाग नकरे अन्त्रप्रमतीतकारी चे १४ सुन्स अक्रगतिचपंतर पानक चपंत र लाषाचपंत ३ त्नावचपंतपंतारहित अक मायाकपटरहित

ૠ•૧્૧

ઌઌ

गु∙ १००

न्या नकरे याति अन्को इनेतिरस्कारत्रमस्कप विधिका ते कोधने च पुनः नकरे ६ मि जे साधु मित्राएपणो करतो हो ए ते सूं मित्रा नयन यक्षि पान पोतानी पर्नेपरनेमाधेन वादी नन विकित्र नुपरे कोपन करे पामीनेन करे श्रेहकार नय पावं अपराध परिस्केवि त्माः बोर्त कः वचननोकलह मः मार्थाधात तथाए तेममरको पन्छंदियादिकनी गोपवए। हार सुव स्क्रमोहीए विनीत इन् हि॰ लज्जाबत जां शुल्जांगसहित नु ध्यानादि तपसहित पि सर्वजीवने प्रियकारी श्राज्ञार हित एवो होए ते ज्ञान ब्रह्मण चारित्रने तक पामीने अक जोग्यहोए हवे बज्ज खुत जेन जेम संबन विषे इध घालोधको दुन्बेमकारेपए। जुपमाएंकरी कहें वे १६

www.kobatirth.org

५०१ ञु∙् निमिशाए विषासे नहि बीजुं संवनुजलामाटे इधनजलोदीसेएबिक्सप्रकारें शोले अने संखपणुडुधे करी सोले एएमबङ्ग अनसाधूनेविषे तन तेम सिद्धान धम्मो किति तहास्तयं म्मो॰ दराविधयति धर्म सोले साफिरूप संबे ने जला माटे ए ३ नजला दीसे त्राने साफ चोषात्माजनमाटे एशमिलन निधाए विएासे नहिं ए बिद्धापकर सोले एतले साधुने विषे सिद्धांतादिक सोले तिम निम सिद्धांतरूप दूधें लखी साधुपए। सोले एपेलीनुपमा कही. जन्जेम ते अध कं ब्लंबोजदेसना नुपना घोमामांहे त्र्याव गुणेंकरी व्याप्त कं वपधान करवायकी त्रासन पामे होए जवनेंकरी प्रधान त्र्यास एहवोत्रम्य जवरा पवर होइ बन्दु बुत साधु हवे नुपमामेले वे कंबोजदेशनो नपनी ते सामान्य जिन शासनना सकत साध मध्ये ग्रूपों करी व्याप्त बुक श्रुत साधु परतीर्थीने परिसहेकरी त्रासनपांमे तेप्रधान २ वेग ते संवेगादिक प्रधान एबीजी ग्रुपमा २ ॥१६॥ जब जेमगु एवं त स्थाय चमयो धको सु सुलट द्र पराक्रमनो ४एग नु बिक्नपासेन व्वमकारना वाजंत्रने घी निर्घाषिकरी त्रप्रयेवा बंदिवान सोले कोएास बुए जीत्यो नजाए ए । एए परें ह । हो ए बज्जेश्वत हवे नुपमा मे ले बेसि यां तरूप गुए। वंत अप बज्जश्वत 11 १७ 11 इतने विषे १२ त्र्यंगनी सञ्चायक्तपवाजंत्रना निर्घा विंकरी सोल्नेएवो बङ्गश्च तक्तपसूर्यतीर्थिकिपश्चिजीत्यो

गुव १०२

ज•जम हायएगिइ परिवस्यो स॰ साग्वरसनी विकिश्वतन्त्रपमाए चार बुद्धिरूप हाथणीएं बक्कश्चन रूपीं नुं हाथी २ साव वरसरूप पुरां परिचयनो धणी ३ समिकिनसाहित श्रुतबसवंत अपरमति रूपहिष्णिए हणाएनहीं एनीथी नुपमा कही । ॥१०॥ जाह्य वृषल ति तीसा ने सिंग जेइना जा पृष्टीययो ने पंधलेनी विच सोत्ने ने व वृषल जूर गाए प्रमुष जूधनो ऋषिपति वाकर एर एम होष संजमरूपत्नारानिवोहवा बक्ज शुनरूपवृषल ३ साधसाधवित्रमुषयूथनात्र्याधिपति वाकुर बिराजे हेए ५ मी तीषी के दाढानुं जेनी च ॰ त्र्यारमी त्र्याकरी पुनगंजी नजाए सि॰ सिंह मिन मृगादिक न्यरवीना पन्यसाप्र इं ए बङ्ग श्रुत हवे चेपमा ते नैगमादिक सातनयरूपणी नीषीदाढा ते एकिशी परमतीने विवार १ तेएीं करी आरकी २ स्तमा ऋपगुणे करी सहित ते माटे की स गंजीनजाए ३ बक्त अतस्त्रप सिंह परवादीनो मनकूप मानेमांहे प्रधान एक ही नुपमा कही ६ ॥ २०॥

A.99

्यु. १०३

न्त्रः त्र्यनेरे वैरी एं नथीइएएएां बः बस जेनी सुलट ए॰ एम सं संख् चक्र २ गदा ३ धरए। हार ह - होए बद्ध-श्वतहवे नुपमानासुदेव सामान्यबद्ध श्वतरूपी ए रथे बेसी चालेपाले कोइ परमतिए रथपाबी वलाए नहीं रयान १ दरसन २ चा-२१ ॥ रित्र ३ ए३ रूप संरवादिक नोधरएहार२ सुमतेकरी बलवंन १ कर्मसत्रूने जीववासालट धए उमीनुपमाकही २१ जिं जेम ते चक्रवर्ति चक्रवरतवानो स्वत्नाव हेजेनो-बं चतुरंगी सेन्या एंकरी त्र्यवसत्रूनो त्र्यंत की घी हे मन्मोटी क् दिने ए॰ एम होए बक्त अतहवेनपमा ग्यान १ दस्सन २ चारित्र ३ तप ७ एच्यारेकरी कर्म रूपसूत्र नो त्रांतकीधी नेजेने बक्त अनुसूत् चक्र जिननी त्र्याज्ञारूपच के करी वर्ति बे ते माटे चक्रवर्ति महाब्रत रूप तथा सब्धि रूप महाब्रतनीधणी महाकादिनी धएरी चनुदे पूर्वरूप चनुदे रत्नेनो धएरी त्राथवा १६ पूर्वाश्रित ज्ञानरत्ने करी जन्जेमते हजार त्र्यांव ते सरषी देववी वे जेने तह बद्ध सकल जीवनो न्य्रियित नाचि ए मी नुपमा कही ॥ २२ ॥ ज्बन्यानुधके पा॰ ह्राधने विषे पुरु सन्तुनापुरनगरने स्राध्य नदेवनो न्य्राधिपति एव एम होए बद्धे शुन नुपमाए हवे शुनज्ञान

वृः १०।

मतिपूरणा ल्रस्योजेम ए॰ एम होए बक्त शुतहवेनुपमामलेग्साधु साधविस्रावक शाविकाना समूहनी त्र्याधार ते रूपीनी कोवा र० प्रमादादिकी नदर चोरादिकना लयथी धर्मध्यान त्नोग सकनादिके करीताली परे राष्यो बे ३ नाएग अंगनुपांगका विक लेत्का विक स्त्रिक्य जन जैमते वृन्तमांहे प्रधान जंन जंबूवृन्क बीजूं नाम सुदरसन अन्त्रमाटियएवेनामे देवनो धने लखो विराजे:ए १२मी गुपमाकही॥ २६॥ जहासा उमाएा पवरा जबनाम सरसएा।। ऋ निवासने ते जंबू वृक्त बराजे एन एमहोए बद्ध श्रुत हवे नपमा सामान्य साधुक्षप वृक्त माहे प्रधान वैद्ध श्रुत क्रूप जंबू वृष्प सामान्यसुख क्रूपी या अमृतफास आपे तेमारे लासादरसनमारे लासा सुदरसन २ त्र्यागारि व 2,9 जि॰ जैंपने सकलनदीं मां हे प्रधान स॰ नदी समुद्रमां गइत्मली देवाधिदेवनो बड्डाश्चतनेविषे वास ब ए१३मीनपमाकही ॥१३॥ २५॥ सिंदासागरगमा जहा सानु ए। प्वरा र्वतथी।निकसीविराजे ए॰ एमहोए बक्क खुत हवे नुपमा साधु रूप नदीमांहे प्रधान निर्मात खुतज्ञान रूप जले लगी नदी २ साव मुक्ति रूप समुद्रमोही मली बद्जश्रुत रूपिएरी सीता मोटिमांहे ध नीलवंत मोटा नृत्तम् क्षायी निक ल्या वे प्राच्यो जेन्जेम ते मेरूपर्वतमां है प्रधान सु = त्र्यति हे मोदोमंदर एवेनामे पर्वत नाव त्र्यनेक प्रकारनेषधीकरी देदी प्यमानधिको वि

ऋ. ११

१०५

कि के

। एम होएब क्रश्रुत नुपमानगर सर्वसाधुमांहै प्रधान १ मंदर बक्तश्रुतरूपी नु मंदरगिरी निश्चलपणामाटे २ सब्धिशुक ल बेस्या रूपिणी नैषधीएं करी देदीप्यमान विराजे ए १५ मी नुपमा कही ।। १५ ॥ २०॥ श्य- त्र्यपुट पाएरि जेनी नाव त्र्यनेक मकारेने रत्त्रोंकरि मित्रपूर्ण त्रार्योविराजे एव एमहोए बद्ध श्वत हवे छपमा सयल्यसप्रसप् चदिह त्र्यस्क चेदए नाएगस्य एपि भिष्न है है स्वयंत्रूरमण समुद्र त्र्यतिहै मोटा माटे ऋषः यानरूपी ही ऋषूट पाएरि २ नाः अनेक गुण रूप सन समुद्र सरेषा गंजीर है न्केरिपेपरात्रव्यो रलेंकरी लख्यो विराजे ए१६ मीलपमा कही हवेब ज श्वनना गुए। वषां एरे हे ॥ ३ ० ॥ के कोरो जीत्यो न जाए सुर सिदांने करीपुर संपूर्णलस्यों वि विस्तीर्ण अंगादिकंप्रतिपूर्णताः बकायना अचिक्तिया नजाए केएाइ उपहंसया सुयरस पुन्ना हवेश्वतें रपाहार. रक रवपावीने कर्मने एवोजे बक्तश्वतते ग० सिख्गति प्रधानगति तेने विषे त० तेमाटेरि नुष्मोक्तने ऋ ऋथेने जा जे॰ जेएों सूत्रसि दांतें त्र्याश्रयकरीत्र्यक्र पोताना त्र्यात्माने पर सि॰मुक्तीनेपमार्भ ग॰ गवेषकं ना त्र्यारमाने निश्चे

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

্বত হত্য श्रुत पुछन्त्रध्ययनं इन्यारमुं संपूर्णे ॥ १९ ॥ बद्धश्रुतदेवतानो पूजनीक हो ऐ ते हरिकेसी देवनो पूजनीक धयो इयणसम्मत्तं ॥ ११ ॥ तेमाटे १२मं अध्ययन हरिके सी नुं कहे वे ११ ' गु॰ ज्ञानादिक गुएानधान तेनो मु॰ धरए। हारसाध ह॰ हरिकेसी बलएवीनाम प्रतो ए॰ एषए। सुमानि लाषासुमानि जुन् नुचारादि परववानी सुमानिने विषे ए ध समानि जन जननावंत सु॰ लिसी समाधिवंत २ म• मनगुप्त का॰ कायगुप्त सज्ञन ज॰ जज्ञाना पामाने विषे सप्तमाथीं द्विनीया ३ तं ने साधुनेपा व्देषीने एव त्र्यावनाधका पं जीए असार न न नपाधिन पगरए बेजेने न हास्य करे बे

्य १च घ

बा॰ सज्ञानी इ० एहवी वचन श्यव स्मानितं<u>डी</u> न्य्र॰ अब्रह्मचारी ादै० त्रप्रत्यंत कुरूप ११ के कि वर्णीका सी ११ विहासपो पो ० वेगीची पनी ना सका वे नुरु त्रासार वस्त्र वेजेहनो अम्बर्ध ५ ना इसं होए एवं जे वस्त्र तेने धरीनेते कं कंवना एकदेसने /हवे ब्राम्हण दरसनकरवा ग्रेयोग्य कार कोए। २१ वर्ग में न्या न्या साए इनए जज्ञनापानाने विषेत्रावीर्त वन्त्रासारवे के वस्त्र जह ना ज्ञ जन्दा तेएो अवसरे तिंश्तिंडुका रुष्ववर्द्धनोवासी एतवेयन्द्धनोति गि जज्ञना पामाथी संपार्धे जा अमारी दश आगस्यी किसं ६० इहां नुलो रह्यांचे 3 ाने पोताना सरीरने महा मुनीने प॰ साधूने सरीरे न्यावादिने श्राह सातानां जपजावए।इएकं तहतंहरिकेसी मह

80 €

च १०९

सं संजनीक्षं बं ब्रम्ह्यारीक्षं वि निवत्यों ध धनथी ग॰बोसता क्रवी द स॰ साधु क ऋ १२ पः परने अर्थ नीपनी १७० अवधारपो लिव लिन्हाना अवस्ताने विषेत्राव आहारने अव अर्थ इव इहां आव्यों वं स॰ खान्वषामधा लु॰ जैम बेक्कर मुगादि अ॰ अन घएं वे जार मेर मुजमते जाए। जार जानवेकरी जीर ए॰ ए प्रत्यन्त जाव न सबएगदिकें करी संस्कारयो ने एवो त्रीजन तक्तपसीब्राह्मए।बोस्यो १० से प परीषे आहारने ॥१०॥ नवरवम अप्र आत्माने अपी नीपनुद्र इहा जगनना पानाने विषे इ० इहा एक ब्राम्हणनी पन्त अनेराने देवानि अविश्वनि एवं अवन्याणी देसु नहीं सु ब्रुफ नेविषे इ॰ इहा जली वे हवे जन्त बोट्यो ११ थ॰ जुंची त्यूमी ने विषे बीठ बीजने व॰ वायीन करसप्ती लोक तक तिमहिज नी ची ल्र्मीने विषेव्ती ऋए घए निपज बाज्यासा

११०

त्र्याः त्र्याराधे युः पवित्र मि० मुजरुपित्तं नित्रवे षेत्रने १२ ए॰ एएरी श्रदाए द॰ दीए मजने विषेदींपेषिकात्र्यनादिकनुपेनेपुन्समस्त ने॰जेब्राम्हणुनातें करी विवास कांधवानि मा॰मानवानि घएा। साल न्त्राः अदत्तनी लेवो चः च बाब्द्धी त्राव्रम्हान सेवेही. पः परियहनी राषवी च शब्द्धी रागदेषनी करवी एतला वानाबान्ह पामातालेने व ते बाम्ह ए। अति करी धारणे षेत्र सुक त्र्यतिहे पापनुपजवा १४ े तुक तुमें एसो कने विषे लोक त्र्यहो ब्राम्हण लाक लारनाधरण हारको अल्लापीनेप्ण वेदने न मोराकुसनेविषे मा नानाकुसनेविषे मुर साधुने सिष्याने विषे ताल तेनिऋये षेत्र सु मितिहेशालिनिक १५ हेवेविप्रबोट्यो प्रवर्ते

99.

१११ नुः

प॰ हे श्रवगएना बील ए। हार प॰ बोले हे किं किनन्प्रवधारणे समीपे त्र्यमारी कु तुजनेहे नित्रंथ १६ हवे यक्त बोल्यो सन् मुजपांच समिनेकरी सुन्त्र्यतिहें सन् समा नण्नदीजीएं त्राव इहां एषाएँ। के त्राहारने कि किम त्र्याज जि॰ जितेंदी पवासुजने जग्सो मुजने नहिंदेइ धिवंत वसीयुव त्रण्यसंकरी युसने ज इमनदाहि छ जग्नोना तर्जेपामसो साल १७ हवे ब्राम्ह ए।बीस्यों केर् को एइहां षत्री सुरु त्याग्निना समीपना रहे नोर विभ अधिवा त्यार तिमविष सः विद्यार्थिएंकरी सहितवित्र ते इहां त्रप्राव्योए एहने त्र्यधारणें दं कंने करा फः बीसादिक फ सें करी हण्यीनें सार सांत्नसीने उ॰ ध्याया नेकोई बसवंत होए ते असंकारे १० त्या न्याध्यापक ब्राम्हणनावचन ख जोएि॥१६॥

双.13

११२ ११२

ता इ हो ने मां मादिनें १० ते हो त्र्यवसरें र राजनी स॰ एकवा मिख्या. तासयंति पानानेविषे को॰ कोसलदेशनाराजानी बेटी त्म लदाएवं नामे ३१न दे॰देवताने बसारकारें करी नि॰ प्रेरणों करी सं राजती बं ब्रम्हनारी ए॰ तेलुय तपनी करण्हार मुष म॰ महाज्ञस्यत ए॰ ए वाम॰ अर्यतसित्तवन को व काससदसना

कु ११३

घोट त्र्याकरायाक्रमनो धएरी मार रषेए साधुने ही व्हीसतां ऋव्ही सवाजां ग्यनहीं मार रषे सर्व तुमने त्रवतप्तज्ञात्र ऋव बासू मासह ती॰ तेकन्यानाद वचवचनने २३ सो॰ सात्मदानित केवी व लेसा लाज्यां व जि॰ जन्त घएगा परिवारने ऋषिबद्भवचना कु वि॰ हण्ता बारें हामणोक्तपर्वजेनो विन्त्रहा१३ त्र्या न्त्र्याकासनेविषे त्र्या त्र्यश्चलपरिएाममारेत्र्यसुरा लन् लडाएं बोसी वसी वमतान तुम्हो ऋ ऋपमान द्यां ले **अन्स्रमतपनाघ**रा

उ. ११४ म॰मोटोक्नधीसर यो ॰ त्र्याकराव्रतनो धएति घो॰ त्र्याकरात्राकमनोधरए।हार य॰ विक्रिस्सिमां हे जेमपर्न विषे ए व्युनीना सरपाने स॰ सवेजैन सहित जी॰ जीविन ध॰ धनपूएा तुम्ह जन्मविद्यो ला भवलाकनपण एव एयता ड॰ मस्तक जेने प॰ लांबी कीधी वे समासा तपदबा ए बाहा आ निर्मा अंग न पि॰ गंसा लगे र्ष फटारी आष जेहनी से कि रिधरनेव व्मताने २३ उ का चामुखबे जेना नि बार निकल्या बेजील अमें नेत्र जेना एपू वीक्या २५ त स्व विद्यार्थी ने भि॰ ऋषु लव्याकुस यया. ११ सीन ते इन्रिबीने प्रधानक है वे क॰काष्ठ सरवाने रवंभिय सिया विस्पा काव

व्याप

ا ، ، ،

२१५

हि॰ जेतुमनेहिस्यावसी नि॰ निंदा वासिषमजो हे पूज्य ३० बा॰ बालके ३३ मु॰ पूर्वे जं जेहित्या १३ त ने अपराधने वमो लं न्हे पूज्यम मोटा जपगारी १३६० रुषी खरहीए मन्मुजने गन्त्र |हाएनहि.३१ हर्वसाधुबाट्या पु॰ पूर्वकाल पुनः वर्तमानकार्ते त्र्यनागनकार्ते च॰ पूरए प्रहेष कं करे छे. त ब ते मारे एमज ए ११ नि॰ हएया कुमार ३२ हवे ब्राम्हण बोल्यो लू वृद्धवती प्रज्ञाल नु व नुमारीनि अव पा पगनी सरए। ज व कर्त् त्रा ने पूजा त्राम्हे ते न तुजसंबंधी सर्व त्रांग म ० हे महानुलाग

124

चुः ११६

लुः त्मीगवीः साःसामना कूर ना॰ त्र्यनेक प्रकारना व्यजन संग् सहित ३६ श्रव नुपगारने त्रारथ-धश्रवाव करा तुमारी कहुए। एमकहीने एवं केम बाबबर लब्द लातपाए। नि तीए ही श्राएत तिहांज वर्ड्यमी दि॰ प्रधान ग॰ सुगधपाणाना फूलना वरसात वृत्तो पा॰ पारएगानीवर्ष म० महात्मा त्र्या॰ त्र्याकासनेविषेत्र्य॰ त्र्याश्चर्यदान दीर्ध धारा **५ व्यक्तिमान** देवताए निघीषकीथदिवता एस॰ मन जानजातनी विन विसेष को इं सी॰ चनायनी पुत्र ह॰ हरिक सीव य साध श्रानिदाय सहित महातमवन ३७ हव साधु जो॰ ऋग्निनेश्वारेक्न ताप का कि॰ प्रश्नस्याबा॰ ब्राम्हण ॥३७॥ जपदेसके छे

११६

ज जेम गवेषी हो बाद बाहिर जुरुपाएरिएं करी सोर बाह्य निर्मास प्रधाने ३१ वि विवासर्गयथ न्यान्येय गवेषीबी निर्मित्रपणाने कुः तीर्थं करे ३ द लुज्वितिनश्चेकुः मालनेपुनः जुज्जननार्थलने तः तृणाने कोष्टते ऋ ऋतिते एतलांवांना धर्मने अधेश्रहताथका ल्इ बादी निश्चें मंग्मूरपयका कः करोडो पापने ३० हवे विमपूर्ड डे वि॰पीम तिथका दक्ते फरसतायकापा॰ माएल्स्तर्न व॰ ऋम्हो जारोने करा प॰ टासी कम पा॰ पापकर्मने कः केम लसाजज्ञने क ० तीर्यकरकह व ब जीवनिकायना त्र्यः त्रारत्नना त्रापाकरतापकामी मृषाने 80 पूजनाक ॥४०॥ बजावकाए प॰ परिग्रहने इ॰स्त्रीनेमा॰ मान मायाने ए ज्यपूर्वे बद्यातेने प॰ माठाजाएरी पचधीनेप्रक्तें इंदी द्व्यमतों श च॰पुनःश्रपासेवतायका एव

र् १९८

सु । लातापरें संवस्यो वे त्र्या अव जेएों प व पांच संवरें करी इ० एमनुष्य जीव त्र्यसंजमजीवन त्र्य । त्र्यापावां बतायका इह सोकनेविषे जीवियं व्यने सुन मनजोगें करी पवित्र शुश्रूषा न्य्रेए। करेवें करी तज्या बेदेह जेएें एवा साध्न ते मन मोटा बे कर्मशत्रूनी जय जेहनेविवे जन एवा जग्नमाहे कायाजेएों श्रेष्ठप्रधानजञ्जने जयन जजे किया बद्घवचन के बोए तुमारे ऋगि कोए। तुमारे ऋग्नीन यानक के बोए। तुमारे चाटवा कोए। तुमारे विस तुमारे तमारे हवे विभवीत्यो ॥ धव ॥ मनवन्ने कायान जीगरूपते सब चाटवा सहसरीररूप • सांत करवानी मंत्रपाव एवी ही एक्त्र के रिषी स्वरोने पर लालुए करतव्या हवे विष्र बोल्या

×1.4

880

650 2.

कोएा तुमारे इह यदि ऋथवा संति के तिक तीर्थ पवित्र तीर्थ पुन्यके क कोएा नेविषे एहा क्नीएथके वा अथवा विकि हे एोक ऋम्हरी ना॰ जांपावी लब् तुमारी समीपे इ॰ बांबी बी ते नानु त्र्यः त्र्यात्माने पः लाली बे लेस्या शुक लादि जेने प॰ टाल्यूं वे कर्मने साव सीतलीत्स्तयको इ॰ ऋषीसरने तेन् जन जिहाँ ७१ एहा नायायका नु॰ मधानधानक कसक इ॰ इमकड़ व ६९ इ॰ इतिहारपासच

न्यक्ष

११८ग

् १२०

निंदानकरबी तेरमे अध्ययनमां तेहनागुण जाः जातिनो परात्मव्यो रवन निऋवें कींध्र नि॰ निदान बबाएंडि १२ ब्रम्हदत्तर्१ पः पद्मगुष्मा नामाविमान्यी न जिपना न्ययन चिंगचेतरूषीना जीवव ए० पुरिमताल संग्नाकु सनेविषे ७१ ध॰ धर्मन विश्रानिमेस भी नुपना सा॰ सालिसीने पन्मवजोदी-सामिधी २ क॰ काप ल उरनगर ने विषे सं॰ सल्द्रत २ स॰ एक वा म ल्या समागया तेव तेबे ए॰ एमांहीमां है विविपासने सः कहत सुष्ड्षना फल च॰ चक्रवती मठ मोटी ऋषीनी धरुग ब॰ घड़ा। माने करी मः महायसवत लाइप्रत रु इमयचन बोलतो क्रांबा 11811 त्र्याच्याता त्र्यमालाच्लाइ लायर

र्ड. १२१

न्य्र- भांहोमांहे त्रा बसना क्रता माही माहे. ामें मृग ह्राता काँकालिजरपर्वतने विषे सा॰ चमाल क्षता का॰ कासीनी ह ॰ इस हती मह मृतगनदीन देवलोकनेविषे न्यान् इता त्रान्त्रम्हे त्र्यापण वे मोटी क्रांडी पर्मकर्ष की घां हये चितऋषि बोष्या . क॰ कर्म केहवानिदान करी वि विजीगन्पाम्याच । जुजुयागयाः ८ हवे चक्रवती बार्या स० फलाववागए। प॰ की धां जपराज्यने क॰ करमने पू॰ पूर्वलवें ते॰ कर्मत्राज्ञां लोगवुं बुं ऋतृतिष्टृ हुं कि । प्रश्ने वितर्के वि॰ हे विततुपण तेपुन नथी लोगवता निम झ किन्त्रचितविसेतहा ॥ ए

ङ १२२

मुनिबोध्यो स॰ सर्वे सु॰ ऋष् तपादिक त्र्याचरए। स॰ फलसिहिन हो एन॰ नत् क ॰की धाकर्मने त्र्य ए। लोगवेन॰ नमूकाववीनथी न्य॰ द्रव्येकरी न्त्र सफ ल नराएा मनुष्यने सर्वजीवने त्र्याः त्र्यात्मा माहरे पुन्यें करी फ । फ सेंकरी सहित १० जार जेम तुमारा त्र्यात्माने जाएो वे सं । संत्यू तत्र्या धानेकरी मः महर्दिकपद्यं पुरुपुन्यनेफ लेंक्री उन्सहित द्वारा त्रात्मान जे॰ कंबाआएंब मार्महातमपप्त जेम एवी जाएी वे चिनने ऋ पणा जे लिए। चिपा क्वताएम जापी ११ वसी ए गाँधा के हवी ने यादिक वन वचने करी थोना. गान एहवी गाया थी वरे करी न मनुष्यमाहे मनुष्यनावृदमाहे नरसंघमञ ज्ञान एबी कुएं करी उर सहित बे एवं कि एहं जिनेशासन ने विषेत्र न्सावधानज त्नवत हो ता हवा १२ श्रमए। साधु जांव करी उर छे चात्र्योवास बीजू उ इहजायने समएगोमिजान ॥ १२॥ इवेचकवर्ती बोल्या दय

१२३

मक त्रीजूमधुक कर्क चोथुं वाल पांचमो ब्रम्हकयाए पांच न्याव त्र्यावासय व पूर्णी व रमिष्रक इव एक ह्योते निव चरने सर्वगुणेकरी सहितएवा पंजपंचालंदसना नः नाटकेकरी गीतेकरी बाः वाजंत्रेंकरी ्रतो • त्सीगने प्रते प्रवर्तनीयको इ॰ ए मतक्त है साध म॰ मुजने रो॰ रुची हेपूर्वे कहीने पे॰ प्रवर्ज्यादी फुलनिश्री नं-नेराजामनेराजापु-पूर्वत्नवनो निः सनेह नेएोंकरी दहां प्रेमजेएी विविव िंगी तने तूं जाएी सक सर्विश् नव नाटकने विविधंबना जाएं। सब्सर्व न्यालर एनि लाव लार सरबीजा १२३

स॰ सर्वकाम लोगने ५० ५ पनाकारण जा पो १६ बा॰ अज्ञानीने अ ० अलिरामे उ हावह बालालरा माएं नवी थर्पोएन जन जे सम्बे लिन लिन्तु साधु बे तेसुब कामगुरोन तेकामगुरोन तेकामगुरानिविष नथी कार्मेगुरा केवा बे बालान त्र्यग्यानीने त्र्यालिमाने त्र्यालिरानेमनो इरवा ला बे ५ हा ७ उपना त्र्यावहें स्वं कारण है त्र्यया उपनी प्रवाह है एवा कामगुणने विषे स्त्यनथीर साधूने विक निवत्या के कार काम गुण तथी वास ६३ केवा के ६३ तबोर नपरूप धन के जोने वानी केवा के साल सालना जे गुणेर गुण ता एवा साधने १७ न हे नरनाइड सीव चंनासनी जाति प्रतेगयाएा व पाम्या दूह नेव एवी आपएा व एा नरमनुष्यमां हे ऋहमार अधर्म जाइन जान हाति जन जेजातने विवे वयन आपएा वे सवजेएाँ सर्वे खोकने सान देवकारी क्सी पार पापकारए। नेविषे बुर बस्या मुर न्त्राप ए। वे निरू च मालना घरनेविषे १२४

For Private and Personal Use Only

र्थः १२५

६० त्रालवने विषेतुपूर्णे का॰ शुलकरम पूर्वलर्वने विषे च बांभीने लोगने न्याव चारित्र लेवानी इतुष् पु॰ पुन्यनो फलसहिन हर्वेको ऋब अद्यास्त्रती लागाइ इ॰ ए मनुष्यसंबंधी श्रवस्थास्वताजीवएत्र्या**नवा**निवय श्रवनिकली संसारवी अर अवस्तीयको पुरुष से ने पुरुष अर गः बहीने तेजाए महमरए स्ट्रिप सिंह नहनर मनुष्यने यहीने इच्प स्चार्न पर लोके ले श्रयवा (माई

For Private and Personal Use Only

१२६ १

न॰ नहितेहना ३ घने क्विवेचि नसीए नातिसान मित्रनावर्ग समूह वेचीन से न॰ त्याईपएा वेची नसे न बेटा वेची न लेए कं जर्मना करएा हार मते ऋ के ने जाए कर्म २३ धि साल प्रमुखने विति सर सर्वे पदारथने बांनीने सर पोताना अर आलाबीजो बेजेनो एवे पिको कामच कर्म सकम्मणबान सेपरवर्त जीव पर परत्नवमते ११ सुरु स्वर्गादिकमते नरका तंबने एक ह्या तुरुजीवरहित सर् सरीरने तेजीवनो सरीरके वोढे तुढ योता एवा सरीरने दः बादीनेवित ए० पुत्रपणवि नानाति लापूरएो नाढ दा० त्नरपोषणनो करणाहार न्यू । मूने तेथा त्र्यनेरो (भः स्त्रीवित पा॰ ऋजिएंकरी केनेरह्मो नेने अर केने जाए ते के ने पाबावालि अपवे घरने विषे जीवियर कर्मे करी त्र्यानुषो मरएाने समीपेनुक त्र्याएरिए हे केंम श्रयमा व प्रमादिवना निरंतर एत्से णिञ्चइजीवियमप्पमाय वस्

www.kobatirth.org

. ૧૨૭

क वचनने सांलव राव हेराजन् पर पनाल देसना राजा मा॰ मकर कम जन्जेमएजगमाहे सांधु जन्जेमुजने तुम्हे होए जें जे लोग बांमतां दोहें ला ऋ हैं ऋार्य ऋ ऋमें नरवड तर्हे ते नियाए। विकी मुजन त्राह्म त्रानिवत्यां मुजन तर ए २ ए स॰ फलनुद्य ए एइबा त्र्यान्य जे जा॰ जाए कामलोगनेविषे मूर्छाणो तीयको नाव हाथी जेम. श्रिगोकार करीसकर्ता नयी कार् नागाजहा

57.13

च[.] १२८

अ॰ षुतोधको थलने न पांमें ः ती कांगने ए एम स्मन्हो श्रातिहे सुताबली आए हे ते काए। काल शीघ्रजाए धमा गि॰ तू यद बा त्र्याः त्र्यारत्न नेपरिग्रह्नावष नः नहितुजने त्नीगनेबा मवाने वृद्धि

ग्रा १३

For Private and Personal Use Only

३४५ ञ.

मह प्रवत्यों हुं के सञ्जायध्याननेविषे मार्गन्यामंत्र्यो हे एवी हुं ३३ पं पंचाल देशना राजा ये उनः कं ब्रम्हदत्त अब अनुक्रमें करीने खुब लोगवीने कामत्नोगने सोन तेराजानकी ऋ ऋतिमोटा तनो **ऋ** त्रधान वर वचन विक निवर्तवानी त्र्यार्ति लाषी जुरु प्रधान चारि त्रवंत तपवत महमोटारुषी मनपालीन ऋणुत्तरं सान्द्रीयमीनोएक ऋतमुद्धतेना ३७७३ श्वासोच्छास भाएएबोएक सासीसासने मार्थ ११५६० २५ पङ्गोपमजाँज रानस नामा नरकावासी ए अमी नरकनी पांमी निहां तेत्री ससागरी पननी उत्काशे त्रानुषों है ते नेपांम्यी ब्रम्हद्त चक्रवती ए नस्कावासी एक लाष जोजननो ने प्रधानासि इगितन मोतो २० इमक्तं कर्फ हुं इ० इति चित्त संत्यू इ ऋध्ययनं तेरसमं संपूर्ण ॥१३॥ तरमे नियाणानो दोषकद्योनीयाणुनकीधं तेश्धमे

अकि ६ व

Ш

नुष 130 के केतजा एक चव्या विक १ विमानना वसनार पुरु नरगने विषे जूनी ७१ नुरु इषुकारनामे स्यानमसिद्ध सन धनेकरी सहित सुरु देवलोक अ.१४ यन पूर्ण ते बजीव नुपना. निन नुद्देग गम्या १३ संन संसारना लयपैकी पसूया पुन पुरुषण्याने पाम्या कुमार ह पुरुपुरोहितराजानी युरु त्रीजी तेपुरोहितनीजन पाचेमे त्रिप्रतालवे त्रालवने विषेदे प्रधान रही वर्ग करी क क्रमलावताबग्रज स्बामरण लय ऋ परात्मव्या वे बित कुमार केया वे बब मुक्तिने विषे ऋन्याप्यु वे वित्त जेए।

न १३° द॰ देपीनेते संसारना सद्दपन्त्रदां कारे ते कुमार का॰ कामना गुणायि तेन तेबेकुमार कान सुन्त्रानित्राचरवो तपवती संने संज्ञमने संत्नारीने त्र्यवि पणादे वा देवसंबंधिया काम लोगनेविषे त्र्यसावधान त्र्यव जपनी बे तत्त्वज्ञानपर्गानाव ष सव स एवा ब्कुमार नुव बाप अप्राच्या हुं हुं

ऋ.१४

ङ १३२

ते अवसरनेविषे मुन ते त्याव मुनीना त्तक तपने वाक व्याघातकारी वचनने वक बोलतो इक एवी वाए ति वेक वेदना आए। के बे अक्र अपुत्रियाने सोव सोकपरलोक ८ अक लिए नि वेदने पर जिमानीने ब्राम्हे एाने पुरु पुत्रने धापीने इब्स्नीस घाने पर्वे आब न्य्रटवीना वासी होजोर लोक त्यागबीने त्यागने मुन्मुनियशस्त्रलेखाः ७ सो । सोक रूप अन्अभे करी आन आत्माना गुए जेरा गादिक्सें मो । मोहरूपजे अन वायरो तेह यकी पन अधिक है प्रजलवों जेनो ते ऐक न्य्रतः करपुर्जिनाएवापिताप्रते कुमार बोलता ज्ञायाएसबधकेवा ७ पिताप्रत इपव सवेधाप्रकारे सरीरनेविषे बोसतीसाः अतिहेघएी प्रकारे सावत्रप्रपाच बन्धएो बोसतो जेम ऋ उत्तेम वसी १०

न्य १ ४

न १३३

जन्जयानुक्रमे कार कामलोगनेयुष्टीकरी त्र्यामत्रती कुन कुमारप नमक्षे सेन विचारीने थको विक्ष अवधार ए एवा पुरोहित वच्चनने बोलता क्लात्रमा ११ थका त्त त्र्यंधकारमाहे त्र्यंधकार वेत्र्या ातिरोद नरकने विषे खन विदासात्रसरव हे ऋग तासमाने ए पूर्वोक्त वचन हतात सुष जह पकी लोग के वा छ सलावनाए कानामत मो॰ मोन्जनापो वि॰ शत्रुसमान नुक्षमञ का का मला 833 गसंसारना सुष्पामवाने धकी धकी चएाहारने

नः १३५

रा॰ रात्र एत से दिनरात्र प॰ प्रापे त्र्यति दाज तो यको त्र्यन त्र्यनेरा सुषपामवाने ऋथीनथीनिवत्यी काम मनमर पुन पुरव पूर्व कह्युं तेजराने पामे बित १४ लाक ऋति लाल पाल प्रणो हक दिनरात्र रूपीयाचीर हक हरे वे मरे वे एवा पुरषने गुएाने सहित तेम

श्रु.१४

्ङ १३५

साद वसे हे ए घरने विषे एक निश्चेत्मारे कि संवाए पर्मनो पुर लार नुपा मवानी त्र्यान सब सजनेकरी सूर्याए ऋधवा काव कामगुरोकरी सूर्याएंचेव पूर्ी सब साधु होएगु गुएना समूहना धरए। हार बन्दाकोत्तर विहार्ब जनाए त्रवधारणे तेमारे त्राव त्रारप्रियती त्रावता मध्ये क्तपना रवी व द्राधनिवे सर्वरनेविषे सर् आत्मा सर्वतोनवोनुपर्ज सर्गरवि एास जैम घरत ति जित सनेविषे तेस एव एमज हे पुत्र जाव यः निश्चे जे त्मुएशै नि व नित्यसदात्र्यात्मातमारेषोरो सदह मी निधी इंडिययहवा जीग्यत्र्यात्मा ऋन ऋरूपपएगामारे वोतेनिययन निश्चे त्रासन एजीवते बंद कर्मबंध के कवा है न्या इन ने मिथ्यान के हेन के तु कार ऐ जेनी एवा बंध होए संसार संसारहेनु चययं निबंधं ॥ १ए ॥ बंधबंधने संसारवसंसारमाहे परित्रमणक रवानो हेनु कारण वयं व कहे १९

च्य-१**४**

न्त्रः १३६,

पा॰ पापने पुराकर्मने न्त्राः करता धन धर्मने ऋजाए।ताथका पर त्रातिरन्दा करनाधका पास तर हवेतेने लुर बित ॥ तथिका निर्पेच सन्सवदसविदिसनिविष पन्त्रानिहे गीटो घर्या वे स्यानेकरी अन्ति तीरिकनी अेए। पन् नुपरे पमति पिकी नेए सिबंनेमारे गि॰ घरने विषे नव रतीने न पामूं हवे पुरोहित प्रवे छे. केच काणाहें हुएया पीमयायको अबि त्र्यन चात्रुलवाएानी श्रेष्णी रहेदिनरात्रनी कही एनएम हेनात विन जाए) मो लो॰ लो॰ लोब जराइबीटी हैं लोब

न्त्र-१५

नः १३९

त्र्यः ऋधर्मने करता जीवने त्र्यः निषल जाए वे रात्र नः ते रात्रनावे पाढी विस धक धर्मने कुक करता जीवने चच्युनः सक् सफल सहित आए बेराकराचा २५ नः नेरात्रनावे पाबी वसी एं इस्राय दु । तुम्हो न्य्राम्हो न्यापए। बे संव समित सहितथका पव पर्व जाव हे पुत्रविचरसु क्तिं निदीष लि-का करतियका कुरु घर घरे नुतम कुमार कहें है जां जो को ई जाएं। नव क मरीस नहीं सोव ते पुरवानिश्वे सुव न्यागलेदिने सिव अन अप्राज है तात एक एमधर्मने पक त्राव त्र्यापाप्यु त्राव नथी कि व मरिवर्ज्याधिकानही पुरुवली लग्न्यवतरसु लावा

न् १३८

धर्मकरवानी श्रद्धाकरवी स्वब्युक्ति है लांचुं त्र्यापएने विषे विच्टालें ॥२८॥ इवे प्रशेहितलारजामते समजावे वे वार वासिष्ठगोत्रनी नुपनी लिक गोचरीनो कार कालएतर्ले चारित्रलेवाना तन ते वृद्धनो एमज रवान तुर्वाकाहिये सारवानी यमाने बायाएकरी। क्रीएक्सवसरें क पांधेकरीरा माधीने कि संवक्षरी रहितजे मर संग्रामने विषे राजा सक्ति नही पन पुत्ररहित के पए। तेमाटे सोत्तंनही त्ता मतहा अहा लोगनागुण शब्दादिक इ० एमनन्त्र। स० एक बाढेंग साकी धार्व त्र्या० मधानर सर्व जेना पर घणार्व नेहने

१३५ १३५

गन्त्रयंगीकार पन्त्रधानमार्गलोगव्यावि ३१ नर जीर दंबी ईसंजम जीवतव्यने ऋषीं नर नथी खांमती हो। हेलांगनीस्त्री जिं त्यजे वे त्र्यापए। ने जीवन संसारादिकना जालने ऋसाल ० त्र्यतालने चव्वांते सुव सुवनं चव स्रोव लायो प्रमुष संजमने संलारे जुवगरढी वव इंसजेम पट सामे रहितपएगामाट ३२ मु॰ मुजसंघाते स्यो निव का चलीन त्यजीन पञ्जतावास नासा

.

६८० 27.

तेन्तो कुं सूं तन अपन् वेषुत्र्केमे नजाईस इन एकसोजाईस जईस३ध बि॰ ढां मीने जा॰ मिबीय जुनी जसनी प जन्जमजालमायीनासीकान कामगुराने निर्मान धान त्यारनी वहींने घीरीस तव धी॰ धीर्यवंते त्रप्राचर व ३५ तपेकरी लु ॰ प्रधान तः विस्तीएरि आ॰ जासने देसने नुसंघवकरी विचरे पर जाए है पुरु वे पुत्रपुनः लायीरयर पूर्ण मन माहरा ते ने तेमाटे ऋर के किसं के ने नहिजाईस इर एवली देवीकमयावती तंब्तेरायव इषुकारराजानी ऋलिखव बारंवार सब पेतां पुरोहित ससुयं पुत्रसाहित सदारं स्त्रीसहित पुत्र सोचा लिनिरकम्म

१ध व

१:४१ १

कपहायन त्यजीने लोगवे कुर्नुबन कुटंबने त्यजीने देवीकमलावती एहजगाधानो ऋर्यफरीने कहे ने प्रतेहियं न तं प्रतेहितने कहे ने प्रतेहित ससुय • पुत्रसहित सदार • स्त्री सहित सोचा सांत्मलीने त्र्रालि निरक्ष प घरधी निक्कीने विक्षे पहाय • त्यनीने लोगने ॥ कुरुंबने सारंबधनने बिब्लुलंब विस्तीएि लुत्तमक प्रधान एतला बानात्य जीने प्रवर्जी लीघी है। एवा प्रोहितने सांत्म सीने तं ने नः तेपुरुष वॉयन बोधनी हवी एवी देवी ३७ वं वस्थानाषाए हार पु पुरुष हे राजन् प॰ प्रससनीक मार्ज आर अंगीकार करवी इन अन तम्हो त्र्यायान सन्सर्व वान्त्रयेवा कदाचित्धन्धनत्न हो इ सन्सर्वपण ते नुमारी तृष्णाटासवाने समर्थेनहीं ने॰ नहीं पए। तार श्राए। सरए। ने ऋथितं जब जिवारे निवारे काबकामनायुपाने ते धनादिकतपने ३० मन मरीस हेराजा वारपूरण म॰ मनाहर एका

नुः १४२

त्र्यव्धनादिक इव लोकने विषे एमपए। त्र्याचे छते कां इकत्राए। नाव नथी द्वरति विनिन्धे धव धर्म नवहेनरनादेव ताव त्रापा ऋषधार नव नहि पंच पाजराने विषे संच सने हरू पणी जास बि॰ बेदीय की र् जन्जेम ऋचीने विषे मन बसते बते जिं जीवमृगादिक त्राव त्रापाबलतात्रानेरा सव त्राज्ञानी पव हर्षेपाम कान्कामत्नागनविष मून्म्बो एगायका ए० एए

नः १४३

त्र्याव हरप पांमता यका गव संजमने विषे प्रवृत्ति ते पुरुष वि॰ त्र्यमतिबद्धपर् िति विवेकी हे नरके हनी परें। मकमा ५० पातानी ६ बाएक वरतए। इंड एराब्दादिक लोगयन्यती बंद अनेक प्रकार यही राष्या है तपए। हारतिम त्र्यापए। पइए ७४ माराद्वाधित्रते ऋद्यव त्याय नथा हे ऋाये ऋाव ऋावय वे ऋापए। चव वसी ऋासक्त बोकामलीगनेविषे त्वव बांनीने होए सो जवजेनएपुरोहिता साः श्रोमिषसहितपंषीने देषीने श्रनेरे पंखीएं बन्पीमानुपजावतां त्राने तथा निन्त्रामिषरहितपंषीनेपीमा त्राएमप परियहादिक त्र्यामिषरहित यका विचरती नि रु ઘદ્ય का॰ कामलोगर्न संब संसारवधारवानी कारण जाणी नुब सर्वगरुमपंषीनी

श्राप्ट

नः १४५

नाव हाथी जेस बंधनने खंदीने काम निह्यसया त्र्याकरा पराञ्चमना घएति छ। ५० एव एम न प॰ तत्पर

ना-१४

For Private and Personal Use Only

चः १४५

पु॰ दुषना त्र्यतने लुव पाम्या मार ब्राम्हण वाल पुरुपुरोहित मार ब्राह्मणी ध दार बेकुमार राव् राजा १ध संव संजननापरि जव बांने काम लोगने ऋव ऋज्ञात कु सना ऋहारनी चयन विव ऋारत्मयानिवत्यास साधु एाहार चरद्य दाढ

ऋ १५

१धप्

ऋ १५

नः १५६

परिसद्दादिक जीतीने सब सर्वजीवने त्यात्मासमान जे ब्जेसाधु को इवस्तुने विषेपए। नवन मूर्वीए सब ते साधु षमे धी० धीरसूलट चच विचरे प्रधान निरु सदाए ऋगत्मानी गोपव एँ) हार त्रवन्महियासतसाध् विचारे ३ सेवीने ऋ अन्ययमन येका इन नोव नवां लेन न्यूक ऋन सह सन्ते साधू न्त्राह त्र्यात्माने गर्वधे सु॰ सुवृत्ती किहायी भशसान वाब ससजए सहए नवास्स

१४७ व

जेएों करी वसी छां में जन्त्र संजमजीवतव्यने वाब त्र्यथवा मोव मोहनी कर्मने कब संपूर्ण निव वां धेएवा नवनरनारी न्रि.१५ नरनारा नासंगनेपव्वामें सवसदाए तपसी यन वर्ती कोन कुत्रहमनेन न नुबन पामे ने साधू वस्त्रादिक नधा पजद सातस्वरने धरती हा प्यानीत्र्याकासे सुन्सप्नतः पुरषादिकना पष्णानायन धरकरवोनी विनविद्याने प्रज्ञजे। किसाक चिन्ह थाए तेनां ति हा नहिंबसी ऋगिविय जैन वसीविद्याएकरीनन गादिकनास्वरने विच विचारने त्राजीवकान करसर ते साधु जावधाहान जाव सालरक ॥३॥ वमनने ५ विविषरेचनने धुवधूपदेवाने ७ नेव नेत्र त्र्यायना त्रेंजनने द सिव स्त्रानने ए तिव वेंद्रक त्मण्या रोगादिक पीमाने १० तेने मातापिताने संत्माखी नेपूर्वोक्ति १० बीसने पाप्र्याञाणी पचषतियको त सनमन षत्रीनासमूह जु॰ जुयकु अना जपनाराजानापुत्र

For Private and Personal Use Only

9. १४ ट

विविविधिप्रकारना यसि विज्ञानी वि गिच य इस्बर्ज पन्चारित्रपण दोवाहाए न कार्ड स्पारी पाट प्रमुख पाड़ी लाजन विक रवाठ निब साध सवन

ऋ १५

ङ १६३ हार स्त्रीसंघातें हास की पा होए कि की का की घी होए रर रित सेवी होए र दर गर्व जतारवा ऋहंकार की घी होए ध लब्लानपाए। पूरए। धन्धर्म लन् लाँधात्रमाहारने मिन्मरजादाकाले बं ब्रह्मचर्यनेविषे रातो साधु सिंब शंगारने ऋथे नच्धारेनहीं. सरीरनी समाचरवी

नः १६५

धन धर्म रूपिया त्र्यारामने विषे विचरे साधु धिन धीर्यवंत धन धर्म रूप स्थापवर्तनाने विषे जिन्तीर्थिकरे कह्यो छे सा॰ शास्त्रतो छे सिब पूर्वे सीधा वर्तमानकाले सीजें है चार त्र्यवधारए। एए। ब्रह्मचय कालेत । तेमत्र्यनेरा इन्डिक्ड कड़ वर् १३ याप्तिकही ते तो पापधानकनेवर्जि तेमाटे १९ में ऋष्ययनमां पापश्रमणानों सरूप कहे ले

3T.16

जु. १६६

सु ब्रातिहे पुलेल सं पामीने बो॰ समिकतने चारित्रने वि॰ पश्चाय दर लिली पाम्यो पाव नेढवाना बस्त्र नुरुमसं है लिंग जिमवाने त्र्यन्त्र निमहिज पीवामेपाए। जाव कु जाए। व सतावना का॰ स्याकरा सूठ निविद्यानी सीव सत्याव घएते वे जेने पव्घएतिविद्याने जमीने पापी प्रमुषसु सुषे प॰ साध पद्य नु नुपाध्याय युक्तने सूर्व सिंडानगुरून त्र्यने विनयमारगन गारुसीषवेयो र्वपाष त्यावेद्वी लेबा न्य- पान तेपाप श्रम एमक हिए श्राचाय जुन जुपाध्यायन गुस्त्न सब साच मने सवा न करे ज्ञानीः

AT-99

नः १६९

नेया पूजा सलाधा नबोलेये न त्र्यहंकारी ते पापत्रमण इस कहिएं त्र्यकुरादित्र एगने यव प्रयव्यादिक जीवने श्र_व श्रसनती सन् सजतीपएक मानतियको पा॰ पापन्त्रम्एा फ॰ पार्टी ऋनि पी बबाजी वन नसद्य रव इस कहिए दन्जनावला जनावला पांच ने पांपश्रमणा कहिये पमन्त परिलंह एगदिक वी जप पच्त्रसाता नुपजार्व नित्य पार ते पाप श्रमण इस कहिए पावसमणासबन्ध

न्याः १७

१६,उ

नुः १६७

से नेकारक विकथाने सांत्मलीने गुरुगुरूने । पर त्रमाहा जिन्तिया पारपाप सम्पार्ध अ • ऋषिर ऋासनने विषे तथा कु॰ कचरता ऋासनने विषे जब जिहा तहा ऋकं सावधानपर्गारिक वस्त्रवारहायपगादिक पा॰ पापत्रमण इम काइए सन्सिच हलावतीयको ते ररकपाल्सावऽ ासद्य नपाम ल

श्रम्भ

न १६०

त्र्याः त्रमाहार वि विगयने पार पापश्रमण इम काहए ऋ वारवार ऋव स्त्रासक्त श्राहा विल तपक्रम करवानीवष पा॰ पापश्रमण इम कहिए तवाकम्म न्म वारंबार गुरबादिकने वाम प॰ परपाषं रीने सेवे गाव बमासमाह एक संघा नायी गणिव बीजे संघाने जाएते पुष्टलूत जाएवा त पाव सर पीतानी घर डामीन Q वलीजोतिषानीनेत्त पर्रापयं करी द्रव्यनानुपाने पापत्रमपुरा तथा संगा संबंधनी βĠ ना कर ते पावसमाए।।त्वच्ड 11 5 60 11

For Private and Personal Use Only

नु. १९०

गिन् गृहस्बना घर तथा गृहस्थना आसन जुपर विविबेसे नवार्व सामुदाएतिन त्राहार गिद्विनिसंघचवाहंऽ २ त्र्यहाबंदी ३ ससतीष्ठ कुसीलिने ५ तथा ग्यान १ दरदान २ संव चारित्र ३ तप ४ वीर्य ५ ए पांचनी कुसील 15/0 त्र्याश्रवनी त्र्यपार धरनार पर प्रधान साधू थी घणो ही एते त्र्या॰ एलोकनविष नव इव आसीकना श्रायामला ए रमधीनिहिं २१ जेब जेबजे सदाए जुर बालिद्रीषने निहिएमनेच प० परस्रोकनी पए। त्र्यव त्र्यमृतनी पर पूजनीक मध्य <u> इच्चलाक</u> इति पापसमणिय सतरमो न्य्रोध्ययनं

ऋाः १ व

্ভ ১১

षाना जुदाहरए। कहे वे १९ हर श्रावनी श्राणिका तेमज पारुपायक समूहनी त्र्याणिका सहित मरु मोटी कृष्टि सरूसमस्त पर्वे परिवारें परिवरची नीक ख्यो २ इच्चान महया सध्न हय त्भीव बीतीयँको कं न कं पिलपुरनगर संबंधि छ । चरोन के सरी छदान ने विषे ग्न कापश्चराए। अव हव न्यव ऋए।गार तप रूप घनसाहत सन्सञ्जाय धर्म ध्यान सं सहित ४० धर्मध्यानध्याए है श्रव सर्वकरी व्याश मह नागरवेलनाममप जावधर्मध्यानध्या

ऋ १ ८

For Private and Personal Use Only

णु १**९**२

मिक पासे मृग है वब्बंध करवा ऋगवी राजा ५ षपावीने त्र्याः त्र्याश्रव तः तेमुनीने ऋरिष रिवे॰ न्यावीने नुतावसी नः निहां पार देषान ग्राच्यापगारन साताह श्राणार ऋव योगसु हुएयो एमृगमुनाना मब मद्युन्यए ऋन् हव राजा न्य्रप्र धिन जीवधानकीए अ रब रसगुर त्र्याः घोमा विच मुकीने साधूना तेराजा त्रावत्रायहच माइ मान त्नावे त्मव हत्मगवन् एव एम्गवधस्त्रप् मव मारा श्रपराध धर्मा पाच पग लगवए हम रवम राव राजान न संघी लंबूल्यं करी त्र्याकुल सीन बे तन

न १९३ स॰ सजतीयना कु नव मनु-नरक ऋ दें पण् ऋलयदाननो देतसथा त्र्यन त्रालयह राजा तुर्जन पर **रत्रा**० त्रानित्यमनुष्यसा जन जिनारे सर्व पन मूकीनं जावा कि॰ किसु हिसानेविषे सन्मुष थाइस राजनविषे जीत त्र्यानुषा त्र्यन रूप त्र्यासक्त रूपने विषे मूबाए बे मिन मित्र तेम बंधव सुन पुत्रपूरणी.

W. 9 -

नुः १३४

मः पूर्याने पुत्र पिरुपिताने होए तेहने एव अतिघएत दुषीयका तर तमजपुत्र कमनजाए परल्प पदा लाईमुएवककाढेरा हेराजा एमजाएरी नपत्र्या तः ने मुने निवार पढी ते एजि नुपराज्या दाः धनना तन हर तरगंभातिसाई तते मुर्वजना ऋनेरानरहे राजा कर कलन्यशुलकमें ते ते ऐक में सहि सुर शुलजे सुपकारी पुरषे जे की धा कर्म १६ तथको गर जेमुर्स तेजाएपर परलवे एम जाएरिने तं हे राजा तप सो॰ सालजीने ने नेनीपासेथी श्राच र ॥ १७॥ सानए मन्मोटामोक्ता न्यालिताष रूप संवेग निनमनुष्यदेवतादिकनाकामलोगनुपरे त्राहतिरूपनि वेंद तेएों सहिन् इन्ने राजा १०॥ ॥ महया सवग

नः १९५

सं॰ संजय नेसंजयराजा च॰ बांगीने राज निव निकस्यो जिन् जिनसासननं विषे अ ऋएागरने समीपे पर्वान्ता लीधी चिव राजने गंमीने 80 रवन तिहामार्ग मार्ह जाता । प॰ सजयमुनी प्रतेकहें बेक पवइए तव तेममनप्रवति काररहित २ जमनासदीसं विकार रहित रू बाह्यरूप प्रसन्त्रविकार रहित त्र ताहरा किसों का किस्याने ऋथीं त्रिकरण शुद्ध किया करें विमान्त्रती के के प्रोपकार पर सेवे वे पएम न्यादस्य व नवतिमगीत्र गोव हेगीतम ना॰ नामएनामे तहा विव अनज्ञान त्र्यने चारित्रना पारंगामी भानविनाकियाना करणहार २२ १० = कियावादि

ङ १७६

हेमहामुनी सांलली. चिपानी परूपणाने पर लाषेपरूपने तेहवीमति हानथी न्त्रेर सहता पोताने के त्येते शास्त्रथी करी ऋथवा ्ब • न न्यना जाए। त्तरीपपानीजाएएएहारते मेयन्ते । एवा मिथ्याती इ । एकियावादीसस्त्पने पा । भगट करता द्वारा . २३ न्ताइक दरसन च॰ न्ताइक यथाव्यान चारित्रते स॰ सत्यवादी साचा पाकृतना ्बनपस्यप यी तो क्र केवा संव निश्च त्राव क्र ववव इव इयादिक् सुमतान विष

For Private and Personal Use Only

ਚ. १९९

वि विद्यमान वतो परतोक मिथ्याती सन्साने प्रकारे जाएंत्र अन्त्र्यापएरी त्यात्मानी लावें करी श्रानार्य नसदेहेपए क केवो बुं पूर्वलव अव क कं तो जाव जैते त्र्यानुषा रूप पाली केची व वन्सविरसनी चेपमाएतल सागरने त्र्यानुष मोटी पासी एदस सीदि॰ ब्रह्म दिशा व समन्यम सेन्ते चन्यो बैंन ब्रह्म देवली मार मनुष्यना लावप्रतंत्रभाव आव्या देवसंबंधी १०० वरसनी चेपमा कथकी त्र्याव पाम्यो संजती राजा पण्योतानी वित सार स्मानुषो जावनाएयो जव नयातथ्य नेटलो होए तेटलो नाव मिध्यातीनी नाना प्रकारनी रहचीन प॰ परिवरजेसाध जाण्वो वित सजती स्त्पकहे है इं • बंदा लिपायने 663 13c 4.

त्रव त्र्यनर्थनाकारए जे मिथ्या तादिक अमुल । इब एवोज्ञानेकरी सहित क्रए चन चाले प्रवर्ते पन निवरत पन्मश्रासावद्या सबहिंसादिक सर्वित्रंमधीने वर्जीतो कर्नु निमित्तनाक जेयसद्वहा इंपएएबो बु त्र्यः त्र्यात्र्वर्यकारी संजमनेविषे नु॰ सावधान इ० ए पूर्वी का जाए पंतित तन तपसंजयने हवायी पर रहरतस् मन गृह्य सावद्यगोष्ट्रयी थको मवर्ते साधु त्र्यः रात्रादवसने विषे वान अपना निवन्तुं बु श्रहानाइए त्र्यहाराय विविराजक्तिविनेके वे में मुजने पूर्वसीप्रशाद। सर सम्यक्षत्रकारे क्रांडेमनेकरी तार तमेपूर्वसीते प्रश स्षी एमषत्रीराजत्वी पूर्वानी श्रवसर जि॰ जिनमत बीजामनमा एनमसे ३२ कि॰ ज्ञान सहित क्रिया ते जिनमतनी ज्ञान ते के बे अन् आकु विन समिक तसिहिन चब त्र्यवधारएो रोचनेकरी धी वधीर्यनंतसाध कियाते मिध्यातिकियाने कडे जिएासासएं। ॥३२॥ किरियंचरोयएधीरे॥

9 0 -

नुः १३एग

चारित्रधमे प्रते चव तुमारे प्रवर्तनीग्रमाहरी ए ज्ञान साहत ग्यानेकरी सहितयको ५० सारमूक्यो अव अधे ते मुक्तिनारूपफल ४० धमेते जिनशासन लं लरत चक्रवर्ती ला॰ लरतथे त्रने विषे चि॰ डां मीने वली कामलोगने प॰ संजय स्वपञ्चानदसेनसहित चारित्रधर्म ए बिर्झएकरी वंतिययो चारित्र त्र्याचरयो पुण सान्समु इलगे त्रणदिस त्राज्ञापवते चौयादिसतुसहिमवनपर्वेनलगे त्राज्ञापवते लक् केन केवल संपूर्ण बांमीने दन्द्याएं संजमेंकरी पन मोन्द पंड्रतो च बांगीने ला । लरतपत्र मक्मधवनामाचक्रवती मक् महाजसवत ३६

ξ**C**° Ω

न॰ नकनर्ती म॰ मोटी क दीनो भएत। पुठ पुत्रने राज्यने विषे थापीने सो॰ तेएो राजाएं पांचसरीर असार आएगिन तप त्र्याच रघो चंडला मन मोटी का दीनो धएरी सन सातिनाथ सातिकरए।हार धान वृषल समान इक इष्वागवसी राजामाह वह पच्पाम्या ग्रह मोन्सिगत ऋह प्रधान કે છ सा॰ त्रणदिस समुद्रसग ला लारतपत्रनविष न मनुष्यमाहम त्र्याज्ञापवत एवा राज्य च वांमीने धानवाकुर पव पाम्या गव मो स्तानी ऋ प्रधान ४० च० बांगीने ला॰ लरतषत्रम राज्य च० चक्रवता त्राव त्र्यरनाथ त्राव कर्मस्त्रपणि रजरहित यद बांनीने जुन्मधान जन्मम्लोग म॰ महापदम - चक्रवती नेए। तः तपत्रप्रादस्य एगवन

नुः १८१

में बायम पृथवीना राजाना माञ्मानने मरद्र हार हु हिर्पेए। महमनुष्यमा चक्रवती समान प्रपास्यागति ऋ प्रधान जब जयनामा चेऋवर्ती जिब जिनो श्रव सहित राष राज बामान राजा सहस्र कर द॰ सजम त्र्यादस्यो पन्रमाद सहित च० बांनीने प॰ पाम्या मन्दिगती ऋ प्रधान त्रप्रादस्या निव निकल्या चीव प्रस्था BB दसाएलिङ सब पतन्त राकड नमीराजाएनमाम्या ऋ ऋात्मान न्नलद्द सकें इ प्रेरवीयको साव चारित्रनीविषे पर सम्यक् मकारे सावधान कार्ने चे छामान वन विदेह देसनुराज्य मतदा क॰ करक मूराजा क॰ कलिंगदसनिविष महराजा नव नीमराजायिद्र गधारस्य

ऋ १८

नुः १८२

न निगर्राजा बूज्यो । ६ ए० एमराजामां हे व० धोरी समान निव्निकस्या जिब् जिनसासनन विष ऋशिष सावधान थया धु स्रो॰ सिंधुसोवीरदेसना राजा वच्धीरीसमान चव पर दीन्हालीधी पर पाम्योमोन्हा गतीत्रपर मधान धट तर तेमजका सीदेसनी राजा नंदननामा साममी बखेरेब काइ कामत्नीग्वामीन प्रकाष पर हएया कमेरहा पित मेंच मोटो वन त्र्यव त्र्यकीति जेहनी पवानेमेलकी रतनागु॰ न्यायक खाना त्र्ययंग त पा एवी राज्य बां नीने मन महाय अवंत ते अव संज्ञमने विषेत्र्ययये तन तिमज्ञ अयतप करीने तेले दी का लीधी

For Private and Personal Use Only

श<u>्</u>

सिन्मस्तकमाथा साथे।सिन् सरीरनुपरें ममतारहितपर्यों संजमस्तप्पी सन्दमी अपन धीर्यवंत अर मिट्यातिना परूप्या कु हेन तेएोकरी नुव्धेलानी परे मतवाला मन प्रथवीने विषे प्रवर्ते एतलेसूर देवद्र अभिमना धणी थया सं क्ष्मी सद सत्य कारी लाव लाषाकहे वाएरियान सहित किया करीने तन एकं क तुं मसर्वा तरे हे तरसे ऋव ऋगगिएका ले त्र्यव पोताना त्र्यात्भाने वसे मिट्यार्तकरी किमवसवी नहि इत्यथे: सिद्याए नीव कर्मरजरहितथुको इव इम्फ्रेक्फ्रब् ५४

7F.9 F.

१<u>८</u>४

रमएीक का॰ मोटा नुंचा वृन्त तेणेंकरीयनातेनगरनेविषे राव्राजाबललाइ मिबस्गानामते पुत्र बन्बस्त्रीनामाकुमार बसला इराजानी श्रक माता। पेताने दः वलंल देः यहस्वपए जनीनायुए त्राव्यावनः लिए नं त्र्यानंदकारी वे तेमृगापुत्र पाव सिषरबंध प्रासादने विषे क्रीमाकरे वे पणी स्त्री साहित मन वंदकानादिकमणी रवक्केननादिरत्न तेण कुव जमा विपीटणीनु ततु चन्ध वाट एक विमिले तिहां नव नगरमाह

-×1.90

95-6

१८५ छ.

त- तप १२ लेदनात्र्यालियह संच सतरलेद संज्ञमनो चरणहार सी अद्वारसहस्त्र ऋब ऋएामि सर्ते पके क व क जाएं व श्रागर साव साधूने दुरसन पएपके ऋ परिएाम तन्ते मृगापुत्र महिनुपसम्या ऋषैवामू बनि बस जार जानिस्मरणु झान सर पातां बतो सद उपनेयक पुरुपाछलीजात त्नवं ऋगव्यो ञानजाति आब्जाति जाः जा स्मरणुनुपनु मिन स्गापुन्नने ाति समरण स॰ नुपनु मह मोरी रुद्धी ना धुएरिन सह समरीस लारी पिन पाँबलीजाति

3U. 9 OI

5 C E

अन् अए। राचतो पको नु॰ त्र्यावीन विक विषयने विषे सूर सालात्यो इतो पूर्व लवन पर पांचमहाबत उ॰ उप एहवू वचन ऋ बस्यि विषे अपलि दाषी पानुबु मन्संसारस मुद्रथी त्र्यव्दी द्वा लंबानी त्र्याजाया पव हु देन्दित निवतेचाना का॰ ने लणी निवत्त हेमाता माताएत्मोगत्र्यामत्र्यापढी मृगापुत्रकं व श्रव हमाता हतात में भागलागया विवयिष्णलविपाकः वृन्दाना फलना **जपमाए** ॰ करूयाविपाकना देएाहारबेएलांग अन्तरंतर उन् उपना देएहार इ० इमसरार ५हावहा अब अदरु चिमय देशीर अब अक्रचीथी नुपनु ए नदारिक सरीर अब अ अशास्तरी बाब वास जीवने ए त्र्यासासया जदारिकसीरवासमिएं।

स्ट एग

र॰ रति नथी पामनो त्रा-त्रायाती सः सरीरनेविषे •पर पर वृद्धपएं। बांमवी ऋषेत्रा ऋशास्त्रता त्मए। वास पणे डांम्बो बुदबुदा संर सरवा सरीरनेविषे क्रारित निय पामती मान् मनुष्यपर् अब स्थारनाव्य १प्त जर जराउष तनाधर रोच रोगमरपा अन्हमाता उन्डिप्नो हेत्निके संसार की किसेसाएजीव जिहा चर डांमीने युव पुत्रलायो वसी वंधव ५० एनदारिक सरीर कि किपागवृक्तना फलतु न नथीलाली जिम र परिए। मे पण परिएाम जन्जहा तिम २ कि पागम लाए।

AT-101

नु∙ १५५

पर परिएगम नथी त्नसी ऋ० पंध जीव जी पुरष मीटा पंथ 94 त्र्यद सबसरहित जा 8611 **डु॰ स्**धातृषाएकर वता जा जाएपरलव सिन्तपुरुषपुः षहिए त्र्यह पंथ जे 'त्रगीकार कर ग_व जातायका गवता काच करीन जीन जीजाए प॰ परत्नव गठ जात्रिको सन्ते पुरष सुषा हाए त्र्यक्र श्रद्यक्रमे पात रह गन्नता परलव सस्तहा ऋव यए प० बस्तियक सातावदनीराहतहाए तक ने घरना घए॥ जन जम यह स्बन्धर प्रमान लब्ब कुमूत्य वस्त्रकाढ

77.90

१एए

इट५

त्रा त्राजी एविस्त्रादिक त्राव्वांने पन्धा रहिवादी ए श्रात्मानेति न तारे बे ब क्र मूल्य जाएीने तारसे तु नुम्हे द श्राच्याता सा॰ चारित्रहपुत्र इ॰ पालता दहिक लिव गुर समादिक गुएनि सहस्त्र धाक धारवा यतीए राषवा सब समना सब त्र्यापणात्र्यात्मासरषा त्राव सर्व सर्व संत्रुमित्रनावेष त्र्यापए॥ त्र्यात्मासरषा लाववान्त्र्यापान थवा जुन सर्व जुग त सर्वो जीवनेविषे निवर्ने जाबजावजीव संगे पुरु पासता अव अममादीपएर मुख्य मृषावादनी लाग्लाः वरजवा हि॰ हिनकारी सत्य नि॰ सदाए हिनकारी सत्य वचनना बासवा दात साधवान श्र यव निचा

स्रा १०

१ पा रि

नः १७०

न्त्राहारसेवो ऋ ऋनि उक्कर २० वि बरते ऋ अब्रह्मचयेना काढ कामलागरसना न नम्म महाव्रत ब्रह्मचयरूप धार ए व्रतधारवी सुर श्रातिह उक्कर धि धनधान त्र्यादि पे दासनासमूहने विषे पब परित्रहनुपर ममतानु बजबू सन सर्वे श्रारलनी परित्याग त्रमान्डक्तर चेत्र अपनादिक च्यारपण रात्रिलाजनन् व॰ वर्जयू सन घीममुष वासि राष्वान सन्वयतहरी स्व त्राति इक्षर बुवत्रूषवात त्वाताढनु नव नुष्णानीपनी परिसह त्र्यव्याक्रीस परिसह उव्डिषकारी नुपा त्रयं तव तृ लाना फेरस जि॰ मेलनीपरिसह निश्च ताः चपटादिकना प्रहार्तः त्रागासम् उस्तरसद्यान जल्लमवयः॥ ३२॥

न्त्र १७१

उठ्दोहेलो लि॰ लिकाचारी जा॰ जाचनाकस्मी दोहेसो २० त्याहारलेवानीवृत्ति त्र्याजी केव के सनी लीच दाव कायरपुरवना हियाने विदारना एवा परिसह लाच विकाजतीनी धार एवत पारवी पासवी अधीर्यवंत त्र्यात्माने त्र्यतिदोहेसो३४ सुः सुवस्त्रीगववाजीन्यतुं सुन सुकुमाल माञ्ह चारत्र पालवा नहिविसामी गु॰ जैतीना गुएानी मोटा ला॰ लाहना त्नारनी परे यु सार

A. 160

न १७२

गर तेगंगाने सामे पूरे जैम जावो दोईखो नदी ऋत विस्तार ६२ जोजन जीत्वविस्तार ६ जोजन जीतिऋायां मुसा नथी नथीनो त्रप्रादि विस्तार ध्जोजने नदीनो मध्यविस्तार चाट्यो नथी त्रावतो होए निहा सामी जाएतेमते श्रीताकहिए बा॰ लुजाएकरी जेमसमुद्र तरवा दाहुं दा वाच वेजुनाकबस जेम रावसजमनागुएक पान समुद ३७ सन्तमसजमप् ऋ• फु॰ तेमदोहेलुं स्त्राचरता तूप १२ लंद ३० अवजन सप एवएकान उष्टाचाल तमसाधुपएएकान स्था सुमति चाले हे पुत्र ते लए। सिजम त्याचरना दोहेलु नि त्यात्यन पुद्धर जन्म च्ट जा॰ जवलोहमय चा॰ नावन न्यारि जहा अग्निनी सिषा सि॰ त्र्यानेबलित पा॰ पिना होए सु॰ त्र्यानेदोहे सी त॰ तेम दुकर पासना पानुहाई सिरुक्षर

ऋ १ए

नः १७३

होन्होर् बान्यायरेकरी कोथलो. तन्तेम इन इषे पालवी. कीन मंदसंघयएानाधएी सन् यतीपणुं पालको दोहेलो ५१ सजम तब्तेम निश्चलपणे निवसंका करि <u> ५० ५ इह</u>र पालना रवरत्नना त्र्यागर नव तेम जुपेदामयंतनधी तेहने स्वयलूरम ए।समुड पासमा पन शब्द १ रूप २ रस ३ गंध ४ पढी हैपुत्रपढ़ी वृद्धपर्ी फरस ५ ए ५ पांच तुब्लीगवह 8603 ४५५ व

तेमृगापुत्र कहे वे त्राव मातापिता पते एक एम ए तुमारुवचन जब्जैम बेरीमसाची कड़ालु इव इह लोकनेविषे निव्विषयनी तथान हुएनिस्यह एवमय जहा फुम इहसाए साव दारीर माव मानसी के वेदना त्र्यसाता रूप त्राव त्रार्पतं वार मव मे सोवसहिलोगवी लीव त्रातिवेदना त्र्यव पाणीवार कुव कुषत्र्यने त्मव लयनी नपजावए।हारीवंदनाम ला लयााएाय रिगातऋपससारला । लयनित्रागरी मन्म लोगव्या त्र्यतिरीट बेटना जन्जम इन्ए जन्मगरए। रहप दुष त्नीगव्या मनुष्यताकमाह त्राति नष्ण ए॰ ए त्रा जीयी त्रानंतगुणो नष्णातातिहां न॰ नरकनेविषे वे॰वेदना नष्ण त्र्यव श्रुसाना त्रीगरीन एव एता द्वी त्राव त्रानतगुर्ग सिन निहा नव नरकनेविषेवेदना सीनताह नी वेदना जन्जिमएमनुष्यसाकमाह इनएसानता द धट

For Private and Personal Use Only

न 904 त्र्यन त्र्यसाता चं न्ना पग ब्रान्नीचीमस्त करीने धल भाजनतेनेविषे **सुर्याने** जनजाजस्यमान बस्तीत्र्यमिनेविषे पर पर्च्यापूर्वे **ऋमतवार** 'सुहाएत कवज्ञमय वेसु कः कदबनामानदीनाव प् तसर्घानुष्णव पुनावष क॰पचवानाकु॰ त्नाजननावष **ऋषेघा**खा विच वेद्यो पूर्व ऋगनतवार अन्यान तीसए केन काटाएकरी त्र्यान्त्र्याच्या नचासिन सामपीवन्दानी स्वेन्खरी पम्बी पार पासे बांधीने पासबद्धए।

१११६

१ए६

पाव श्रश्रलकर्मने कु च शब्द ऋ.१ए पीव्यीम्बोसुजने सब्त्र्यापए त्रा॰ त्रानतवार करता नुदएकरि उपर् पालनाम स्वह्रपकीधी सन्सवसनाग विक तमफमतो घणीवार ा ॥ ५५ ॥ त्र्यसीहि ३ जुरु चुपनो क्रं पारु पापकमें करि श्रुक परवसी लि नुपना लहिनारयन नरकने विषे बलनाधुसरानावेष ॥५६॥ त्र्यवसासाहरह

नः १७१

चिच एहवी चेहने विषे तसानीपरे सपए ॥ ५८ ॥ सरवाचाचकरी पर्वाए पर पाम्या वैतरए घळ्याता ढढता तापेंकरी नुष

न् १९४८

मुव्युजनेरे मुव्शस्त्रविशेषे करी मुकेंगरें करी करी गई छ त्र्यासा पर पाम्यो दुष त्र्यनंतवार त्रापासरपा सुबनी ला राएकरी गागात्र फार कातरएरिकरी बे खेम की धार नुरुषालन त्र्यन घएति वार मिन्म पातीएंकरी त्रिबो लेखो ग नीपरे नारी बव्धणी चेवपू बाब बाहिने बांध्यो स्वि कीधां ६४ पए राज्यां वार

8 (04

मन्मवनीपरे परवसपणे के उन्बनसेकरी फान्फाम्यो मगरमन्त्री गन्यह्योजाते मान्मास्यो मुजने रूपे परमाधामी एगर्न रहपे ाहन बब्जासंकरी बांध्यो. करी. ल•सरसंकरी जागोचडुरा गाहन कु॰ क्रहानाफरसी त्र्यादि तेएी वन्सुनारने कुटाने नाना फा॰ फा न्या लंदा कटका की घा मुजने लोइनीपरे कीषां क्टा नाना श्रमतनार ६० १९७

जु. २००

तब सम् सीन सीस इत्यादिक पा॰ पाए आर श्रारमता सुर ऋ १० किन्त्रस्यतकल तेगोधी रसकरीने अपतिरो मुजन कलतो रस मन्मस्पूम खं मासनाधमकरीने मस स्थान पवराच्या सन्त्र्यापएगा यान्य परमापामीएमबात्या त्र तुऊन नेविषे यतल झती धिना فرتها तुब तुजने पिक मेन्गोलनानीपनो मद्यम् पार एम पचावी जन जाजसमानश्चाप्रीसरपोन स्वम्य बग सर्वावएकिरीच्ये घएति वार १० वलल झता पाया मुजन निक्सदाएलय त्रास तेएकिरी उषसाहित वक केंपमान सरीर पक्त्राति इषसंबंधी वेक्बेदना वेब्लोगवीमे नेएोंकरी मारा सरीरनुं जोही प्रमुष ३१ 37 300 इहिएएं बहिएएाय 119511

For Private and Personal Use Only

मन्मोटोलयनुप ली॰ सांलासनांपण नः नरकनैविषे प॰घएतिस्बितनीवेदना 209 वेदना जावे लय चपनाव तहवा लामान नींव तहवीदिसं हो वेदनापण एक एममनुष्य सोकनेविषे जेवीवेदना वेदनाथी अपव अपनतगु एगे आधिक 33 सन सर्व लवनेविषे असाता त्र्यसाना वदना वेव वेदना लोगवीन साता नव सहलवस श्रमाया बंब तारी इबाएं पुरु हे पुत्र जो तारी सार चारित्र पिनगैए। निका नव एतली नेविषेसावद्य पिता करव

्य. २०२

तेमजसाची वचन मिव मृग पषान त्र्यटवीने EP एक एक सा ऋ तक १२ लद **जनजिवारे** स्त्रीहरींग मन मारा त्र्यव रहि मिनमृगने त्र्याचरस्**उ**ट जपञ सम्ब

24. (h

203

नः २०३

ल॰ लात व्यादिक पायनि लक्त होए तुणादिक जिहा जाए सव श्रीवर खा॰ तृएगदिक वन वनगह पाठ पाए।। नसत्रादिक जाए जश सन्उदमवन परेस जमनेविषे परनकरबा जाश एएकया जुर्वदाकतया मास्नगतीए मृगचर्या सेवीने जाए दि॰ नची दिसे

For Private and Personal Use Only

२०ध

नः २७ध

ए चएममृगनीपरें मुह साधुगोचरी ए गयोध को तेमयती सदाएगोवगोचरीकरीने संजम नकर द्रध थाए तमकर परिश्रह ।तबा रपढी पित मृगचयो सजमरूप त्र्यान त्र्यान्वरस सन्सवे श्रसातारूप दुखनीमू कावण एममृगापुत्रे कह्या हार मृगचयो आचरका अब मानपिनाने गें जो हेपुत्र जेम समय थाए तेम कर द ६ ए०एम त वन्धएपिकारे मन् ममत्वत्नाव वद्व तिवारे

For Private and Personal Use Only

કુ.

गुरुकहे हे शिष्य सुन्सांलुख पन्घणारत्वोनो धणी राजाः त्र्यधिपति विव घोमा फेरववानी ऋीमाने मन् मिक्सपीनामा ना॰ नाना प्रकारना फुब ब्रह्म सं । सना चंपक तेए करीच्या प्त. नार नाना प्रकारना कुसुमंकरी डायु हे, तेवन स्व स्थान खे हे सार साधु सं असंयति सुर समाधिवनप्रत्ये नि॰ बर्गदीर्ग स॰ वृक्तनी हरे सुरुसुकुमाल सुरुसुखानत पा॰ देधीने अर अत्यन पर छत्कृष्टा आ। त्र्यक्रियार रा॰ राजातं संयातना त्र्य**ऋतपरमा** त्र्यतसा रूव हिनरूपनो विस्पर्ये त्राक त्राम्बयंकारी त्र्यायंनु सीम्यपण ऋ ऋश्चिकारी शरीरनी वए, श्राव श्राश्रविका न्माञ्चाश्रयं कारी ノを引きる रीष्ट्रप

۳٬ ۶۶۶ अन् त्याश्चर्यकारीनिर्लोलना अन् विस्मयकारीलो अन् संगरहित पएन ६ नन्तेयतिना पगर्न वांदीने तर तरुए न्हानां वे त्र्यव हे त्र्याय एवी लघुवयमादा साकमताधा लाव त्तक साववान न धमवतययां जो चारित्रने विषे एक एत्र्यये तु मुफर्न सालिलाव एयमद्व नार त्र्यापामी वस्तु पाम्या व तेनी र का करावे एवा यांग द्वामना त्र्यव सुजन त्र्यनुक्यानु करनार को इसुव नित्र करनार महार नहता किंव संगारमात्र नाव त्र्यनुकं पाएकरी सुखनी देएाहार कोई तः तेवारपंबी तेहस्यो राज्रा श्रीएक ए॰ एम पनुष्य इ० का खेवन तेन क० कंम नाथ नहीय क्र नायुक्र तमारी लठ लयनी त्राए बीहीता पाए। न

مر م

ङ ३११

मिन मित्र न्याते करी पन सहित एवं मान मनुष्यनी लवते खन नित्र्ये पामवा इसल छ ११ सेव हे श्रीणुंक मगध देशनी गर्करहे अव आपए। पे अनिय छती का कहना नाय सांब ने नव राजा सुब संसंत्रमिन्निनी ग्रानिनिस्मय वव एवं वचन ग्रावपूर्व त्र्यापालालाय त्रक तंत्रीशसहस्त्रत्राक ऋष्क, तंत्रीशा शक्रीमी मक पन्ध्यमा वचन कह्ययकु विसमयपाम्योराजा श्राति ॥ श्रघटत् केम बास मा॰ मनुष्य सर्विष लोग सेवक त्याराधे के १४ एव एवी मधान सन लुब्ली लजाम कार मनो वार्कित वस्तु सहित्र वे महारो त्र्यात्मा कः केम स्मनाय थान द्व मा० रखेई लगवत मुन्ध्राबील तुज्जन ते लिएी गाम ॥ सहकानसामाप्पए॥

For Private and Personal Use Only

न्नः २१२

वियुनिकहेरे नः तमेनथी जाएंता ऋ अनायपणानो ऋयेनुत्पत्ति ऋ द्गराजा सुन्सालव जि जेग में महत्या कार को सबी नाम नगरी पन्त्रतिषन सचय एवं नाम पितानु १८ पन्त्रयमयीवनवयनविष मन्हे महाराज ऋन्त्रतात्य लपमा रहित ऋन सर्वशरीरनेविषे पर्देगिथिवेराजा १० त्र्याखनीवेषयदना नपनी त्र्यवक्तविस्तीए। लाव दाघ ज्वर सन् शस्त्र जम पन्त्रप जहा परम ति तीन्तरा रिना विवर कानमपुरवमा है ऋग्रा पी ने ऋग्र वैरी ऋ॰ ऋाखमा थको श्रावानसङ्ग एवम

ब्रा २०

न. २१३

तिः केमनी मुजने त्र्यन्मध्यत्नागनेविषेपीमा नुरुमस्तकपीनावा लाग्युं इं इंदना बज्जनामहारसरूसरषी ॥ नुपनी जन्तमगचपाम मेर्गहारे त्र्यरथेर्वे द्यतया विरु विद्याएं करीमेत्रेकरी बीजाने लयन वे॰ वेदना प॰ त्र्यत्यत दारुए। त्र्याज्या. पजावे तेवी त्सानाकरनार त्र्यं लिए लिड़ाह्यो स॰ शास्त्रमा कुशल मूर्ण मत्रमूलनाविशारद जाए। निसिवाकरनारा मातादिक जो इये तेवा हता. करनार पएा त्र्यवन्त्रनायपएं हतु २३ पिनापेताय महार सर्व सार धन मन महारात्र्या एक ए महारे तोपए। पिताएं इः संयीन मुकाच्यो मुकने ए० एवं माहारु ऋनाथपएफ २ध ऋएगहया

न्तुः २९४ पुरु पुत्रना शोकेंकरी इन्द्रस्वीत्र्यार्तवंत तेमालायं नम्रकाव्यो मीन मुक्तने एन एवं महारु लाः लाइ महारा हे महाराजा त्र्यनाप त्विगनी बहेन महारी है महाराजा सर्गा एक उदरनी अपनी महोटी न्हानी हती लाब्लार्या पहारी है पहाराजा महारी हार्रे अर्यन अनुरन्त प्रेमवती पतिव्रता एमहारू नुब हैयं महारु सिंचित लीजवती हवी २० च्यव अन्त्रपाएं। एहाव श्रेमीस चूवाचंदनादिक गंवसुगंय ५व्य मन्युजनेजापाता अयवात्र्या साव तेवीवन स्त्रीनीवन लोगवे २८४ साबादा

aran

न्न ५१५

स्त्रीये पण इः ख्यीनमूकाव्यो एव महारू एक जुं जुःरवज के निश्चे वारंवार सहेलादोहिती एवी जेवे वेदना लोगवी जे संसारनो श्रांत नथीएवा संसारमाई वि विस्तीएरि त्र्यांखनी वेदनावीतोत्तव समावतदं इदियनो दमनहारानि त्र्यारत्न पन्योभवज्ञे आदिन्त्राणागारपएत एवा वासी एम निवंतवीने पन्कु सूती है नव नर्राधिपराजा पः जेटले ऋतिक्रमी गइ रात्री तेटले वे बेदना नन्तेयारपढी कर रागरहितयेयोधके प्रत्नाते आद्याबीने बन्बध्य मातापिता क समावतद्म महारी तनु तर तेवारपढी कुं नाथ थयो निदिय त्र्यारल रहितद्वली पर पिनवर्ज् त्र्याणगारपण्ड त्र्याप एए तथा परना न्यातमानीक्रपण भाषा थया

রা ৩৯

ङ २१६

राजामत्ये साध् त्र्यात्रप्रात्माञ बूट शामली वृक्तनी नुपजावण ऋव त्रापणी त्रात्मान मनीवाबितवस्त्र त्र्यव्यापणी त्र्यात्मान मुफर्न नद्नवन ३६ त्र्यव्यापणी त्र्यात्मान कर्मनी करणहारविवकर्मनी रालए हार त्र्यमित्र एटले वेरी. त्र्यः त्र्यापणां त्र्यात्माञामेत्रत्र्यने ५० लुन त्र्याचार विररहा त्र्यक्त्रभनेतं हेराना नवतेएकवित्ते थिरनिश्वस थईने रकः धमे सी॰ सीदार्य त्र्यनुष्ठान करवानीवरवते एवाव॰ घएा का॰ कायर मनुष्यत्रे ए॰एक केटलाएक कुं मिर का सीयंति एगे बुक्त कायरा नरा ॥३८॥ दिकचारित्र मूकीने वेष बांकीने पाला

2n

० २१९

पब दी सा लेइने मब महावनने पितवर्जीने सब सम्यक् मकारे सेवे पव प्रमादधकी करीने षोटामारगनी परंपरा चखावे ३८ त्र्यं त्र्याप्यस्तिधि वर्ते त्र्याः त्र्यात्मा मधुरादिशब्दने विषे रः रसैनेविषे गृद्धका त्र्यापाकरमी त्र्याहारतथा थानकनी प्ररूपणाकरे, घणानाघटमां मिथ्याल घाले थी बिंव बेदी नशके बंव रागद्देषह्य बधन कोव कोई लगारमात्र नव्नथी इव इरियाने विषे रातें पराच आ। यत्नपएम जन जेहने तथा कर्मबंधन ॥ ३८॥ त्र्यानुत्तया त्र्याव त्र्यादानते नुपगरणात्रेता निव नुपगर उव मात्रादिक परववता । वीव श्रीमहावीरादिक सत्यवत् धै येवत इरियान शाधि लागतन्त्रतमञ्जूषणा चि॰ घएगकाल लगेपण ते मु॰ मस्तक मूंमनी रुचिनंतल अ॰ त्रायर बे बतर्जनुं एटले बतलई बल एजिमार्गनसंच्या नन्त्र्यः तमार्ग चाली वर्गन तब तपनियम ऋलियह यी त्मव त्वष्ट विव घणावष प्रगंत्र्य न्त्र्यात्माने पोचादिक क्लेश पमानी नवपारगामी नहोय निश्चय संव विर

初.00

्छे. २१८

जिननी स्राज्ञा स्त्रने समकेत रूपधन ऋं वशन की घो होय त्यात्मा जेए। ते राव काचनो विनागली पोली मूरी जब जैमते ऋ असार कू रबोटानाएगनीपरें मूल्यनपांमे करको श्र्ययंतिए अन्त्रण अर्थनीक होय अर्थनीक न होय फुंगनिम्बे कः पासधानविष इः एमन्ष्य स्निकन जान्जाएानी श्रागक्षे धर विकार्रप जी व जीवितव्य बुव अन् सं कारएों पांच्य्याश्रव संववा भाषे तथा साधूना वेषरूपसरखात्र्याचार जमाली प्रमुषनि वधारीने पेटत्नराई करीने सरखा फेरफार गारीना प्ररूपक तेने संयति न जाएावा सं कं संयति इं श्रमजए समय सप्पमाए प्रवर्तना अपनेक प्रकारनी निंदापामे से॰ ते वि॰ विष पीध् इन्यितंगी चिच्घणाकात संगेपण विसंतु पीयं ॥ ५३॥ जहकासकूरं॥

न २१०

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

ज्ज जेम कु ० लूं मू यहां ए० एवसी ध० हिंसादिक धर्म विव विषसहित मि॰ त्यूमिकंपादिक त्र्यतीतका सना निमित्तशीरवे कोव <u> उिकादिक रारीरना । पंग्लाकोनीन्स्रायस</u> विचार कहेतीयको प्रवर्ती. ऋथे स्त्रीत्नरतारने एक पोतीयें स्नान कराववानेविषे अति आधारलूतनहोय ऋर त्रांतकालने तेनी जुपार्जना करती थको जीवे ते मंत्रादिक थी मंत्रादिक चेव नगबड सन्परलवनेविषेसुषपा त्र्यव-शी लरहित स० सदा पुःरवी. वि०विपरीत मवानी आशाहीयते डः षधारी जाय

गुः २२७

जुर जदेशिक त्याधा कमीदिक त्र्याहारस्वानकत्नोग ऋ त्रासाधुरूप ध६ वीने तेनासालदेखा मीने प्ररूपणाकरे तथा यंपकरीने ॥ ४६॥ जुद्देसियं किं कांइ लगारमात्र श्रापोषणी अन् अग्निनीपरेसन्सर्वल तं नेटली पानुने मिथ्यात्वसेवतां धकां ऋ वेरी कं प्राणानी हणनार न न करे श्राक्तवबत्ता त्र्यात्मा हु॰ लुमा त्र्याचारनी ना॰ जाएाश म॰ मरएान पन्पश्चा नाप करी

ज २२१

निः ऋर्थरहित निःफ सनिः तेन्यप्रिवादिक स्त्रादरीने तः तेरस्य जे जे जे जनमन्त्रर्थ विव विराधे पश्चात्तापकरे गृहस्टमां पराजई नशके चारित्रनी रुचि तिवेषधारीनी निग्धसइन से तेवेषधारीत्त्रष्टतायें करी ख़ु स्वीजे खेद पांमे नव तिहां लोकने विषे तत्रसाग कु जेम पंखणी ब्यामिषसहित उत्त्व पामे तेम निवानर जिन नुत्तमनी सो॰ सांत्रांतीने हवे त्र्यनाथी मे॰ बुद्धिनंत एवा श्रेणिक सु॰ लांगे तांरव्यो दे राजा परयें कहे बे कही इसोयापरियावमेई ॥ ५०॥ सोचा महावा

कुः २२२

मनमार्ग कु॰ कुशीसीयानुं शिखामए।साल्प्सीने क्सांसाएं संग्रा जहायसइ श्रुव प्रधान सन्यथाख्यात युष्ट ज्ञानादिक गुएरिसहित चारित्रपाव पासीने -बारबु संववं नु पामे स्थानक निविधुलन्तम त्र्यनंतसिद्धनं स्थानक ए॰ एमपूर्वीक्त कहा ते से ने श्रेणिकराजात्रत्येका कहा स्त्रानायी महापुनि त्र्यनाथी नियंथ महोटेविस तारें त्राध्ययन

अर २०

२२३

ंज़ २२३

त्र्यः स्त्रनाथपएं ज जेम हतुं ३० इम बोल्या क बेहाय तेम कहा तुद्यीय नुबनुम सनाध तीर्थकरना तुमी छो सं॰ हे संयति स॰ सर्व जीवना खा॰ ऊँ ख २२३ जुजन

ગ. વર્ધ

जाव धर्मध्याननुं विवविष्यधान जे की घो निवन्नामंत्रण स • तेराजा बीजा राजामां हे ऋ • ऋए। गार मां हे सीग्सिंहसमान ते सिंहसमान ते सहित से॰ बंधवसहित रायनामू विमलेएा श्रव बांदीने सिव मस्तकं करीने त्र्यनगर्या पोताने स्थानकें

30. 5 a

. કરપ

विक पंरवीनी विक्यतिबंधरहित विक विचरे बे दंमधी इ० इति विशासु न्य्रध्ययनं सं० २० विसमेन्त्रध्ययने श्रेणिकराजा आगद्य पंचमहाव्रतीस 'नेथा वेषधारी बताव्या तेथी २१ ने त्र्प्रध्ययने समुद्रपाससुध साधुधया ए ऋधिकार २१मां कहे बे. पातिन विरतनो पर्गिथयो सार्थवाह समजान्या मार्ट शिष्य सार श्रावकनेविसेष करतीयको द्यांतनेविषे जाज

२२५.

बन्द्यापार करतां ते बान वाणी नंदी ए ने धुन बेटी तन गर्लसहित पन स्त्रीने ले स॰ त्र्यापणापीताना देसे पायितन २२६ तंससन्तं पश्गिञ्च त्र्यव हवेपुत्र तव जिहां समुद्रमां सन्समुद्रेपाल एहवी नाम घ॰ घरएी स्त्री समुद्रमाहे प्रसवी जएयो तेल्एा कुस्रव त्र्याव्यी नं नंपानगरीने सार्वश्री बार नाएए ने त्र्याप संववाधेने घरपनेविषे तव ते श्रावकना पुत्र लोगववा जाग्य वक कला निव नीतिशास्त्रनी जोब जीबने करी पि॰ बसलाबें दरसन जेनो सुन्लर्धा

स्पर्व

२२९

तकतेस क्रक्रियनंत्रायी पिविताएत्र्याएी सवस्त्रपनामा रगरमणीक परएगवी पणु सुधल्नीगर्व चौरने वधवानी त्म्भिकाने विषे सेरजाता छ इमबोट्यो संवतत्वनाजाए सितहा घोषने विषे शुल एविपाक प्रतन्त ययां जातिस्मरशयेथी

छ[.] २२*ए*:

सं व वैराय आव्यो त्र्यान पूर्वीने मातपिताने त्र्यः श्राप्रागारमप्त मीने **जत्रक** ष्ट मनमोटा महिनु हेतु के संपूर्ण लेन लयनु हेतु तेस्त्रीपनादिक गंगीने संस हो ए वर्णचमहात्रत सीर्विषरहित त्र्याहार सिएते जनरे त्र्या स्थादसमीत्याग त्र्या सत्यवसी गुएा महाव्रत सेवे हे पब २२ परिसहा बमेर्बे ११ बंब ब्रह्मचये नीखाग पंच पांचमहाव्रतने स्थाव श्राचरे जपदेस्यो सि दांननी जाएा २२ ए न् २२०

खंब्धबचन संजती ब्रम्हचारी सार पाप-व्यापार ॥ सावद्याग पारव रवदेसनेविषे या असमर्थ कार कार्स २ कार पितिहरणा न्यः त्र्यापए॥ दिक त्र्यनुष्टान करतो पको सन्बीहा ्नुब्युलन्त्रयुत्नविपाक नुदयन्त्रा वेते त्र्यापणो मरो बब्दें करी नव न। वव अप्रुशुल सोवसां नव अवविक्र ने त्यूं को वचन आव नबोले युलग्रकल पास । वचन िनत्र्यसङ्गमाङ्क ॥१७॥ ह नव्सर्वसं सवस्यानकने विषे देषीने नव नवां बे पूजा गव त्र्यापण त्र्यात्मानी निदापणनवां बे संब संजती १५ त्र्याति लाषाक खी २२७

च<u>ुः</u> २३०

वं ऋतिप्रायने इ॰ इमह जे॰ जेलावधी स॰ भीर्थकरने बांदे लब्लय ऋत्यंत मबते **मनुष्यताकने विषे** बिहामणा परिवज्यापनीनफो रीडलय साफ जलावन सपकरशलस्क लयलखा दि॰ देवतासंबंधी म॰ मनुष्यधाए तिन तिर्धेच संबंधी लयजपने पनपरि पु॰ दोहेला सहतां सी॰ सीदाइ जन जि बन्धणा कायर तः तेम परिसह नुपने ते षमे १६ बावीस सह नर फुए तहा निरचा ॥१६॥ परिसहा इविसहात्र्यए संग्रमने जेम न तिहां ते छपसर्गपा ना॰ हाथी सर क्रए ते नासे नहिं तेम समुद मैथके नबीहे साध पाख परिसह नपने षमे नासे नहिं नाफरस त्र्यानत्र्यारोगं विन्धणा प्रकारना दे॰ सरीर त्या॰ त्याकंद तः तिहाड्य नुपने बने र॰ कर्मरूपएरिज त्र्यणकरतोथको उपत्राहियासे सहे फरसंड्रष षपावे कीयां १८ । २३० तच्चिहयासएचा ॥ रयाइं खेविच पुरेकमाई %

ઇ[.] ૨**३**૧

मो॰ मोहबांनीने वली संगिनरं विव विचन्तए। करी पास निश्चसपर्रो ऋब्ड्यिपीलावधी नुनतप्णारहित नीचो कां चबानी परे सर्व इंडी गोपवीने त्यात्मग्रप्तथको त्र्यापणां त्र्यातमार्कीपा कर्मश्वताश्व लाकुं लोगबुंबुं इमसमे लावे न पुए नाव दीनपएगरहित मध्य महाऋषी निंदा त्र्याययुत्तं सहिद्या ॥ १०॥ परिसहा षमे संवसंजती सेवते सुगुर जुव सरलत्नाव पव परिवर्जी ने संजती निव सम्यक्प्रकारें ज्ञान वांबे दर्शनचारित्र रूप मोन्समार्ग प॰ प्रधान पामवानी ऋरिय ज्ञानादिक पद त्यी अगत्माना हेतूए संजमवत वाना गमराख्या

ऋाः २१

ुन २३२

विव स्त्रियादि अवनुपात्र इव्त्र्यापएम त्र्यात्मान प्रगती त्या आर. त्याचे तथा बकाय नी रक्ता ना तथा ज्या करण हार ।। निस्त्य पे रहित व जेदीवसहित गुपाश्रय सेव्या म० का॰ कायाए पन परिसह सन्तस करी सह चशने ध्रुपीर तेवानुपात्रय संब्या ते समुद्रपाल मुद्रपाल यती ध॰ दसविध यतीनी न्त्राच्यान त्राचित्रया त्र्यव महात्रधान त्र्याव ऋ प्रधान नाव केवल ज्ञानना धर त्र्याचरी**ने** यमे समूह एाहार जसवन अब त्याकासनेविषे नुद्योत करे तेम उ॰ विक्र प्रकारे शुल त्यश्रातन प्रकृ ाने**०**गतिरहित सूरु सूर्य ज्ञानेकरी ज्योत करे बे ति षपावीने पुन्य पाप ना व्यापाररहित स्थानीं निव्हीं सब्सवेकमे म २३३

मन संसारक पिने समुद्र सन समुद्रपाल मुनि ऋ वदी संसारमाहे ऋ। स्त्रियादिक रहित नुपाश्रय यतीने सेवबो कह्यो ते रहनेमिए जैमधीर्यपएं कीधं तेम विधिपएरो करेवी ते २२मा ऋध्ययनने विषे रहनेमीनी संबंध कहे हे रा॰ राजाने सन्तए। करी सहिन नवतहनी लबलायों बे क्रती इव बलल वे राव्बललाय रोहिएरिनोपुत्र केव कुष्णवासुदेव देवकीनोपुत्र सोवसीरि राब राजानेलन्त्राएं करी संबसहित स॰ समुद्रक्जियनार्भ राज्रामाराक्राद

૨રૂઇ.

ती॰ तेनापुत्र म॰ महायसर्वेत ला॰ लगवत आ॰ अपरिष्टनेमी जी जीगनीनाय द॰यतीनी गकुर पि अन्त ए। साथियादिक सं कल<u>पुरवरक</u>ृ अक्ष एक सहस्त्र नुपरेत्र्याव प्रवास नीपरए। हार गीतमगीत्री गीव नामान । त्साहत श्रा इसहरूस गाय कार काली सरीर नी षालंकी वर्ण्य रूपल ना राच स्घयएा सन्समचन्रसनामासस्यान जनमाबताना सर्वा न दरपट बे जेह समचन्रसा असाट तः तेनीमनायन कार्ज राव राज मनीकन्या लव् लायापए। जावजा चंब कृष्णवासादव ६ सीस र भी सील चा॰ नी ची उष्टी खुए स्त्रीनो दोष चारपाहणी रहित वता श्रव हवे बो स्यो जनपिताने राजे मतिनो सि॰ सोदामनी नामामए। सरषी प्प॰ मलासरीरनी वाज्यासद्वमेजमहाद्वप्र

चन् २३५

कु कुमार जा जेते कृत्या द दन धीएं करी नेनवराज्यो दोमपुष मस्तकमामू श्रा• त्र्याहारादिक त्र्या विव विल्लूषावंत की धा मंगलिक श्रीनेमिनाथ ए वासुदवनी चढो सोले के ऋव ऋधिक मस्त चू चूमामिए। नेमिनायसोलेबे सीवसीलनीक दन यादवदसारने चन समू सब्सर्व परिवार सहित परिवस्था ११ मरें करी हें करी ते श्रीनेमिनाथ सद्दर्ग परिवारिन ॥ ११ ॥

त्र्यः ३२

नुः २३६

तुव्वाजनने संवशब्देंकरी जन जेमंत्र्यनुक्रमें रचीजोइ एं ते रची बेहाथी इमघोरानी ऋणिका २एम ॥ रधनी ३एमपायकनीत्रशु तुरियाए। निवन्त्र्याप एग जु॰ सरीरनी कांति जत्तमें करी प्राताना दिवदेषी पाचमृगादिक जीवने हिपनवेंकरी लयल्जांत देषीने तिहां जाताथका मं मांसने मन महाप्रज्ञावन जीव तब्यनु

नु २३९

ऋन हर्व सारधी सन रुध्यायका त्नोव जिमानवाने स्थरधे बब्धणा लोकनीव विविवाहना का यने विषे विच नासकारी वचन सार दया सहित जिन्जीवनेविषे हेतुए हिंद ह निवनहिसुकन ए निक जीवक स्याएा बन्घणा जीव परलीए लिपिस्सई

नुः २३८

सन्सर्वप्रगटवजीने सार सारथीने पर दीधाः सु कंदीराप्रमुषम । महायशावंत स्रा॰ स्रालरण मनुष्यक्षोकमा नुतस्वो सन्परिषदासहित निन्दी परिएाम चारित्र लेबानोकीधोतेश्रीने मनाधी देव्देवतालोकांतिकादिक जब जेमत्र्याववानी विघर्ब तेम ऋतुक्रम जहाइयसमाइना दे देवता मनुष्यने पर परिवस्धी सीवासिबिका रव जत्तरकुरा एवनामेरत्न त्रुत्रीन मनायनां करवा निमित्ते तस्सकानुज निव्निकल्यो बाव्हारकाथी रेव्रेयतपर्वतनेविषे विवरह्या त्मगवंत १२ सन पहला जनस्य उ॰ नचान न न न तमसिबिकाथी सा॰एक सहस्र राजकुमारसहित सा॰ साहसिक सहस्रजण न कुए। साहास्सिए परिवृक्ती ॥१॥ त्र्यरबोलदन्तो वीरदन्तो त्र्यद्वाविशिवजिए लाग्न गुग्गसेपात्र्यवपुत्तो सप्तदेवसेए मुण्डिएवा २ त्र्यं वयमहाराय ॥ सबस न्तसवापण्ने नुसंसा इन्निसवापण्यादवकुमारमुणियवा ३ एएसहस्सकुमारानिरकतरिवनेमिसंजुत्तापढमिल्एसामाइचंचापरोतं सनुजास ध

र १३९४

ार्चे वित्रानषत्रनेविषे चंड्मावरततो इत्ती निवारे चित्ताहिं ॥२३॥ कस्या. बीचि मन्सकोमल कं न्याटलाने त्र्याकारे वांका वल्या सन्त्र्यापणे हाथें करी बे केशते इ० एक होते रीदी-कालीधी समाधिवं- वाज्वासदेव ना॰ ज्ञानेकरी वव वृद्धवंती थासे एक एएिपरें राज्समकुष्ण वासुदेव स्ति सां लिखीने राज्यानवरक न्याप्रवर्ष त्र्यवपाबाबल्याः बाव हारकानगरीने

२ध०

सीक सोकें करी मुन्यू बिएग यू बिंत धका २० राज राजे मितविल चिंतवे सा॰ ते जिननी हास्य रहित नि॰ त्यानंदरहित से ने श्रीय पन दीन्ता लीधी मुजने हवे तिवार पडी धि० धिगस्क धिकारही म० मारा जीवलव्यने जा० जेड्व ने मनाथ बांनीने कु॰ गुप्तढाकी लक्षा है फ॰ कांक सिएं करी समारा है केस स॰ त्रापएी पोताने हाथे सयमेव लंच्या वन धर्म करवा सावधान नुद्रमवंत थया इ० एम कहे ब वारु वास्तदेव तक तरजे कन्या . सक नुतावली नुतावली ३१ साक तेराजेमती पर प्रवर्धा क्राएधके लक्षलक्ष धी तब तिहां चएरी स्त्रीने सब स्वजननीस्त्री पब सेवक जननी न्यापएरी पोतानी पर्रा सी बसी खबंती बब ब क्रघणी सुताए ३२ गिवरेबन गिरनार जाए बीन परियणंचेव । वारनी स्त्रीने

નુ. ૨**ધ**ય

जन् तेमने रहनेमि पुन् पुरुषमाहे नुत्तमपुरुष ते एों मनविषयथी निवरता व्यं फूए तेम मन वि होए विषयनी बां बाते निवरतावे लोब लो गथी पुरिसान्तमी इ॰ इतिश्री रहनेमियत्र्यध्ययनं सम्मत्त ॥ २२॥ बाबीसमा ऋध्ययननेविषे जैमरहनेमिएं धीर्यपरोाद्धन्तेनमते लए। केसी गीतमके कीघु तेम धीर्य ॥ २२ ॥ पणु अनेरेपण करवूं कह्युं ने तो संशय टाखवें करी धीर्यपण क्रिए ने र्लाणी केशी गीतमें शिष्यना संदाय राखवाने ऋषिकार २३मा जि॰ रागदेषादिक जीत्या ने त्नएगि जिन पा॰ पारस निष त्र्यवशक्रादिकने स्निकन त्र्यध्ययने विषे कहे है. जिएपासीत ना भए। सं । सत्वनी जाए। त्र्यात्मानी जाए।सन्सर्वेपदारथनीजाए।धन्धर्मरूपियातीर्थनाकरए।हार । तव तेहतुं । लोनसर्वे बुस्तु झोकुत्रालीकादिक खान्किले ॥१॥ जिन् तस्स ज्ञान चार अने चारित्रना पारगामी २ ही र अवधि ज्ञान श्रमणतपसी ष्य मन् महायसवत समहायस श्रुनज्ञान एवंज्ञानंकरी सी॰ शिष्यसमूहतेएों करी सब्सहित परिवस्या गा॰ ग्रामानु ग्रामप्रतेरी ब्विचरतायका साब सावधीन नगरी त्र्याव्यो ३ सीस सघ समानुख

श्री २३

ર કુક

फार प्रायुक् जीव सेच्चपाश्रयनेविषे सं र त्यादिक संथा ति॰ तिंदुकनामा छ द्यान सह नस्स ऋठ हवे तेहजकार्त घव धर्म रूपिया तिवतीर्थकरना करणहार जि॰ त्र्यह त तक नेह लोक सर्व लोकादि अपलोक वस्त पन्दीवानी आव विच प्रसिद्ध सर सर्वाक माह निवज्ञान चारित्रना पारगामी गातम ना० इडल्रुति नामें किरीसन्परिवत्यां गान्त्रामानुत्राम विचरताथका से नेपए सान सावधी नगरी त्र्याच्या ७ फार नीव र हितमा अक से बसे सा पारी प्रमुष स्र चएगादि | तनि हा उन्वासी रहिवी पाम्यो ट कनी संधार

નું. રક્ષક

गों गीतम मन महा यसवंत छन बेनेपणा ते सावधी नगरी ने विषे विनवित्यरताधका ऋन्मनवचन काया गुप्तने विषे सुन त्वासमाधि सहित बे बन केसीगीतमना सी॰ शिष्य समूह संब ने शिष्य संजती है ते तपस्वी है तस्स इन्एत्र्यमसंबंधिधर्म महाव्रतादि केन्केहवा नी ता॰ बकायर पपाल ते १० श्राव त्राचारसाधनो वेषप्रमु रूपइन्एयमें के रिस षिकिया सिंहित्यमेन इ॰ एन्स्रमसंबंधि किया सा॰ तेबी आव्रतसंबंधी किया के चा॰ चारमहा वृत रूप जावजंधमें श्रीपारसनाय तीर्थंकरे शिष्य वृतरे । जपदेस्याधमे वः वर्धमानस्वामी ए पन्श्रीपारसनाथ मन्महामुनीश्वरं जिं जीधमें तेवधेमानस्वामीए । श्रीपारसनाध नाजुपदेस्यो धर्म ए० एक काये। पिनवजीन प्रवती बे

ऋ. ३३

नुः २५ ट

किनकिम ए किस्कं कारए। बे १३ अन इवे ते गीतम तनतिहां सान साविनगरीने विषे शिष्य विन जाएीने तच सासाएा १ ध गोव हेगोतम पर विनयल कि करवानेत के के सी मोतम एक वाम खनानी मत की जे श्रीमहावीरदेव श्रीपारसनाथ पहिला द्वाया ते लागी जेवकुलथी श्रीपारसनाथना संतानियाके सीकुमार साधु रहेंबे गोव गीतमने देवीने त्र्याच्या. तिंव तिं दुक वनें न्याव्या च्याव धारवाश्री गीतम सन् श्रम्एा सन्सम्यक् प्रकार त्र्यंगीकारकरे हे पन पराल ध प्रकारना परालशालिनो १ ब्रीहीनो २ कोडवानो उरालना मावनस्पति फा फास्तय पसास गीव गीतम निरु बेसवाने ऋथे पंच पांच हुं मालप्रमुष ते अनेरा साध्जोग्य वर्णो खिप्प सप

श्रमः २३

रह्य श्रु

गो॰ गीतम म॰ महाजसवंत न॰ बिक्त बेगियका सोले हे निसनासी होते सन्एक गमल्या ने घरा। तिहा पान पारवंकी त्र्यन्य कोन कुत् इसी मिन मृगपरक सरवा त्र्यजी एपिरपावकी पासना दरसनी कोनगामिया दे॰ देवताज्योतषी दा॰ त्रवनपति गंधर्व जन्ज सरास्त्रसिकन्तरव्यंतरप्रमुषप्रगटदीसेब श्राव फार्स तिहा एक वा मिलबू पुरुपूबु तुजन २० मन महालायवत ॥२०॥ पञ्चाम त केसी बोलता प्रते गो॰ गौतम इ०एत्र्यागलेकहीसे तेमबोलताहवा तर तिवारपढी केसी ऋगीतम ऋगनु झादीप यक

न्धए

म् २५०

पं पांचमहावत रूप सिषव्या धरम दे जपदे स्थो व बाबि दिमान स्वामी ए एक सरिषा कार्य पराजए। करवानी मि महावतस्त्रपंधमनपदस्या पर पिवज्यों है विस्मय तुं जने नथी नपजनी २६ तन पः बुधेकरी विचारीने धःधर्मनुं बोट्या है २५ पुन्पहिला तीर्थकरना साधु नुन सरस तेएों जन वं बांका अपने पन बेला तीर्थकर ना साधा पुन पहिलातीयेकरना सांक धमें ५० बे प्रकारे की प्रें १६ प॰ प्रज्ञावत <u> प्रावसाञ्चाल</u> स्राचार

ভ ২५१

र्थिकरना साधु फु॰ क्रान्यार दोहि सो पाली कि न्यान्यारमध्य तीर्थिक रना साधु सु॰ न्यति है निरतिचारपऐ सि पे पा लिस के ते लिएी सान्लिसी गीतम प्रज्ञा बुद्धि तुमारी बिन टाल्यो माहरी संन संदेह इन्एपूर्व कहाते त्र्यन्यने रोपए विनामससन गो॰ हेगीतम २० हवे लिंग दारके सीगीतम त्र्य॰ मानोपेत घोलावस्त्रानो घरणाहार जो॰ जे ॥ २७॥ मतें कहें बे सं मानोपेत वस्त्ररहित बस्त्रना घरणहार ते लाणी त्र्यंतरसहित मानोपेत घोला बस्त्रना घरणहार श्रीमहाबीर देवनो साध ते संघातें त्र्यंतरदीसे देव त्र्यचेल धर्म जपदेस्यो रसनाथ म॰ महामुनीए मानोपेतरहित वस्त्ररूप धर्म ए॰ मन्ति पी-चवानी नुपराजएा करवाना सरषा लिं लिंगयती फु बेपकारे मे हे बुद्धिवंत क किम विस्मय तु फर्ने नथी जपजाती ३ के के सीएऐंपका विषञ्चन नत ॥ ३०॥

त्र्यः २३

्यः २५२

विविविशिष्ट ज्ञानजे केवल ज्ञाने करी सम्यक्। जाणीने तीर्यकर्षव ॥ अकार पः जतीनो वेषते ए ज्ती बे ए विप्रतीतने ऋथै लोग नान नाना प्रकारना अपगरए। वस्त्र नुं विश्व मानोपेत प्रमुख विधना **ट्राक**न वस्त्रादिक नुपगरण राषवानी त्र्याज्ञा तीर्थकरे साधूने दीधी लोकनेविषे प्पन्त्रयो लि॰ जतीना वेषधरवानी जनवे ३२ मो॰ मोक्तु स॰ सांध्वोसाची নাভ ज्ञान ग्राने दरसनने चठ चारित्र मारकसलूय साहए निवनिश्चयएनयनेविषे कह्यु ३३ सा व लाली हे गीतम प्रज्ञा बुद्धि नुमारी बिन्टाल्यामारा सदह एपूर्व गो॰ हेगोतम ३६ हवे वेरीजी, प्रानी अव घए।।वेरीनासहस्र ऋ ऋनेरापए। सदह माहरा तंब ने मुजन कहा

AT. 23

છ[.] ૨૫३

न्यान सन्मुषगन बांबे बेधाएंबे तुमनेजीपवा कन के म तुमेजीत्या तुमे हवे केसी मते गीतम त्यापांच पंज्यांच जीतेयके जीत्या दस ते एक त्यात्मा त्याने ध कषाय ५ इंडी ए १० मकारवेरीने जिन्जीपीने सन्सर्वशत्रु जीपवा स्थात्मा एक क के हवे केसी गोत्तममते बोलता हवा ते तिवारपंजी केसी गीतमपूर्वे सन्वेरीए किहा कहा जि॰ पूर्व के हवे के सी मतें बोले बे तेबोलतामति गोन गोतम त्र्यागलं कही सतेम बोलता हवा ए॰ त्र्रपा जीत्या सत्रू सां लिखी तं ते मुक्रने कही. गां हेगीतम त्र्यव्यनरीपए। संव संदेह माह रो माहरसिदंह इन एपूर्व कहा तिपए। श्रनाविस सन्मञ् ससन

र्जः २५६

चिश्वस्तर केसी पासनु पूर्ववेबन्धणा पान्यासे बांध्यावेसन नीव लि॰ वायरानीपरे लघुलूत त्रप्रातिबंश्यकी वि॰ विचक्त ब् 系 ध हर्व कसी पूर्व वे पाव पास ए किहा गाँव गतिम इव एत्र्यागलेक हीसे ते बोलता हवा ४२ रावराग हेपादित्राव || सतामत ने ब्लाया पुत्रादिक ने परस्म हपास त ले सार त्रावी गीतमप्रज्ञाबुदि तुमारी बिर्टाख्यो माहरी ससय ६० ए पूर्व क ह्याते ऋरु ऋनरापए। त्र्याराधवाधी विपन

्छः २५५

धध इबे केसी गीतम्यते तथ्या रूपणी वेलुं पांच मंद्रार पूर्वे अद मध्यहिन्ह् वया ते मध्यनुपनी खन्वेलित ए सया चिन्न गायमा किन्केएों प्रकारें हवे केसी प्रते गीतम कहे हे चन्ड के कसी गीतममत बोलता हवा. गीव गीतम इंच एत्र्यागल कहा स त्र तियारपंग केसी बाल उत्वालता लीक स्वरूपधी लयदी देएाहारी फर्क त्नयकारी फूल तं व ने वे लीने च दूरीने शासननो न्याय बे तेम न्याएं करी विच विचरं बुं मर महामुनी सार त्मली गोर हेगी तम पर महा बुदि तु

77

ग्र २५६

तंब्ते मुजने कब कही है गीतम ४ ए हवे बगे दार केसी पूर्व के ऋ अनेरोपए। सं संदेह माहरो कहरूगीयमा ॥४ए॥ कः के एों मकारें स॰ सरीरमाही विकते त्रामिन लगी तुम मन्मीटा वरसातथीय • जपन्यु पाएरिनामवाहथी गि॰ ब्रह्ने जन्पाएरिमां जन्मपाएरिएं सिंन सिंचबूं बुंजेला सन निरंतरने के॰केसीगीतमभते बोलता हवा सुक तीर्श्वकर रूपी ने मेघ तेथी नुपनो सि द्वांत तेनी धाव धाराएं करी क षाय रूपए शित्राग्नीने स्मार्ग लली विदारे है ते लिए। हांम्यायका सिद्धांतनीन

ग्र.२३

ચ. ૨૫૭

ऋ अनेरोपए। सं संदेह माहरो गो॰ हेगीनम प्रज्ञा बुदि तुमारी बि॰ राख्योमारी संदेह ए पूर्वकह्योते सन पुक्त प्रम्य पर पूर्व दिसनेविषेधाए के डोर्फ के तुम्ह पृष्ठ स्थापन न तुमन न नमार्ग पाचता पर में के वे धातू यका नुन्मागन सन्मुख्जातायका नथी ५५ रासनीएं करी बांधी राज्यों बेड ए | मेनेमारी इष्टन्प्रन्य जन्त्रन्मार्गललोमार्ग पन्त्रगीकारकरे बे तन तम। म॰ मनरूपिनुऋष साह सिक रेडि দ্রুত দ্বন্থ पर सर्व दिसने विषे पाए वे दान व नर्व ने प्रमुखन सम्यक मकाराग्र गृह्य

.

न्न २५८

घन्धर्मनी शिष्या नेपोंकरी कन जातिवंत अश्वनीपरे मन रूपीया उन्ड एत्र्य-सा लली हंगीतम तं ते मुजन कहा गांव ह गानम ५७ ससयइ० त्र्या त्रांता मारगर्ने विषे कि व वरततियकोत् तं लेला मार्गेयी कम नानना तक तिवारपढी तन

२५*७* बु.

तीर्थकरनी पर्खप्यो ए॰एपाषंनीना मार्गियकी प्रधान ६२ साब् लली हेगीतम पब प्रज्ञाबुद्धि तुमारी तं तेमुजने कहा गा हगातम श्रव श्रनरापण सन् सरए ते तएवानु कष्टानिवारवा समधे द्वाए गर श्रय वार्व तनगमन नावगनिवारवान नवमा द्वार के ब बु त्र तराता हाए त पा॰ पाएरिने ऋक छ एम के के सीगी तमपतें बोलता हुया. कसी बोले वे ते बोल ताप्रते गाँव गाँतम इव एमबोल ता हवा ६३ हव गातम के छ जव जरामर प्रह्माप न गायमा

श्र-२३

ञ्चः २६०

गन श्रेय बांबे तेने त्र्यादरवाजीन्य सन सरएात्व्रत बे न न न-थक धर्मरूपी न दीप पव्याएाना पश्मानी परे त्यापार इ. ए पूर्व कहा ते त्र्या त्र्यानरोपए। सदह माहरो ना-नावाविसेष द्वेसमुद्रनी पारपामवा त्रात्रीदसमु द्वार केसीपूर्व ब वि॰ सर्वधापकारें घाए है पाव पारगामी ने जान निक्मांहे त्र्यावेनहीं नावएविनावा सान्सातपारगामीनी क्रए ७१ नाव नावा एकेही कही

7

75,0

न्ध् २६

जीव जीवने युवकहिए नाव नायानी धेमएाहार संवसंसारसपी समुद्र कहारी जं जे समुद्रमाहे तरे हे मन्मो स्तागवेषए हार जनरात सा॰ लाल हगातम पण्यञ्चाबुद्धि तुमारी ऋब ऋनेरोपण संदेह माहरो ब॰ घणा स॰ समस्त लोकने विषे पा॰ जीवने ३५ ॥ हवे गीतमक जुब्लग्यो निरमल कांव सन समस्त लोकने विषे पा॰ जीव सारतस्य करसे न ज जधात नव निवारपंजी के सी बील बे ने बोलना बेने बली गाविशीनम्हम बोलना हवा ७ ९ गीनमक बे नव नियारिक

नः २६२

सन्सर्वजाएी जि॰ जिनस्हिप सूर्व सी॰ ते जिन करसे नुखाय साठ लखी गोठ गीतम पठ मज़ा बुदिनुमारी बिठ राख्यो मारो संदेह एपूर्व कह्यो ते अठ अनेरीपए। संदेह मारो SE ७ ए इवे स्बानक त्र्यात्री बारमु सा॰ सरीरमानसी इबे करी पी माता रकेर व्या-धिरहित सर्वे नुपद्व रहित त्र्य । स्वलाविक बाधा थानकसुं मन मने करी है मुनी ए । इवे गीतन कहे वे ए॰एक नित्य सदाएं स्वानक लो॰ लो कने अप्रे रापरे के प्रविद्यां निहां चढवुं दोहे खु के जेमनधी जब्जरा अने मण्णि बाब्ज्याधि वेदना नधी तब तेम के सी पूर्व के दश बीलता द्वायाः तज्तिबार पढी केसीबोले के ते बोलतामते गोज्गीतम ए आगल कहसे तेम अन् बोलता हवा. पर तन का सब्बनत

अ.२3

ण २६३

ला॰ लाकन त्र्ययन परेंचे ५ विहा चढतुं तं तेथानक सार सास्वत्वास ब ल् च्यारगाते रूपससार त्र्यतनेनाकरणहार साधू साव लसी है गीतम पव्यक्ता बुर्खि तुमारी बिव ॥ ८ ॥ ८ मार्स्स गायम सक् हे ससयातीत सदह रहित सर्वशात्रुना मक मोटा समुद्रना सर्व खूत्रना पारगामी ८५ हर्व पन केसीकुमार अमए। पितवर्जी हे लावथी पुन प्रथम नीर्थिकर अपने पन हेला नीर्थी मन

初.33

२६३

ट १६६

तं ने तिंडुक यनने विषे स्थाव क्रनी एक वा मि सु । सिदांनत्र्यनेसी परु एानी वृ ॥ खबी सन्मी-क्रमार्गनेसेववानों स तीव संतीषाए। पव परिषदा समस्त पञ्जपगारनाकरणाहार लग्न्न केसीगीतम इञ्डमर्क कक् इं. सांल्र्युंहतु तेम क्षं तुज्जमतें कक्षं इं इतिकेसीगीयम श्रयणं संमत्तं ॥ २३ ॥ त्रेवीसमे अध्ययने संसय टाखवी कह्यो तेतो प्रवचनथी संसय टले तेमाटे ८ प्रवचनमातान् २६ स॰ समिति गुप्ति े तेष तेमज पंचपान एमजानेश्रवे सक सामिति तज इ॰ इयी समिति लाबलाषासमितिएषए। समिति त्यादान लासंसणा दाणे

् १६५

का कायगुती त्रात्र सुभवी वली त्राव त्रावमी ए० एत्राव कायग्ताय त्र्यवमा एयान ाजें लगवंतें त्र्याप्याता समाया जन्जे स्मावपवचनमात जन्जननाएं करी वली चन्एकारएाचतुःकारएा मन्मारी तः तेनारमा इयोनात्र्यालबनाः ज्ञानदर्शन चारित्र तेम इयोनो काष्ययः वली इयोनीमार्ग त्र्यपेश्ववर्जवू दर्या संघाए नहीए दे उवधी इयी षेत्रधी को का खयी इयो त्मा व्लावधी इयो तन तेम जन अ वसकय जय तन्त्रधप्रकारनीयव्युक्रनेकिन्बह्रतायका ते सालली

ऋ २४

२**६**६

जवन्तय इ॰ इडियपाचना विषय जयएगक हिए **जान्जा**ल ला । नदींबी लावाने बोले प । मजावंत **ऋज्याप रहित** साध् मिन मजीदाए त्र्यवसरे लास स्वास ख **त्र्यसाव** ध गव्निवीषी वस्तु गर्वष एगनि विषे निदी ववस्त ग्रहवानि विषे प॰ निदांषवस्तु त्नांगववा एषए। ज त्या॰ त्राहार छ॰ वस्त्र प्रधान नुपधान ने विषे एषएग

-स्टब्स

्ष १६७

ए॰ एत्रएमिवेष्णादिक एष्णादिक ३ निविधारयेकविनदीषकर एनस पन्प्रथमबी । एगनेविषे त्मोगववानेविषे त्रीजीएषएगनेविषेपन्त्रयम गर्वेषणा जाएवी १२ एतेएषएगसमति साधुने तथादातारने लेवामाटे संका नकने तेसंकित षनेवर्जे तेए ध संजोधिए। दोष १ त्राप्रमाए। दोष २ त्राप्रमा ६ फ्रम ६ ए ६ दोष सो ६ सो पैकर जे ज॰ जलावंत ज॰ जतीनुद्रम १ नृत्पादन २ एषए।।ए ३ बीलमा ७६ दोषतेमां जनदोष नु॰ नुपधि यहिक नुपधि बीजी नु॰ एनुदकोपिन को एक नुपिषक तेपिनहारु नुपगरण पाटीप्रमुष १ नुपग्रहिक तेपोतानो करी त्र्यानुषु ए यहां वस्त्रादिक २ त्र्य-थवा निधिक तेजे नुपगरए। नुनाम ते कह्यु त्र्यने ऋज्ये पए। नहीं एवं कल्पनीक संजमनी वृद्धिनुं हेतु ते निधिक मकरी ग्रह्मं कत्यनीक चृद्धि त्र्यपि त्र्यनेरापण संजमनी ज्ञानदरसननी दृद्धिने त्र्यरथे साषप्रश्र व्याकरण संवरद्वारपहि ली लावना पांचमी ए गि॰ अहतियको सूकतीयको वली प॰ मजुजिन त्नोगवे तेनी एविय के ढे १३ चन्प्रथमद्षेक्रीजोईने

.

र् १६८

जन्जयणावंतज्ञती आन्धीए अधवामके त्र्यावत्र्याहारवस्त्रादि नुपि सरीर त्र्यव्या जुन्वमीनीति पावसम् नीति बलपो हनो मेल यवा एथी त्र्यनेक त्र्यन पूर्णतन तेनू प्रविवा तिनेपरववेश्य त्र्यन वेगलाथी कोई देवती नथी त्रा॰ त्रावते तोकोन्थी चे॰ पर हो च त्याः त्याः त्यावेषणा बेत्राः त्यने देषेपणा बे १६ कोइ देष नहीं को इपण ऋव देषता नथी त्र्युव त्रानं देवे प्रणावे लूमि परवरी सन्त्रची नीची लूमिनहिसमि दूर्वं नी हे विष्णि ऋषिन स्पि) नाव बेगे रहा वे तिहायी ढंक की ॅनही. वव्यर्। तव्त्रस् प्राणीबीवबीजादिक थई होए तिहा

थ. २६७

ए१०बाखरहित उ॰ जनारादिकने वीसरावे परव्ये१८ एवए पांच समित वानक क्ष वु ऋन ऋनु कर्म प्रथम गुप्ति कहे वे पेडीसत्यमन्युप्ति चोथी ऋसत्यामृषामनगुप्ति साधूने ऋादरवाजोग्य सब्मूषा मन्युति श्रसत्यामृषा एसमारल त्र्या॰ एने क्ष मारु एत्र्यारल मि॰ ए ३ मनने बरतती पकी चनगुप्ति स॰ सत्यापृषा वचनगुप्ति त॰ तिमज च॰ चोथी च॰ च्यारप्रकारनी २२ स॰ एनेकोई ऋ असत्या मृषा क्त गार एमकह आरल व॰ वचन प्रव रततिथिका तु॰ पुणी निवरतावी ज्ञाननावन जनी २३ ए समारल श्राव

-77T-AU

२६ए

ع. عود

तक तिमज तुक साए विद्वा ३ गुप्तिकहर्न ग० नुलार हा तिहा नीवलीजु॰ ब्यापारनेविषेकायगुप्तिम् सि॰ पोते मारवा मुर्गे जपार्न सि॰ परपाहे सज्ञा करवी मुर्गे जपनार्व त्यापार्तमारवा मुर्गे ए॰ ए पांच समित चर्चारित्रना वाली पर प्रवतीववान निच निवत नि॰ निवरतावे जतनावंत जनी २५ वि॰ यूकाए पंनित साधु सन्तरीप्र सन्सर्व संसारथी चोवीसमें त्राव्यवचनमानाक ही ते ब्रह्मचारी समीपे मि खेतेमाटे जयघीष ब्रह्मचारी ने । मा॰ ब्राह्मणना कुलने विषे छपना श्रा॰ इन् ब्राह्मण

न्ध्र-२५

२७व

. २**७**१

ज॰ मोटा बत जग्नने विषे जन जयघोष एवे नांमे साफ जा॰ श्रातिहे जग करे वे इंडियना स जन्तम मः मन्दि मारगनी गा॰ चालए। हार मोटा मुनिन्धर गा॰ ग्रामानु ग्रामप्रत सिंब महाम्ए। बाहिर २ वाज्वाणारसीनगरीने बाहिर जुब्बु द्यानने विषे तिहा वा॰ वासरहिव पामीच ३ त्र्य॰ इब तेएं कार्ल पुर नगर तर तनिविषे ब्राह्मए। विकविजय धाष एवं नाम तहा तव तिहा विजय घोषना जञ्जन विषे जयघोष ऋहत तह जज्ञनीविषे वि॰ विजय योषना नुवितहां त्र्यावयो ने प सवलिक्ताने ऋरथे त्र्यावयो तेने

च. २७२

क रए। हारघोष प॰ निषेधे बे न॰ हा॰ निश्चेन बन हि दे छं ते॰ तुकन षशास्त्रना ऋं ब ऋगविष्टना शास्त्र जे पर्मशास्त्रना तेनी सुरु संसारसमुद्धी नुधरवा प्रापरजीवने सुक एत्र्यनमनवंडित के रससंहित ट सोन ते जयधीष नामा धतीए । एएमि जावजागर्न करएाहारे त्र्यने महा मुनीनेनव ने [मुनीक्रोधनेवसेपातोन्हीं नवसंतोष | जुनमोन्द्राना गर्वष्णाहार हवे मुनि बोल्या | नव त्र्यनने त्र्यथैनही पाव पाणी ने व तन्ते विजय घोष विक संसारधी मूकाववाने ऋरधें ३० ए ऋ। गले कहसे तेम वचन बोलताहवा नक नधी जा वा

. ૧૩૩

जं जज्ञनो जे प्रधान नवनन्त्रनमां हेप्रधान पूरणे जं वे वती धवधर्मनुं वाववित्रधान १९ वि॰ जाएाता नथी सब सत्तारसमुद्रधीनिधरवा पन्परजीवने ऋब ऋपएगा ऋति। तेवत अ॰ जोत् जाएं छे पव जनर स॰ परिषदा सहित विभ वैदमाह चवपूरी मुब्पधानते मुफनेकहं बृब्क होज-हानाजे प्रधान ते मुफने नव नस्त्रना सब समय क्रए ससार रूपीया स। पब परजीवन त्राने त्राव त्रापणात्रात्माने त्राये एव एपूर्व कह्या व ते सब सदह सुद्धी सव सर्व ब ब त वेद त्रमारा केवा ब ऋ ऋगि होत्र मु॰ मुषप्रधान। एवा वेदप्रमाएा बाल ज॰ जन्त तसजमपूर

रु १७४

घमनापरुपकमाहे कान्कासवगोत्री श्रीमहावीर प्रधान च॰ चंडमा नुवर्भपान विनय करने करी हा बहर एहि। रखता तिष्ठे ब करएाहार श्राह्मए। कह्या स॰ सदाए कु॰ केवल ज्ञानी कहा जैने ब्राह्मण तैने व॰ जहा प्रवजा सेतीयकी त्र्यावीन पद्ययता नसाय\$

ऋ २५

ग २**९**५

ज॰ जेमसमास्यु फ॰ त्र्यवा सुवरोनु ज॰ जेममोटा ऋषे ब तमजे ब्राह्मरान त्र तपसा दुब्स तपकरी कममल टाल्या व राज्रागदीष इहला क तं तेने त्र्यमेक क्लं ब्राह्मए। सुव सुवृत्ति पाम्यवि स्वरूपएक निवस्व होए या वपृथवयादिक जावन जावज हुए। नाह तिव्यनवन्त कायाएकर जानाहसङ ातावद्र को॰क्रीयनाजपलस्त्रप्रयोगानज॰जोत्र्ययवाहास *सावसालयका* निरसिन मनुष्य अन अनितसुवेर्णादि अन थोहं अथवा जो घर्णू ानव नाल

ग्र-२५

जुः २७६

देवता मा॰ मनुष्य तियेच ज॰ जीम पद्मकमस पाएरी जान नपन वा॰ पाएएकरा त्र्यव घररहित त्र्यए।गार त्र्य व सुवएर्गिदिक अव्यरहि त्र्यव त्र्याहारादिकने युव कि इनु कारजकी धार्विना त्र्याहार गिन्यहरूबस्यात तथा यहरूबनी रहित तेने अम के हा **प्रमुष**नासंबंध नाबधनके सम्सवेवेद जन्यें जागते पाच्यापकर्मना हेतु बेनन्न इतए तेजागादिक तान्त्राण लूं नात्र्या किन्जेपसुवधा<u>दिक इत</u>े नतं तायति इस्सी स

. ووج

बाह्मए न इत्ए बन्बस नवनहाइ तापस जम बलच ब्राह्मएाह्नए ना॰ झानेकरी मुनि नव नपकरी होए तापस कन्ब्राह्मएाना इतावस तवसा वपार करव सक ल्रत्यकम कर व पालवकरा ए॰ ऋदिसादिक मगटकरती सवज्ञ लगवत भवक स्म एवएपूर्वकह्य तए। मकार गुवन्नाहसागुएगदिक कु जलवाताद जनमा समान्ता

२७८

वन्यरजीवने त्र्यापणा त्र्यातमा ३५ विव विजयधाषनामा ब्राह्मण सन्साचम समृद निवारपढी ज॰ जयघोषमहामुएनि ३६ तुब्सतीकाए। वि॰ विजयधोषनामी ६० एत्र्यागले कहिसे तेम कहे चेकब्बहाय जी ० ज्योतिष शास्त्रना ऋ ब्यावस्थाना तु । तु मह घपना पारगामा छ। तु ० तन्ते लए। त्यनुयह करेत्र्यन्त्र्यान्त्र लिन्हे लिन्ह्रू तृ लित्ह्रूमाई नत्तम यासमुद्रमान्य १० घारससारसागर ॥ ५०॥

श्री २५

33 (r)

ऋलागानावास गोव गोल मब्माटीना गु॰ नीली अने सहको ब नाष्या विविविजयपीय जवजयपीय जतीने समीपे ऋवजतीने प सारमुका गांध ध३ त्र्याहेसादिक धर्मसात्मली त्र्यं निर्धान धर्ध जन्जयधाष त्र्यन व जयधा-साचा त्र्यन्प्रधान इन सिंग्मिन्त पाम्या इंग्इतिश्रीसुधमा स्वामीज**बू** पते क**हं बहु जबू जम म**श्रीपहा**वा**रदवसमा घासा

্ হচ

सालप्युं हतु तेमक्क तुजपते कक्क बुँ ६० इतिश्रीजयघोष विजयघोषनामा ऋध्ययन समत्त ॥ २५॥ पचीसमे ऋध्ययन | + रसविधसमाचा साधुलाव बाह्मएानागुएावएव्या बे तेतोदसविधसाधूनी सामाचारी एत्नाव साधुपएक होए तेमारे २६मेऋध्ययने १० + सन्सर्वे प्रविसेषे मुकावए। हारी निन्त संबंधरकावमुरकण सब्ससारसमुद १ हवे १० नो नांमकहे है पनपहेली सामानारी त्यान त्यावासकी एवूनाम बिब बीजा श्रापूबएा एवं नामयन्वलीत्रीजी चन्चिथीपिनपूबएाएवं नाम २ पनपाचमी बदएवं नाम ६० इ हाकार वली बर बही सन्सा-प्चमाबदणानाम ॥ तमी मिथ्याकार तनतहततुं करवूं वलीत्र्याग्मी ३ अन् नुगैनलोधावो तेनवमी द्रव्समी नुन्नप्समीपेसंपदाएकए सार सामाचारि परकही १० दसमकारना साफ गन्जाया नुववाना त्र्यवसरनिविष त्र्याव त्र्यवश्यएमक ही त्र्यवस्यक

ऋ २६

च २८१ ग्रन्थानकनेविषे आवे तिवारे क्रकाहारजने बंधने ज्याच्यो बे ज्यान गुरुने पूर्व तेपूरणा कहिए सब पोताना कारजकरवाने विषे हे पूज्य त्रम कर करते त्रापूब एा बन्गुरवादिकसाधर्मिक दब्ब्याहारादिक इव्यजाते इब्पूजनीक इबात्र्याये ते करो यववा माराकारज नीनिंदानेविषे त० युरुनावचन तहतक री प॰ युरुना वचन अ० ऋति वदमयत मिन मिष्ट्यानिफल कर मिथ्याइकरं देवेकरी यसिनिन अति वारादिवोषक्रपणीना तहकारापाम स्सुए त्र्यव गुरुवादिक समीयं रहिवो ज्वस्त्रार्थि स्वपसंपदापामवा त्नएपिए व एएपिपरे इव बेपानसहित थावी गुरुनावचन सालली दसमी सामाचारीनो । वर्णवेबे पुरु दिवसनापहिलापुहरना चर चोथा लागनेविधे । स्यानिको बने ॥ एसलेबेध रीनेविषे विस्तार सर्वलवितव्यदिनरात्रिसंबंधिनो पृद्धिम्म चनु तनाग गरल ने निषे पन पितले / बांदीने बली तनतिबार पती गुरूने ए पुन दिवसना पहिला पुहरूना पंज बेहा पत्री वंदितायतने गुरु ॥ ए॥ पुहिद्या पजिले नुम मतीथको

, - /

र्ने १८१ वयावचाननत्ता सन्सर्व हुखनी मुकार्येपाहीर एनी न्या ज्ञा मार्ग हर्वे ए ढवाना करते यक १०॥ समुच्यदिन ४ लागानीत्र 40 निवारपंजी मधानकारी करतव्यन कुन कर ऋषया नृतरक हता तनुन तर्य एक ख बाज पारसीए ध्यान ध्याइ च्यक्र एध

श्च-२६

च. २ ए ३ तथापाबली यो॰ पोसमास ज्यारपग पोरसी चि॰ चैत्रमासे अने त्यासोजमासे नि॰ त्रए पग होए पोरसी चली ५० बैत्रगुलश्रावणवदिपमवायी पोसक्तदपूनमुक्तपीवध हा॰ गहा। मान गास त्रा॰ त्राषाढना त्रयारा पषवामान ना॰ जाएावा ३॰ ऋहरिएत्रिमा एकऋहरिएत्रिनु छ। एतलबमास कह्य जे॰ जेंग्नासत्र्याषाढश्रावए। एत्रणमार ालेव साध कर रु रात्रीनापए ज्यार त्माग विव विच-क्रपा

त्र्यः २६

२८४ **७**.

| | | 4 1 | | 7.4 | | | | | <u> </u> | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--|-----------------|--------------|------------------|-------------|------------|--------------|----------|------|--------------|------------|------|-------|--|------------|-----------|-----|-------------|------|-----|------|-------|------|------|------|-------|
| हवेकोए। गासेकेत जीघरी दिनमान तेयंत्रमध्येके छे | | | | | | | | | | | | | दिनमानपोरसीपगमान यंत्र ३ दिनमने जब फा फेरो वधे तथा घटेएपग छ। या लगिए ते ए २ यंत्र. | | | | | | | | | | | | |
| पटीमान | श्रीष ढ | श्राव एा | लाड बा | | | मार्ग | <u> </u> | I | | 1 | | 1 | पगमानर्जन | ij | 1 | लाः | श्राः | काः | माग | पी | माह | फा | # | 3. | ज्ये. |
| विदसातम | स्ताहा 3 था। | 3 411 | सा ३३॥ | 3811 | २०॥ | २७॥ | २५॥ | २४॥ | २६॥ | २ण। | 3011 | 3311 | विदसातम | पग २६३ | पग | २१५ | राष् | 319 | ३।ध | 310 | 310 | 3188 | 313 | 313 | २।७ |
| विदन्रमाः | રૂપ | ३५ | 33 | 39 | २० | २७ | २५ | २५ | २ 9 | २ए। | 39 | 33 | विदन्र्यमाः | पग २।२ | पग ३।२ | २१६ | २।१० | 312 | 318 | 3190 | 3180 | ३१६ | 312 | 3180 | २।६ |
| सुद्सा तम | साढ ३५॥ | રૂઘાા | 3 211 | 3011 | रमा | २६॥ | રુધા | २५॥ | २७॥ | २७॥ | 3811 | | श्रुदसातः | | पुरा | | २।११ | 313 | 319 | ર્ગણ | अंदे | 314 | 319 | राष | राप |
| सुदपूनम | ३६ | ३ध | 32 | 30 | २ष | २६ | २ध | રદ્ય | २ए | 30 | 32 | ३४ | शुदपूनम | पुर | રાઘ | श्र | 3 | ३।ध | ३।८ | 310 | ३।८ | 318 | 3 | २।८ | २।ध |
| रात्रिघटी | ऋाः | श्राः | लाः | श्रासु | कार्त | मा | पी | माघ् | फा | चै | वेः | ज्ये | पगमानयं | ऋाः | স্মাৰ | ભा | ऋाः | का | माग | पीष | माह | फा | चै | वे | ज्ये |
| दिसातः | २५॥ | २घ॥ | २६ | ર્⊏ા | ३०॥ | ३२॥ | ३ध॥ | ३५॥ | ३३॥ | ३१॥ | રણા | २९॥ | विदसातः | पग २।८ | २।७ | 318 | રાપ્ | ર્ગણ | धा३ | ધાક | કાળ | धा३ | 319 | 313 | 319 |
| विदन्यमाः | २५ | २५ | २७ | २० | 39 | 3 3 | ३५ | રૂપ્ | ३३ | 39 | व् | २७ | विदन्ध्रमा | शह | शष्ट | ३।२ | 31६ | 3160 | કાક | धाट | हाउं | ઇાર | ३११० | ३१६ | 403 |
| सुदसात्तम् | રકા | रप्॥ | રુાા | રણા | ३१॥ | 33 11 | રૂપા | ३४॥ | રૂ ગા | ३०॥ | ž, | રદ્દા | सुदसात | २।३ | રાણ | ३।२ | ३१९ | 3190 | धाप | કાળ | धात्र | धार | 3180 | शर | २।११ |
| सुद्पूनम | રધ | ર દ્ | १८ | 32 | ३ २ | ३ध | રૂધા | રૂધ | 32 | 3 0 | २८ | રદ્ય | सुद्रपूनम | २१६ | २।१० | इाध | ३।ए | 3199 | MIE | ध।१० | शह | ध। | 310 | રાધ | २।१० |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | لحجم | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

श्र-२६

२८ ध

ক্ত ২০৸

विषे विस्तारीने कहे ोनेत्नच्वस्त्रादिक गुरूनें बांदीने सङ्गाय करे <u> ५०५ वधीमूकावे सञ्चाय</u>

ज. २८६

वं वांदीने नवतिवारपवी गुरुनें त्र्या न्यापानिवर्ता वीनें का सञ्चायनाकाल पन्पनेपिन लेहे गुनाने लाजनने एषधव चन जातिवाचक जाएावा यो मुन्यहिक मोहपतिन परि बहीने बन्वस्त्रनेपिन लेहे २३ हर्ववस्त्रपिन ह्वानावप बीजी पिर लहणा जीव चढी जाएो तो प॰ वस्त्रने घो हूं पंषेरे ुंब्बली पंषरेतां न जनस्यों तो प॰ बेस्त्रने पूजेजे ६ एत्रए। धोके ६ पिर लेहणा जाएाबी व पसस्त वली वर्गि वहणा प्रसस्त अन्याह्स एवस्त्र अए।पार्व हा नराषे अन् के चूंनी यूं ती बुंधर ।। तीएत्रमकारे नहींपूर विप्यूरिमा नव रवीमा ॥ वैतेमसल त्र्याचालय ॥

JC. DE.

ಲ ೩೯೨

या विपरीत तथा नुतावली २ पिन चो अवा मरद्या ते समदा पिन लेहणा वरनवे वाली मो॰ नं चानींचा लेहणायी नुष्रीन करे ऋ ऋषीक पण्नकरे ऋगविपरीतपर्ण तक तिमज वाबी विपरीत करे पर शावपदलांगये इ

ছ: ২৮*৮* अब अप्यशस्त तजवाने त्र्यावपद जंत्रथी जाएवा पन्पिन लेहए। कुन करतीयको पिन लेहए। के बे पिन मांहीमांहे कथावार्तान करे तलावानानक स्वात देन्दीएक सबे वेन ऋथवा पंचषाएं ने वान ऋमिरा। सं न पोते बांचएरी सीए २० प्रभादकरताथका बन्एबकायानीपए विनविराधक हरि पामलहणा पमन्ता वन्वनस्पति काय तन्त्रसपि बहिए। स्रानुत्ता तव त्रीजीपारसीने विष लाक्तातपाएरियवेष एसमुन्ने सामान्य मारगप्रजाग इककाठकारण नुपनंबत स्थाहारने जवहरे व कारण

त्र्यः २६

र्यः २८७

(24)

पान त्र्यानुषानिर्वाहवाने त्र्यभेषुं पा वेदनी माटे छ । वती कारणावली घ० पर्म ध्याननी विचारणाने त्र्यभी त्र्याहार करे. ३३ वश्पण्य साचता **ऋ**न्भाज्ञाना त्र्या॰ ततका लक् सूलादिक मरणातक राग नुपनियक नुव्वाधप्रमुखनी नुपसर्गन्य तहाएत्रमाज्ञानी मानएहार ३७ पा॰ प्राणी जीवने जत्पत्ति घणीजाणीत् । तपकरवाने हे तुएसा स्त्रानुषु स्त्राच्यानी स्वयसर जाणीनेसरीर मूकवाने स्त्रीय ए बकारण च उष्टीकरी पिनल हे सर्व लाम पात्रादिक जुपगरण्ने गृहीन विवन्त्र्याहा रने विहारने विचरे मुरुसाध स्नाहार की धा पत्नी ३६ चन्चे यी पोरसीने विषे ानिव स्नातगा सूकीने लां लाजनने सन सङ्गायनं तन तिवारपनी

ક છો o - ગ

सुरु सर्वजीवादिक लाव पदार यने विरु प्रकासनीकरण हार एवा कार सञ्चायनाकालने सि॰ थानक पार प्रमुख क्ल्मादिकने पिति है ासश्चत्पामसहए ॥ ३ प कार कानुस्सम्म तर सामायक त्र्यावसकना स्त्रपार त्राप्यापबी कार कानुस्सम्म करे इंग्रामिए। लंते तुझहित्रपुरू नमीत्रपरिहं वली च॰ चारित्रनं विधे साधुने ५ महाव्रतने २५ लावना देसवृत्तिने ज्ञानना १६।१२ वृत्ते ५५ सर्ले-त्ताम तहेवया। ध्रा । पना ५ पांच एवं श्रावकने ए ए तिमजणा पारीने का का जसमाजि विकालिकनी साथ नमों कारेएा पारिता जिनसंधिवने लोगस्स चौवि संज्ञो एबीजो त्र्यावश्यक पिन लेहए। की धी त्रूमी प-िम लेहीने सर्व संबंधी गमएगागमए पिमक में एव ६ श्रायस्यक धुरथकी तो विषक तलों के कहे वे श्रने स्त्रपाव ते श्रावस्यक स्त्रयी जाएा-

ग्रा २६

नुः २०१

वी. भरे त्र्यावस्थक सामायकने बेने तकतिवार पढी वंक गुरुक त्रीजी त्र्यावसक ते गुरुने वं कवांदीने वांदए।। देईने तेवूं सूत्र ॥ इज्ञामि खमा समणो ऋहोकाय २ त्रावसियाए २ त्राहो ध पिकमामि ५ ए लिएानां १२ त्रावर्त २५ लोद दोनयंजहा जायं कियकम्मं बारसायंचन सिरं तिसुद्ध २ इप्पवेसं २ एगनिखमएां ए २५ त्रीज्ं त्र्यावश्यक दि॰ पर्व दि चेयु ॥ ३॥ वससंबंधियुरु त्र्यागर्व त्रातिचारने त्र्यान मगट त्र्यालीए जन ज्ञान दरसन चारित्रना त्र्यनुक्रमे ते साधूनी सम्बद्धा सामकाने त्र्यागमे निवारेथी मांनी पमान्या सुधी मिनामि इक्त ने देईने निनिसल्याएी वादिकने वमावे एतले चोधुं त्र्यावस्यक व त्र्यहर्व पांचनुं त्र्यावश्यककेले वदिनाए। सकतनी तनुगर वांदणानु सूत्र नमोन्प्ररिइंताएं २ करेमि त्नंते ३ घ्चामि ध कानुसरगना ध स्त्रल्एीने तनतिवारपंबी करे। पा॰ पारीने एतसे पाचम त्र्यावस क हवे बनी त्र्यावसक तब तिवारपबी गुरुनेवांदणा देईने इहां पच्चषाण करे साधु चीविहार की धा हो ए ते फि रि संलारे अपने आवकने जैने अहा होएतेवां पचषाएा करे दिवस चरिमपंच

For Private and Personal Use Only

नः २०५२

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

प॰ पहिली पारसीए सञ्चाय कर बि॰ बीजी परिसीए च्यानच्याएतः त्रीजी पोरसीए निदानेमोकली मुके रात्रीनी विधि कहे बे पो॰ पोरसी च॰ नोधी का॰ कालन वली अ॰ अए। जगामता अ। असजतान पान पान सी परिसान विद्रान पर निवरतावीनकार संश्रीयनाका लने कार तुरुवली दिवस संकाय करवाव त्राः त्रावेबने कानुस्सग्गसः सर्वेडवना मूकावए। हार

त्र्य-३६

न १७३

रा॰ रात्रिसंबंधिवली ऋतिचारने चिं चिंतवे ऋ ऋनुक्रमे नार्ज्ञानना १४ ने विषे द्र ५ सम्बितना तेने च॰ चारित्रनेविषे न॰ य॰ वानी तपनेविषे १२ एताला त्र्यतिचार त्र्याचरी का बका सरमा पा व पारीने लोगस्स एत्रीज् त्रावस्यक वधीवलीत्र्यतिचारने त्र्याः त्र्याताए जव ज्ञानादिकनी अबिस्यक तर्वातेवारपर्वायुक्तन कि कानुस्सम्गातवार कर 4 ह0 ए॰एएगिपरेत बते कां जसगने विषे विशेषे किस्या तपने हा ऋगीकार करा पार्वाच कानुसगजन तव तिवार पढी रासन पारिय कानु स्सम्गा तव

ऋ २६

न् २०७

के कर सिद्धनी सब सस्तव नमियुए कहे एतर्न सचारन ए बर्गा ऋतस्यक रहत्र त्र्यावसक्या जिन्जेसामाचारीने त्र्यान्त्राचरीने बन्ध घणाजीव तिन्तरधा जाएावा इन्द्रित सामाचारीनामें त्र्यध्ययन २६ मु संपूर्ण येयु इ० इम हा ॥२६ ॥ बवासमा ऋघ्ययननावष सामायार त्र्याराधे ते लिए। २९ मात्र्यध्ययनने चार्य साधु हव मु । सर्वशास्त्रनेविषे विचक्तणव्यात्रवे न्या । न्याचार्यनागणनेविषे नि सजमजाग ब्यापारनावष **रुश्रातक्रम**

For Private and Personal Use Only

रह्म इ

न ते श्राविका मुझने देसे नहि कशिष्य निर्मारते आवक मुफर्न नर जाएँ नहि जलपे नहि पुरुषिका एबाल तुमन एकरिज किहा नुची चढावे मुषने विषे वाव ते कुशिष्यने शास्त्र जा॰ नुपनी पाष तिवार ज॰ जमहस षेनवानी पर सन्त्रम खंद पाम्यो

ಳ 3 ಅ ೯

लिएरिक् शिष्यने मुफने श्रेयजान्जेहमारा शिष्य है तान तेहवा गांदियागर्दल गर्गाचार्य इढ त्र्याकारे तब १२ त्मेद्रेतप १६ मिन त्र्यंगीकार करे ने मन्सकोमल विनित त्र्यहंकाररहिन सी॰ चारित्रनागुणसहित्र ने तेलणी सीसलूतात्मा बतागगी चायेविचरेंगे ६० इमश्रीस्थमीस्वामीक हेर्ने हे जबू जैम में सालप्यु हतु तम वुजमते क्र के कु बु ६० इति श्रीख्यु किय एवं नाम सतावीसमुन्मध्ययन संपूर्णः २७ कर्मनु ष्पाववुं तथा बीजो ऋरधसकलकर्मयी यूकाववो तेमो इत्काहिये गुन्ततेहुनो मार्ग जे ज्ञानादिक तेषुकिसी सुन्सालवे ते तीर्थकर ला॰ ला त्रविया तथ्य सिद्धगती गर्गतीने सिद्धि गमन रूप ते कहता पर्व षीके वे वाती सिद्ध गतिके वी वे चव्यारकारपोकरी नाव ज्ञानदरसन ए २ वे जब तथ्यपा बेजे सिद्ध गतीना मोन्सना नाव्ययान व्यपदारय नुंजाएप एउ नाणुदसण्यस्कप्

त्रा. २७

न २०० द् यथातथ्य पदारथनु यथातथ्य सदहवू तदरसन समिकत २ + जिएनिवासमें ति बारलेंद्र तर्प पाउट्या के मबाद ते । एवए ४ मे मन्दि मारग इन चारित्रवीर तीनुत्रमाचरपू तेचारित्र+ तब तेमज तवा नहा नाव ज्ञान १दरसन २ चव चारित्र ३ तप ध तव तेम जि॰ तीर्थकर यह प्रधान ज्ञानदरसनने धर्पीए परूप्यो तवते ध बोलमाहि पं पापभकारे ज्ञान प मार्गने ऋ पाम्या जी॰ जीवजाए पह्नचे सु॰ सुगतिमते ३ प्रथम तच याए सागइयरस तिनेवर्य त्राहवाताए त्राइरेगं नरलविंगनाएरी जीवाएर सववंति १ मति त्रावधिज्ञान त्राने समकित ए धनी विति जुत्कृष्टी ज्ञान अत्र कह्म पए। त्याक मितज्ञान २ श्लोकना बंघमारे अथवा अतज्ञान जपगारीमारे प्रथम अतज्ञान पए। पहि-नु त्र्यापि ज्ञान त्रीनुं मब मनपर्यवज्ञान चीर्षु घ केवल ज्ञान पाचमु ५ श्रुतज्ञान जाएापएर यन वली बद्धव्यनु व गुण्नु जाएापएर बद्ध्यनु गुण्नु सर्वपदायनु नाव केवल हानीए कस पर्यवनु वसी सन्ए

3.3℃

300 D.

हुवं ५ व्ययुए। पर्यवतं केने युव च सनादिक बगुए। ना त्र्यात्र्ययं बते त्र्याधार लाजन तद्व द्वयं ते धमास्तिकाया विषे त्र्याव त्र्याश्चिबे गमनादिक ते युव गुएकहिएते बगुएनी जान तक तक्तए त्र्यने त्रीजी बीस जीपयेवते ती नवापयेव ए २ पयंब नुलर्ने व द्यात्र्यने गुण्ने विषे न्लयशब्दना २ त्र्यर्थ कया त्र्यव त्रात्रा हो न्त्रधर्मास्तिकाय २ त्र्याकाशास्तिकाय ३ त्र्यस्ति ते प्रदेस त्र्यने कायते त्र्यसंष्यातादिनो समूह का॰ कालपु द्भुतास्तिकाय जन्जीवास्तिकाय एमघे । त्र्यस्तिकाय त्र्यनै त्र्यस्तिकास जि॰ तीर्यकरना मधान दरसनने तंत्र्यास्तिकाल नहि ए ब दव्यरूप लोग लोक २० ६म पर पर्रायो धन्धमित्रायत्र्यधमोत्तिकाय त्र्यागासात्तिकाय दन त्र्यद्वम्मा त्र्यागा स धर्मास्ति काय द्व्यथकी एक त्र्यधर्मास्ति कायद्व्ययी एक २ त्र्याकासास्तिकायद्व्यथीएक का॰ डब्ययी ऋन ता का स त्र्य त्रानता द्वय कासी पुरुष काता प्राप्त कत्वी।। ए ॥ एथवी र समय षेत्रमधी

双. 2元

.

ह इ०१

कालनो एक समय त्र्यनंत प्रदेस पर्यव नपरे प्रवरते हे ने माटे इच्याश्रित अनंता इच्य कहिएं लग्न सन नृ मध्ये गृह गति गमन रूप अन्तरा हो धन काल जीव एक उच्य कहा। ते जानिवाचक माटे पु॰ पुद्गल त्र्यनंता उच्यथी त्रविधमितिकाय त्रप्रमितिकायनो थिरलन्कण त्नाव लाजन त्राधार बे सवस्व सर्वेदयनुतेनव त्र्याकास तेनुनग्रह नवत्र्यवग्रह व्यंभी जीव त्र्यनता हवे ब उच्यना गुण कई है सब सन्दाण ते सीतो ब्लादिकने काबका सनु जीवनु प्रवरतावे जेसमयादिक ने वरतना त॰ वन्तए। व वन्तए। परक नाज्मति झानादिक त्र्याव ते जाए।पए। करीच सु | करी सुबसु वर्वदर्व करी वसी दुष वद्वे करी जए।।ए जीव व घोरे जीवनु त्रादिदरसने। स्हणय इहणय नाः पांच ज्ञान ३ त्र्यज्ञान ८ बीसे जे जाए च वती चक्क दरसनादिकं च॰ चारित्र त्र्यचारित्र रित्रीनोध चरिताचरिति धशाषपणवणाण चारित्राचारित्र ३नो चारित्रिनो त्राचा- तदो पएन मितनप २ तर तिमजिविर बालवीर्य १ पंतिनवीर्य २ बालपंतिनवीर्य ३ त्र्यविरिया ध स॰ सक्एा जाएावी हव पुद्रसनु सक्त ए कह ब न सागार १ अएगागार २ ए २ नपजोग वली एक ए ब हारे २ द बील सर्वेजीवनो वीरियंनवर्नगांय ।

ऋ २ ए

उ ३०२ सन् शुलाशुलशब्दश्रंघकार नुन्नुचातरत्नादिकना पन्यलाकाति चंदादिकनी बाव बायासीतली त्र्याव त्र्यातापस्योदिकनो नसनतायमहरू एकधुनै पहाबाया तव इवा ॥ रस ३ गंघ ट फरस १ 3 पुरुषु ज खास्तिकायनी वली अ ए २ 3 मबोलक्र प लक्क ए जाए वी ए ब दब्यना गुए। सक्त्र कहा १२ हवे बडव्यना गुए। पर्यव कहे वे रुपी श्रारूपी पर्यव एकवामिसवो ने एकत्वकहिए चन्वसी पुन एकवामस्यापनी । सन्एव २ जावन् त्र्यसंख्य त्र्यनंत पर्यव ३ वाटला प्रमुख सगए ७ एमजबसी सरवासगणमवय ॥ कना एक वा मिलवा ते संजीग सादि सपर्यवसिया वि॰ वली ते पन रहपी त्र्यरूपी पर्यवनु वासी लन लन्हण आए। वू एतल ब दव्य १ गुए। २ वरणादिक नुजूदू थावू ने वित्नागविजीगः जी॰ स्प्रसंघ्यात मदेसी स्प्ररूपी सदा सनुपजोगीनेजीव ऋ नुपजोगरहिन ते ऋजोग बं जीवना मदेसनेविषे शुलासुल पुद्रतनु बंधवू बंधाय व वती त्र्याच्याविरतिने त्र्यप्चष्वेकरी विषयकषायनेरसेजेकर्म घमनासा रुपवे करी नवा जुपराजे नहि तेसंबर नि नवा जपराजवा ते त्र्यात्रव त॰ तिम सवरानि चरामा स्का

ग्रा र

जीवना मदेसथी सकल कर्मना पुदगलनु मेटबूं ते निर्जरा मी॰ जीवना मदेसथी सकलकर्मनुं षपावनुं ते मोद्ध स्तोइ इनिज्यनिन यन्न जासेतरुवंतु धारंति । तस्सजयज्ञचपवत्तएां । ववहार नयो मुरोय हो ॥१॥ त्र्यसत्कृतेयंगाया ॥११॥ ६०॥ इवेएग्यान १दरसन २ चारित्र ३ तप ४ एइने विषे निश्चय १ व्यवहारादिक २५ बोलनो स्वरूप चिंतवे बे । सूत्रनयें करी ते एम चिंतविए ॥ बे ॥ ग्यान १ दरसन १ चारित्र ३ तपा ध तथा जीवादिक पदारथ जे चिंतवे तेपदारथनेविषे २५ बोसविचारिए ॥ ते२५ बोस - निश्वय १ व्यवहा२ तथा द्वय त्नाव ३ तथा त्र्यविसेष १ विशेष २ तथानामविशेष १ थापना विशेष २ ज्व्यविशेष २ त्नाव विशेष ४ तथा द्व्यथी १ षेत्रथी २ की स्थी ३ लावधी ध ॥ तथाप्रतक्त प्रमाण १ त्र्यनुमानप्रमाण २ नुपमाप्रमाण ३ त्र्यागमप्रमाण ध तथा नेगमनय १ संग्रहनय २ व्यवहारनय ३ सजूसूत्रनय ध तथा नेगमनय १ संबहनय २ व्यवहारनय ३ सजूसूत्रनय ध शब्दनय ५ समलि रु ढनय ६ एवंत्रूतनय ७ ए २५ बोव प्रमुष वली बीजा ए सूत्रनी त्र्यपे काएं करीए ॥ वे ॥ इवे निश्चय त्र्यने व्यवहार नयनो सूं लक्क्णा जेपदारथ रुचि कहिए । तथा तेहने विषे पदारथनो जे ऋल्यंतरशुएा ऋल्यंतर रूप तेएोकरी । ते निश्चयनयकहिए ॥यथा जीवे चेतन्यत्वं । ऋने तेगुए। रूप बेते तदाश्वित बाह्य जे प्रवर्तन ते शुद्रुलाव व्यवहार नय कहिएं । यथा एकेंद्रियादि दो सरी रादिवर्दनं । त्र्यने त्र्यत्यं तर गुए। रूपविना जे बाह्यवर्तन ते त्र्यशाद् व्यवहार नय । यथामिथ्यादृष्टिः । त्र्यात्मव्याने निन्हवादिषु सस्तिविना चारित्र इयोदि सामति मवर्तन तेन त्र्यशाद चारित्र इव्यव्यव । ३०३ हार एम सर्व पदारथने विषे जाए वो ॥ वे॥ निश्चय ज्ञान ते समिकत सहित । त्र्यंतरंगज्ञीवना प्रदेसने विषे । यथातथ्यजीबादिक पदिनु

धु॰ इ

जाएपफं ते निश्वयज्ञान परारथनं ऋत्यंतर यथातथ्य सदहिबं ते निश्वयसमित दरसन जाएवं । ऋने संकाकं खादिक ५ बीत संदायादिक रहित थको निसंकिय १ निकंखियादिक ८ बोखनेविषे प्रवर्त समिकतदरसननी अद लावव्यवहारनय २ है। समिकतद रसनसहित अतरंगत्नावे १० पांपस्वानक अविरितन् पचववूं ते निश्चयचारित्र । अने ते पहित पांचमहाव्रत । पंचसुमाति त्रणु गुप्तिममुषने विषे प्रवर्तवूं ते चारित्रनेविषे शुद्धत्नावव्यवहारन्य ॥३॥ समिकत सहित एहवा चारित्रना रसनेविषे वीर्यसहित द्व्यात्मानुतलालीनपएं ते चारित्र त्यात्रित सदासर्वदा निश्वयत्य । स्त्रागितेणेंकरी सहित १२ प्रकारे स्त्राणसणादिक तपनीविषे एकांतिनिर्जरानेत्र्यरथें प्रवर्तवूं ते । इहिलावव्यवहारतम । इतान १दरसन १ चारित्र ३ तम । एनो स्क ह्लाव व्यवहार तेयुक्तीनु हेतु कारण निह ते संसार हेतु ॥ ॥ वे ॥ हवे दव्य १ त्नावं कहिए वे विना समिकत सुद्ध सदहणा विनामिध्याति मुजे ज्ञान १दर सन २ चारित्र ३ तम ध ते द्व्यज्ञान १ द्रव्य दरहान २ द्वयचारित्र ३ जाएावी ॥ त्र्रयवा इह सोकादिकीर्ति । तेने त्र्ररथें ते जे ए ध ते पए इव्यज्ञानादिक ध जाएावा ११ त्र्यने जिनाज्ञा सुद्ध सदहणा सहित । एकांत निर्जराने ऋथे ज्ञानादिक ध ते त्रावजीन १ लावदरसन २ लावचारित्र ३ लावत्रप ७ जाएाचो २ एवं ७ । हे। हवे ऋविशेष १ विशेष कहे हे । समुचेज्ञानक ३ मनपर्यव ज्ञान ध केवलज्ञान ५ त्र्यने नाषारिकहिजे । मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ त्र्यविज्ञान ३ मनपर्ययज्ञान ध केवलज्ञान ५ एमकहिएं। ते विशेषज्ञान १एम समुचे दरसन कहिए । ते त्र्यविशेषदरसन १ त्र्यने क्रयोपसमित १ स्वासादन २ जपसम ३ वेदक ४ षायक ५

श्रा २ छ

Ha E

ग ३०५

समिकत ५ एम नामवारी समिकत कहिए ते विशेष दर्शन कहिए २ समुचे चारित्र ते किहए त्र्याविसेष त्र्यने सामा इकादिक चारित्र१ बेदोपरकापनचारित्र २ परिहार विशादि चारित्र ३ सुषम संपरायचारित्र ध जथाष्यातचारित्र ५ एमनाम बारीकहिएं ते विशेष तप ध ए वं च बोल ध्या । चे । हवे ध निषेपा कहे हे । ज्ञान १ दरसन २ चारित्र ३ तप ४ एहवी नाम दीघी जीवनी तथा त्र्याजीवतुं जी नाम । ज्ञा न १ दरशन २ चारित्र ३ तप ध एनांम निषेपो जाएावी १ ए ध जीमशापना मांनी ते थापना ज्ञान १ दरसन २ चारित्र ३ तप ध एन्यापना निषेपो २ रापजोग श्रून्य ए ६ तथा ग्यानादिक जे ६ दारीराश्रित जीवमां हे क्वाता ॥ त्र्यने ते जीव ते शरीरथकी चव्यो । कमे ते नी जीव सरीरे पन्धो ते सरीरने द्रव्य ज्ञान १ द्रव्यदरसन २ द्रव्यचारित्र ३ द्रव्यतप ६ कहिएं। एदवनिन्तेपी जांएावी ३ ए ज्ञानादि क धबोतनेविषे जपयोग सहित जीव प्रवर्ते हे । तपलावज्ञान १ लावदरसन २ लावचारित्र ३ लावतप ध कहिएं । एलावतप कहिए। एलावनिषेपो जांएावो ७ ए७ निन्तेपा कह्या। एवं १०॥ इवे उच्ययी १ षेत्रधी २ कालथी ३ लावधी ७ कहिये हे ॥ षट् द्रव्यंत यथातथ्य स्वरूपतुं जाएापएर्व तथा कहियो ने द्रव्यथी ज्ञान १ सर्वषेत्रने विषेयथानथ्यतुं जाएापएर्क ते वेत्रथी ज्ञान कहिये २ सर्वकालनेविषे यथात्रथ्यनुं जाए।पएं। तथा सामाइ ऋपखावसित्। ज्ञानते कालथी ज्ञान कहिएं ॥३॥ लावथी ज्ञान ते ऋपएो ऋरसे ऋफासे ॥ ऋथवा सर्वते सर्व पर्यवरूपी ऋरूपी पर्यवनुं रहस्य माहिला परमार्थनुं पुढनो । परमारथनुं जाए।पएर्त नेला वार्थज्ञान कहिए । तथा षट् इव्यनुं जाए। पएं ते लावधी ज्ञान कहिए ॥ षेत्रथी दरसन कहिये २ सर्वकालने विषे तथा सामाइ

知. 2 C

3 **₽** &. ...

त्र्यपश्चविसत् सदहवूं ते कालयी दरसन किहए ध तथा त्रस थावर जीवना त्र्यारंत्रयी तथा सर्वकाख त्र्यात्रवयी निवर्तवूं ते उच्यथी चारित्र १ सर्व षेत्रनेविषे निवर्तवूं ने षेत्रथी चारित्र २ सर्व काय जावजीव संघी निवरतवूं ने कायथी चारित्र ३ लावथी सर्व पदार्थिनेविषे मूर्जालावरहितपएं । त्र्यरुवापि त्र्यवन्त्रे इत्यादिक ते लावशी चारित्र ६ तथा १२ प्रकारना तप समिकतसि तपणी करवो ने उच्यथी तप १ सर्व षेत्रेकरबूं ते षेत्रथी तप २ यथोचिन काल ममाणी करवो ते कालथी तप ३ एकांन निर्जराने अर्थी करवुं ते लावयी तप ४ तथा त्र्यारूपी त्र्यवन्त्रे इत्यादिक ते लावयी तप कहिएं ४ एडव्यादिक ४ बीस कहा। ॥ एवं ४ बीस थया बे हवे ममाए कहिये हे ।। ज्ञान हे ते दव्याश्रित है ॥ द्व्यादिक तुं जाए। पएं। यथा एयं पंचिव हं नाएं।। दवाएय गुणाए।य ॥ इतिवचनान् ॥ ते माटे एक काइक दव्याश्रीने पतन्कादि प्रतन्क प्रमाण चिंतवे। यथा सूर्य छगो विव दीगे जांएयो । एप्रतन्क ढदम स्वने ॥ एपतन्त सानप्रमाण १ ॥ वादसमध्ये अयो प्रत्यन्त बिंब न जाएयो न दीवो । सूर्यनी प्रलाने अपनुमाने अयो जाएयो । यथा कद मेहेस मुदए हो इपत्ना चंदस्राएं । तथा सूर्यनो त्र्याताप देषीने जन्यो नाएयो । ए ग्यानने विषे त्र्यनुमान प्रमाण २ ज्ञानकेहबू है। सूर्य सरपू प्रकासनू कर ए। हार है। अथवा सूर्य रातो के हवी है रातो ही गसी वर्ण समान है ॥ ए पांचने विषे जिपमा प्रमाण ॥३॥ सूर्यन् विमान केहवूं हे । सूर्यनी ऋष्टिनुं वर्ण जाएावूं ।तेज्ञाननेविषे न्य्रागमप्रमाण ॥६॥ एथी व सी त्र्यनेरे प्रकारे २ जिम २ प्रमाएा नीपजे तिम २ कारिए ध हवे दरसनना ध प्रमाएा । ज्ञानप्रमाए। वत् । नवरं । एतसी विशेषजे

श्रा २८

सान प्रमाएन विषे आएं कहिए अने दरसने । अपने दरसने प्रमाए सद्द्यं एम कहिए । एदरसनने विषे प्रत्यन्कादि । प्रमाएन सद्दृहिवूं ते ध चारित्रने विषे जाएं। कहिए । प्रतक्त प्रमाए। ते ए जैसमिकत साहित सुद्ध इर्यादिक ५ सुमित ब्यादिक ध्यानने विषे प्रतक्त दीनों ते एजे समिकत सहित साद इयोदिक १ त्र्यनुत्तरिवाने जीदेवपरो जपना ने ते जपना जे त्र्यनुमाने जाएरिए । ते एजीव पूर्व निश्चे चारित्रवंत क्रंता १४ पूर्वमध्ये पूर्वनी संसाय करता । लित्यंतरी तथारात्रि सांघाटयो साधुविना पूर्व लिएी न सके । ए अनुमान प्रमा-ए। तथा सुधार्षिगङ्गालितांतरने विषे । जथोक्त जिनमारगपरुपतां सांत्मवीने एकोइक चारित्रवंत दीसेने । ए नारित्रवु न्यनुमान प्रमाएं २ चारित्रवंतने नुपमादीधी मैरुनी समुद्रनी सूर्यनी चंद्र पृथवी वृषलासिंह हस्ति प्रमुषनी नुपमा दीधी । ते नुपमाएकरी नु-पमाप्रमाए। १३। श्रागमप्रमाए । स्यगनांगप्रमुष धर्म पन्ते साधुना गुए। वर्षव्या । इर्यादिक सहित । चाविखवन्ते । खांतिखमे जिइंदिए । इत्यादि शुणवंत चारित्रवंत क्षए एत्र्यागम प्रमाएा । सान्कात् ऋषासणादिक । तप करतां दीवी एतपने विषेत्रतन्त प्रमाएं १ र्घना त्र्रणगरनी परें सरीरे कत्यादिक देवी त्र्र्यसुमान नेकीधुं । जे एतपनी करएहार जएगए हे । ए त्र्र्यसुमानप्रमाए। र त्र्यानि जेम काष्ठने बासे तेमतपरूप ऋजिकमी काष्ठ नेवासे ए ज पमाप्रमाए। ३ कनकाविष प्रमुख ऋनेक तपना गुए। महिमा कर तन्य सूत्रनेविषे वर्णव्या ए त्र्यागम प्रमाएा ७ ए ४ प्रमाएा बद्मास्बनी वर्षाएया त्र्यने केवली ते ज्ञानादि सर्व पदारथे के ब खज्ञाने प्रत 🗫 🖰 क्त प्रमाण है। एतर्स ध प्रमाण कहा।। एवं १० बोस थया।। हवे सात् नय कहे है। ज्ञान ने नैगमनय । ज्ञान मुक्तिकार एां।

च् ३०० ज्ञान ते सुक्तीच्रं कारण है ते कोण ज्ञान । तेमिध्यादि पांचमकारनुं १ ते ५ धईने प्रतन्त १ परोन्त २ एमध्ये समाए २ ते प-तन्त इंदियमतन्त ए ५ लेदे ३ नी इंदियमतन्त त्र्यविज्ञानादि ३ लेद ३ लव प्रत्येक १ क्तयोपसमिक त्र्यानुगामिए त्र्यादिक ६ लेद विस्तारे ध क्रजुमति १ विप्रुष्तमित २ सविस्तार ५ लवस्ब १ सिन्द्र केवल ज्ञान सविस्तार ६ एप्रत्यन्त ज्ञाननी लेद परीन्तना २ त्मेदमति १ श्रुति २ तत्र त्रप्रश्रुत निश्चित ते जुत्तपाता दि ध बुद्धि २ श्रुतमिश्चितमति ते । जुत्राहादिक ध त्मेद ३ तत्र जुग्रहना १० इहाना ६ ऋषायनी ६ पारणाना ६ एवं २० लोद ध इत्यादि षेत्र लोदे ॥ सविस्तार ध ए मिननो नेगम श्रुतज्ञानना १४ लोद श्रान्तर श्रुतिना दिलेदयावत् । स्तनबोखक पढूमो । जावत् श्वतज्ञानवएनि।विकित्र्यनेरापए। । नाएरी त्र्यनाएरीना रे२५ त्सेदे इतिनैगमनय १ । बे। एगेनाएो । एक ज्ञान जाएएएं । तेएों करीने ज्ञान जाएए एं जेथकी तथा देहने विषे ज्ञान ५ ज्ञानने विषे ३ त्र्यज्ञानने विषे त्र्याव्यो एक ज्ञान एम कहिवी ते संग्रह नय २ । हो। ज्ञानने विषे व्यवहार नय ते । ल० श० छढे ० २१ तत्र जीवना धएगि कि त्र्यनाएगि । इत्यादि २२ वार २५ बोलजे जेवानीजो ज्ञान । त्र्यक्षानने विषे मवर्ती है । ते ते सर्व विस्तार जीव १ गति २ गाथाथि कहिए । ते झानने विषे व्यवहार नय । है। रुक सूत्रनये । वर्तमानकाले जे जे ज्ञानने जुपर्जागे प्रवर्तती होए तेहज एक ग्यानी कहिएं । यथा बदास्व पासि । जुरु ध ज्ञान वे । तिहां जो माति ज्ञानने छपयोगे प्रवर्ति हो एम मति ज्ञानीज कहिए। यथापि श्रुतमश्रीत हे । तोही पए ते छपयोगी नेएों समेते मारे ने हान एम ध ज्ञान केयल तो एक जे वे पहिले समे केवलज्ञानी । बीजे समेकेवलदर्शनी पए केवलने त्र्यज्ञानीन कहिए । वदास्य ध

श्र-२0

ज्ञाननो घए। । कोएक वेदाच इन दरसनादिकने सुपयोगे प्रवर्ती है । पए समिकत सहित है तिवारे पए ज्ञानी कहिए । पए स्थजानी न कहिए । जे त्नणी समिकत दृष्टि स्त्रग्यानी न होए स्त्रत्र चालणा है । त्रणे स्त्रग्यान स्त्राश्रीपण एमहिन जाएवो । समिकतदृष्टिन-यनों जे सत्नाव ने । ते तिम कहे तो त्र्यावे पए। सक धनयज नुपरे दृष्टि राषीने सदहे नयनो सत्नाव कहे । इति क्जुस्रू अनय ध समिलिक्ट ६ एवं लूतनय ७ एत्रएी नये ते समिनि दशीने न जां ऐ। किहें नाए। शब्दे ए सागर बे इति ५।६। ५ मानय । बे धु-रिखा ३ नयतनाम १ थापना २ उब्य ३ परमारथविना ज्ञान कहि निरर्थक आए। ऋजुनय ते ज्ञानपण निरर्थक आए। पण कहें छ पदा ३ नय तेनाम १ थापना २ दव्य ३ निरथक मारे ज्ञान शब्दमाज नाणि । ते तेनी केवस समिकत सहित निजज्ञान कही १ स्रा-वस्यकवत् ॥ इति ज्ञानविषये संबद्धता एव एक द्यायथ तथ पदारथ नवनव तत्वयथातथ्य त्रवधारएो ए ए पदारथना सबसावे नेगमादि अनय इति अनया। लाव त्र्यंतः करए। शब्द त्नावेकरी सद्द्वतायका सब्समिकित ने एम तीर्थकरें कहां १५ हवे १० प्रकारे स लावेए सहहतस्स ॥ सम्मत्ततावयाह्य चिकेबे नि॰ प्रथमनि सर्ग सिव बीजी जपदेस सची त्रीजी न्य्राझा सची चोधी सूत्र सची पांचमी किन्न्यावमीकिया ३०० श्राएग रुइस त्तर्वीय रुइमेव ॥ श्रालिगमनेवीस्तारु रुची ॥

नु॰ ३१०

प्रयमनिसगरुचीनु वक्षणक्र ह्रा॰ उता त्रा विश्वास्थव स्वर्यक मन्ति ए पदार्यने शब्दथी निजेरा वंध दि॰ दीवासर्व पदारथतेने च॰ च्यारमकारे द्रव्ययी १ पेत्रयी २ कासधी ३ लावधी ४ त्र्यन सब पति जाति स्मरणादिक निश्चे ने लावने सद्दहे तपुरवन निवानसगरा न इम जाए।वी १ ए हव अपदस बन्बसम्बनियाकेवालिए सपदेस दीध बन इ० इम जा एवा ऋव मिथ्यातादिक जैने हर्व न्याज्ञारुचि रावरागद्वेष यु छ। ऋ अवगय हाइ श्री । एवा पुरर्षना त्र्याज्ञा ए राज्यवत

अप-३1

For Private and Personal Use Only

च ३११

न्त्रा॰ न्त्राज्ञारुचिवंतना॰ जाएवी २० हवे सूत्ररुचि जी॰ जेकाइ त्र्याणारुइनाम ॥ २०॥ जासुत्तमहिद्यतो ॥ त्रां त्र्याचारगादि लाएावे त्र्यवा बा॰ त्रांगयी बाहिरते सी॰ ते पुरुष स्त्र रुचीनो घए। ए बेकरी समिकित सासन्तर्भनायद्य विषे निश्चयत्र्यने व्यवहार एम विचारी एते कहे हे धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ सोकाकाश ३ एत्रएने विषे त्र्यसंख्यात प्रदेशात्मीक त्र्यरूपी त्र्यचेतनपएं त्र्य्रलोकाका सने विषे त्र्यनंत प्रदेस एनिश्चयपएं त्र्यने धर्मास्ति कायने विषे गमनगुए। १ ऋधर्मास्ति कायने विषे पिरगु-ए। २ त्र्याकासनी त्रवकासगुए। ३ एवी प्रवर्तन ते व्यवहारनय ३ कालनेविषे एक पर्यव त्र्युक्त पत्र्य नेतन्य एनिश्रवपएर्व त्र्यने ऋतुत्र्य-यन संवन्तरिकने विषे समयादिक त्र्याविका प्रमुष नयते व्यवहारपएं । जीवने विषे त्र्यसंख्यात प्रदेशात्मात्र्यरूपी शुलाशुल नुपयोग रूप चैतन्यपर्एं ते निश्चय ऋने एकेंदियादि पंचेंदी तथा सरीरी नुगाइएगदिकने विषे अवस्तवूं ते व्यवहारनय सि इनेविषे व्यवहारनथी ऋ-कमीगाटे ए गंघ २ रस ५ फरस म संवाण ५ इत्यादिक नुं प्रतन्त बहुए रूप प्रवर्तन ते व्यवहार नथी ब्राकर्म माटे ५ गंघ २ रस ५ फ-रस ए संवाएा ५ इत्यादिक नुं प्रतन्त ग्रहण रूप पवर्तन ते व्यवहारनय ए ६ ५व्यनु निश्चय व्यवहारपएं एम चिंतवे स्त्रना नय प्रमाएों करे जाएावूं एधर्मास्तिकायादि ब द्रव्यना द्रव्यत्नाविशेषादिक शेष २३ बीख बीजे ऋंतरपत्रथी जाएावा एतले मुक्तिनुं कारए। ज्ञाननो

J. 3

उ ३१२

ऋषिकार संपूर्ण हवे बीजूं मुक्तीनूं कारण दरसन समिकत वरणवें बे ए॰ एक उष्टान एक हेतु इ सीपवेकरी ऋ घणापद हेतु उष्टा-नु नद्दननेविषे जेमति । तेखनोबिंद्स पसरे तेम स्तः श्रुतज्ञान जेएीं त्रा अधिया दीन के इ ० इंग्यार श्रंग का लिक दृष्टिचादते बारमुत्र्यंग | इवे विस्तारसन्दि द० धर्मो स्तिकायादि बद्धव्यना पर्यवादिक नुकालिक वर्ती द्वाए। स्वलावा नयनी विधे करीने । नयने एने गमनय १ संग्रह नय २ व्यवहार नय ३ रुन्सूत्र नय ४ ममाए। ३ नुपमाप्त स॰ सर्व पार्णाकरा ४ जङ्ज दं समिकतनेविषे ना शाननेविषे चारित्रनेविषे ना॰ जाएवा

初.

ङ ३१३

कि किया रुचीनो घएरी एवी जाएवि २५ हर्व संरवेव रुचि न्यू नयी अंगीकार कीया का निथ्यादि एरमति। संग् संग्वेब रुचि होई जा एवि वसी यो हुने वसी केवो ने जिनमति विना त्रान्यी ग्रह्मो सेन्सेषकु मतना मतने विषेत्रातमाने सखव रुचीनी घणी हवे घम रुचि स्व अगमिविष्टत्र्यने अगबाह्य जे श्वतंषमे समिकत सरूपना रवनिश्वयवली च रिव सामायकादिक चारित्रना धर्मना सरूपना सीट तेट बोसना सलावरूप धर्मरुचीनाधएरिना आएवर २९ इवे समकितना वादिकना पदार्थ समय ते सं व्यान्य त्र्यान्य करे युपाकी रतन करे वाव समु चे त्र्यया बीजेबात सुवक्त इ सदहणा सहित लाविपर द्वाए व दीधार्व पर जीवादिकपदारयना सरूप समय जेए। एइवा जेगुरवादिक

Zrar.

न ३१४

पामीने परे विएा वोते दरसन समिकत जेनो तेनिन्हवादिक तेना संगने वरजवा त्र्यने कु ॰ घुरथीज षोटी स दहणा बे जेनी तेनीपए। संगत नः न होए चारित्रसमिकतिबना जमकहतम स॰ समाकननी सदहएग जाएावी दे समिकित बन बुद त्र्यवया रए। ला इवसमाकतनुमाराइपएतं कहे वे २० चारित्रनी त्मजना द्वाएत्र्यने नहिएए। सब समिकत त्र्यने चारित्र एवं साधित्र्यावे पुरु पहिलेवित समिकत त्र्यावे २७ पर्व चारित्र त्यावे च॰ चारित्रना गुए। गु॰ चारित्ररहित पुरषने न॰ नहीए कर्मथी मूकाववी अपन नहिकर्मथ षनञान ज्ञानावना निच जिनवचननेविषे संकारहित होए निच जिनमत त्र्यने परमत ए बीक्त सरपा नवांबे नजाएो नि॰ एनहि यर्किवारेपएकि हो मारग बरोक्कर्स एम्डपएर्ग नहि नुरु शुद्ध जिनमतनागुए**। दीपानेकहं पि**रु

37.20

अः ३१५

धर्मनेविषे थिरताकरे वर साधर्मिक सुपरेवाब सकारि हितनोकार ए। जुएप्पर बीतरागनावचन शुद्ध परूपवेकरी प्रवचननी ऋगचार त्रूष ए।जाए।वा अप॰ इहां सामाचारित्र एतले बीन्द्रं मुक्तीनुं कारण १० गाथा एकरी समिक तनो ऋषिकार कह्यो ३१ हवेत्रीजो ऋषिकार ५ चारित्रनो कहे वे पन प्रथम जाए। वूं सामायक् नारित्र समीपे गन्धापवूं त्य्रात्मा दढकरवो जे जात्रएमारग त्याराधवो प्रथमतीर्थकरने सासन के अपने के लाए केने केदोपस्कापनी चारित्र हीए एकेदन स्वापन चारित्र शुद्धनामा चात्रित्र त्रीज्र ए कोएक तपविसेष हे जधन्य तो १० वरसपढी त्र्यावे तिवारपही सुत्र सुर्वकोिन त्र्यानुषापरजतरहे जेजधन ए ।। पूर्वनी त्रीजीवस्क लएया होए नु ० पूर्वपुराते पण प्रथम चर्मतीर्थिकरने सासनेहोए हा ने श्रें चारित्र सम्प्य संपरायं दसमे उपागएी ज होए सम्प्रपातली ते संपराय संजलन ली त्नना नदयमाटे सम्प्रसंपराय २२ त्रा १६क सुहमं तह संपरायच ॥ ३२ ॥ त्र्यक सायमह रकायं ॥ वायरहित २० मोहनीनी प्रकृतिनथा नदयलावरहित चारित्रते ऋष्यधाष्यातचारित्र ५ मूं कहिए बे०११ मेतया बारमे ग्रंणवाएी ब्यस्बने होए जि० वाब ऋषवा १३मे १४मे ग्रणवाएी केवलीने खन्म सर्म जिए। रूस्वा ॥ होए ॥ इवेजीवादिक ए पदारधने विषे निश्चय १ व्यवहारपए कहे हे । जीवने विषे निश्चयमे त्र्यसंष्यातमदेशात्मक द्व्यनुपयोग रूप चैतन्यपएतं त्र्यने ते चैतन्यवंत एकेंदियादिक पंचेंदियपर्यंत जीवदेहधारी पोतापोता सरीरोगाहए॥दिक नित्रवर्ते तेजीवनेविषे व्यवहारनय एक सिन्दनेविषे व्यवहार नथी त्र्यकर्मक गाटे १ त्र्यजीव धर्मास्तिकाय १ त्र्यधर्मास्तिकाय २ खोकासास्त्रि

ऋ २ प

नः ३१६

काय ३ ए त्रानि विषे निश्चय ते त्र्यसंच्यात प्रदेसरूप त्र्यरूपी चैतन्यपर्णं त्र्यालोकाका सने विषे त्र्यालोकिक त्र्यनंत प्रदेस पुरगदने विषे एकादि अनंत प्रदेस अचेतनपएं ए निश्चय कालनेविषे एक एक पर्यवस्त्य अचेतनपएं कालनेविषे एक पर्यवस्त्य अचेतनपएं ए निस्त्रय त्र्यने धर्मास्तिकायने विषे गमनगुए। १ त्र्यधर्मास्तिकायने विषे थिरगुए। १ त्र्याकासने विषे त्र्यवकासगुए। ३ पुदगलने विषे वए। ५ गंध २ रस ५ फरस ८ संग्राण ५ इत्यादिक नुं अहणागुणा । कालनेविषे समयादि पुदगलपरावर्तन वर्तणागुणनुं प्रवर्ते ते द्वयव्यवहार नय जाएावो । यथा त्र्यसंख्याते त्रोके त्र्यनंतीरात्रिगइ जाएं के जासे एपवर्तए। एव्यवहार नय २ जीवना परेसनेविषे शुलपुदगलनो वंध ते निश्चेपुरगलपएं अने ते हुनु अनुलाग लोगववारूप प्रवर्तन ते व्यवहार पुन्यपएं लोगववाने व्यवहारे बएाए । तेमाटे ३ जीवना प्रदेसने विषे पूर्वे त्राविरित संजोगे मेल्यां तथा वरनमान । त्राविरितने संजोगे त्राक्तल पुदगलनो बंध तेनिकायपएं त्राने तेहनो लोगच-वो ते तदरूप व्यवहार नं ते प्रवर्तन ते व्यवहार पएंत ७ त्राविरतिने त्र्यपन्यक्की विषयने रसे करी जे कमे पुदग वतुं ते नित्र्यय त्रात्र्यवपएंत्र स्र-ने त्र्यविरत्यादि विषयकषाय नुं प्रवर्तन ते व्यवहार ते त्र्याश्रवपएं ॥ ५॥ त्र्यविरतिने पत्त्वषवे करी ५ त्र्याश्रवनुं १० त्र्याश्रवना घननाला प्र रवा नववांकर्म नावे ते निश्चय संवर कहिए त्र्यने ते संवरनी इर्या समित रूप प्रवर्तन ते व्यवहार संवर ६ समिकितादिकना गुए। सु लचित्तवनाएकरी जीवना प्रदेसधी कर्म पुदगलनो विषरवो । ते सकामनिर्जरानो निश्वयपएकं त्मरतचिक्रवत् । तेइनी विपरीत मिथ्या तबाल रांकबा अकामादिक ने त्र्यकामनिर्जरानी निश्वयपएरी ते कर्मबंध नो हेतु जाए। वी । त्र्यने समिकत सिंहत १२ लेरेतप १७ लेरेसंजमने विषेपवर्तनु

3T.2

39E

.ن و و د

लरतचित्रंवत् । तेव्यवहार सकामनिर्जरा निश्चयव्यवहार । ए बिट्क संघातेज होए । तेह्यी विपरीतेव्यवहार त्र्यकाम निर्जरा ॥ इ जीवनामदेसने विषे पुरुगलनोबंध तेनेबंध कहिए । समुचय जीवन्त्राश्री १ शुद्द न्त्रशहद न्त्रध्यवसाएंकरी जेशलाशुल बंध तेनिश्चय बंध तिहां समिकतवंतवृतनाधएरानी शुल श्रध्यवसाय ते त्राशालक कर्मनी निर्जराएं शेषपातला कर्म रह्या तेणे शालाबंधापण समिकतादिकनुं करतन्य ते बंधनुहै तुनिह त्र्यने सुलाशुल ऋष्यवसानुं जे भवर्तन तेऐंकरी बंधनुं व्यवहारपएकं जािएएं तेलक्एा जीवना सकल मदेशयी सकल कर्मपुदगल मुं मूकाववूं ने मोन्क ने सिद्धपणं ए निश्चिय मोन्क ने सिद्धानि सि इने विषे प्रवर्तनरूप अकम्मसञ्यवहारी न विद्याए ए ए पदारथनुं निश्चय व्यवहारपएं कहां वे हवे द्वय ३ लाव ४ तथा निन्द्रोपी ४ तथा द्रव्य १ षेत्र २ कास ३ लाव ४ इत्यादि २२ बोस बीजी श्रंनर पत्रथी जाएावा पोनपोनाने वेकाएो चिंनववा ॥ १०॥ ब ए॰ एपांच चारित्र च॰ कर्मना समूहनेटालवा चारित्र | त्र्या॰ तीर्थकरे कह्युं हवे नप कहे है 3३ तन्तपवसी ५० बेमकारनो कह्यो चारतहाइ स्थाहय ना॰ ज्ञानें करी जां शे ला॰ सर्वप बाह्यतप श्रव श्रासितर तेम बार बाह्य उठ अपकारें ए॰ एमहिज उमकारें ऋल्यंतरतप हवेधना धगुए। कहेरे ३ध दारयना जाएा

ग्रा ३५

चः ३१८

तन तर्पकरी पन पाबसाकमे षपावने करी त्र्यात्मासुद च॰ चारित्रं करीनवाकमनग्रहेनवाकमनबाध सं• ज्ञानदरसनसहितसजमकरी सम्मत्तं ॥ २८ ॥ २८ मा ऋष्ययननेविषे ज्ञानादिक ध प्रकारे मोक्तनी मारग कहा तिती २ जा क्रिएते लागी सर्वगादिक अव्योक्ताफल २० मा त्र्यध्ययनने विषे कहें बे त्र्याव होत्रेरजी वी जबु ऋषवा त्र्यान सव एत्र्यामत्रवचन कह्यते ऐता बलगवंत ए॰ एन्प्रागल कर्ज ते एए। मकारे का॰ कासवर्गात्री इ पन्सयमेवत्र्रध्ये लब्लगवत यः सीमहाबीरदेव सः सम्यक्त पराक्रमनाम ऋष्ययन सन्यमणतपसी महाबारए

श्र-२७

३१ए।

प-प्रतीत्र आएति रो॰ रोचवीने ए ऋध्ययनने विषे जेम ऋनुष्टान करवां कह्यां तेम ऋनुष्टानन जबजेत्रप्रध्ययन सब साचे मने सद्दिने स्ती॰ ऋतिचाररहीत शुद्ध ऋनुषानकरीने ऋा॰ ते ऋनुष्ठान ऋाराधीने सि॰ सर्व अर्थनी सि दि थावेकरी सी जेबु॰ सी न क्रिएक मेथी मूकाए पढ कर्मरूपिया दावान ल रुनी त्र्याज्ञाए पालीने कासाक सरूपनाजाए त्र्यंतकरे तिव ते समकल पराक्रमत्र्यध्ययननो ए॰ त्र्यागले कहीरो ते त्र्यये एए। प्रकार त्र्यावकहिए तेव अ सं वैरागमी क्र पोचवानी ऋलि लाष नि विषयनुपरी ध धर्म करवानी अदा गु॰ गुरु साधमैकनी सु॰ लक्ति करवी न्माः श्रा गब् पापनी गरहए।। गुरु समी पकर नि॰ त्र्यापणा त्र्यात्माना दोष त्र्यात्माराधाने निद्राया ६ । पापनीदा करे ६

到.30

च्_. ३२०

वं गुरुने वंदना करे १० पन्पापथी निवर्तवूं नेपिन क्वमण ११ का कानुस्सर्ग करे १२ करे ते उत्तिमंग सर्पः वारवार फरी फरीने सूत्रगए। रवः समावव १६ सक सन्नायकरवी १७ ्यः सूत्रादिक त्र्यथोदिकना प्रश्नपूर्व पञ्चारंबार फरीफरीने सूत्रगणी २० त्र्यः सूत्रार्थना त्र्यथाचितवे धः धर्मकयानु स॰ १९ लेदे संजम त॰ १२ लेदे तप सुर सिदांतनी श्राराधना करे एवएकाग्रमननी शुलस्खापन कर ए। सान्तवसए। या २४ बो॰ कमेनु टाववू सु॰ विषयसुष्तु टालवू २० अ॰ अपिन बंदपएर्त विक्स्मीपसम्बन्ध रहित सन्त्र्यापए। त्र्याएय होएजे त्र्याहार तेइ त्र्यने बीजे जतीए। होए ते एक गकरीने वेची पिए ते सलीगपचेषीए क त्र्याहारत्राएयं न बाह प च स्क बिएयरएया ३२।

For Private and Personal Use Only

३२१

न्त्रा॰ सदा व न्त्राहार सवाना पचषाएा कर क॰ कषायनीपचषाएा कर लब् लातपाणीनो पचषाण करे संयारो करें ४० सब ब्रानादिका स॰ कारजकामनी करणहार शिष्यं ते सध्याएं त्र्यनेराषायानी पचषाण करे. 801 पर्व मायारहित जतीनो वैष जतीने त्र्यानार **म**बते वयावच बा॰ रागद्वपरहितपए। अवस रवं -क्तमासहित पवते ४६ मुन् लात्सरहित पए प्रवत महव कर परिसंहण प्रमुख किया जेएगिविध करवी कहिए जीर पनवचनका याना रहितंपवर्त ला॰ शुद्ध त्र्यनःकर्णते लावसत्य

उ ३२२ का कायने साचे त्यावे संजमने विषे थापवा त्यापी प्रवरतावे ना श्रुतज्ञानादिकं करी सम्यक्त सहित च॰ चा-षा॰ नासका इंदीनी निमह श्रीतं दीनो नियह जिंच जिल रित्रसहित को को को धर्न जीने मा॰ मानन जान काहावजए मि॰ मिथ्यात्व दरसनए३ ने जीने अवयधानधर्मनी श्रदाएं संब्वेराग्य शीघ्र आवे पर्व श्रष्ठा नुपरान ऋ अनेतानुबंधी रसं र जणय

ग्राउ ।

323

नवांकर्मन बांधे मिन मिथ्यातनी विक स्वयंकरीने एह समुचय जाएावू स्थागसन्त वि॰ विश्व द करी वि॰ ऋत्यतनि मेंसाएकरी ऋ॰ बेकोइकाते न तए। जलव लव्य जीव ते .सारएकराकदायि त॰ त्रीजू लवपए। ना॰ त्र्यतिक्रमे नहि त्रीजे लवे मो क्रापीन्ये देवता मनुष्य का॰ कामलागनावष

. **૩**રઘ

सं मध्यातादिक संसारमां हे लमवानी गार्ग। प॰ त्याग करे मार्गपः परिवज्या यन धर्मकरवानी श्रद्धा लन्हपूज्य जीव जीव किस्त नपराज हवे नुसर तार्वदनी यकी रापना क्तरजेहने विषे रव लाग करती पको ऋ जतीयको जीव सार सरीरीपान वेराग न्या॰ यहस्बपएम बार्म वेदीकरे तेए। वदवेकरी बेन्बेदनषमगादिक लेन् लेदनतालेकरी त्र्यन्त्र्यनिष्टादीकनो संजीग इप्टनी विजीग ते उपनो बो॰ सु त्रुष निपजावे ३ गु गुरुसाधमिकनी जीव जीव तेलेंकरी विक विनय पांदवज्य बे जेए एवा **छत्तर गुब् गुरु साधामक नो सुब्र सेवा लोक्त करवे करी**

For Private and Personal Use Only

र्*ग*. ३२५

प्यत्कादि सालने विनास करे तेबी त्र्यासातना न | नै॰ नारकी तिर्थेच त्र्यने n गुएानु दिपाववु लब्गुरुलांक्ते **बब्ब**क्समानपए। करवाना गुएा नुपराजे वब्कीनिवेएरिसब्गुरुना नि॰ निरंतरबाधे दं दवता सदगति म॰ मनुष्यन गुएन दीपाववकरी लब ब व ब का मानप ए युरुलाक ज्ञानदरसनादि वि॰ विशु दकरें वि•विनयमूल स॰ सर्वकायश्चन ज्ञानादिकायनीयजावे त्र्यः श्र प॰ प्रशस्त कतहर्न नेरा ब॰ घएग जीवन वि॰ विनयने यहरावए।हार त्र्याः त्र्यासीचर्च करी पूज्य माव मायां अपने नीयाएक मि॰ मिटियात दरसन स॰ सलनी परेसलते केवार्ड गिचादसए। सस्त्र २८

ग्रा.२७

र्जः ३२६

न भरतपएं पूर्णे नपराजे नु॰ नधरए। करे नतरे टाले अ- श्रनता संसारना वधारए।हार नि त्र्यनेन पुरस्क वैदच प्ररणे नबांधे पुरुष्ट्रे बर स्त्री वेदन पुसक वैदना क श्रु मायारहित स्त्रीवेद जीव जीव किस्युं नुपराज विन्यूवीकरणी कीधी नथी ते विरद्यमाए कमेन्द्रायस्त्रपणी स् । क॰ त्र्यपूर्वकरण प॰पिवर्जे मिं दरसनमोहनी श्रव श्राणगार पक अएगपामवन कः गर पापनी निंदा गुरू समीप करवेकरी ला है पूज्य जीवक नपरा जे नु॰ क्यकर गः स्त्रापए। स्त्रात्माना दोष लत

श्री.२ए

છ. **३**२૭

नी निंदा गुरु समीपे करवे अञ्जालाने हीलवानेस्बानक सुपराजे त्राव संघले ही लवाना चानक पांमे क्लतेजीवत्राप्रशस्त ओव्यनवचन प॰ प्रसस्त मनव चनकायाना जीग परिवज्या ह त्रप्रवस्ति नाम दरसन तेनेविनास कारी ज्ञान चपर्जतां त्र्यामधीत कारी एवा जेकर्म नना पुरगत षपाव वि॰ विरति जपराजे सा॰ सामाइक करी सार सावद्य जांग 11511 चव्रध तीर्थकरने स्तववंकरी दव सम्यकत्वने विषे निर्मसपूर्ण जव नुपराजे ए व॰ गुरून (t) नीव नीचार्गात्र नीचा कुल पामवा कमें ष्यावेनुव नचा कुलगत्रिपामवाना कमें तचा कमे बाध बदणएए। नियागाय कम्म खर्वड न सागायकम्मानब

ন্ম.an

३२८

स्तबाक्क कुमारनीपरे लपराजे अञ्जेने खादेसदेए ते त्र्या • जेने त्र्यादेस देए ते नाकारन करे त्र्या • त्र्या झाना । दा • वचन फल नीपजावे .कारन कर दाहिए रमषन्पजेतेवा वचननी १० प० पापथी निवरतवी ने चाररूपिया बिडपएो पि॰ ढांक्याबेव्रतरूपियाविडपु॰वसीजीव नि॰रुध्याबे ऋाश्रवजेएों जीवहिंसादि मजेनोते त्राव त्रावपवन्तन माव मात्तानेविषे ज्वव सावधाननहाए। त्रावसजमजागयी त्रासगोन द्वाए सुव लिसीपर ॥ तल्ला करवेकरी ल० हेपूज्यजीव किस्य नुपराजे ं वि॰ विशु ऋषियोजनी पा॰ ऋतिचारेथी निरमल क्लए तेजीव नि॰ निवृत्तिपणा सहित हुङ्

ऋ र ए

ઈ. ૩૨૭

ला॰ लारना बहुए।हार नैनीपरेक में प॰ प्रशस्तध्यान पास्यों सु॰ सुष पामवानी परंपराएं सुषनी श्रेणीएं करी सुषे विचरे प॰ पचषाएं कर वेंकरी है पूज्य जीव कि॰ किस्यु नुपराजे पन्पचपाएं करवेकरीत्र्याः त्र्यात्रवद्वाररुधे पन्पचपाएं। इ० तृष्णानो रहभवो ग० पाम्याएवाजेजीव स० सर्वे ५व्यनेविषे वि० तृष्णारहितथको सी० सीतसील्र ये॰ स्तवनस्तृति मंगर्वी क करी नार ज्ञान जीव किस्यु नुपराज दरसन चारित्र ना॰ ज्ञानदरसन च॰ चारित्र रहीपन बुधान साल नुपराज बाह साल जएपर जीव मौक्तनी त्र्याराधनाकरे त्र्यथेवा क॰ बारदेवलोक ए ग्रैवेयक प्रत्युक्तरविमान तेनेविषे नु॰ नपराजवानी स्राराधना किरिय कथा विमाए।।ववात्तय त्र्याराहण

३२ए।

33°

। का॰ स्वाधायना प॰ प्रतिलेषवं करी ल॰हेपूज्य जीव किस्यु नुपराजी का॰ स्वाधायनी काल प्रतिसंघवेकरी नाव ज्ञानाः पा॰ पापन बद्ते मार्था अने सीधा होए ते करवे करी तक हे पूज्ये जीविक स्यं नुपराने होएं ते करवेकरीत्न व हे पूज्य जीव किस्य नुपराजे मय त्र्या॰ चारित्र त्र्यने चारित्रना फ॰फ समीक्त तेने त्र्याराधे १६ रवन्स्व सम्यक्त तहना फलज्ञान तेने निर्मासकरे खमा ख॰ खमाववे करी चित्रनु प्रसन्त्ररूप कि॰ किस्युनपराजे ला॰ ऋति पाय नुपराज पन्चित्त लम्हपूज्यजीव स॰ सर्वे पाएं। त्सूत जी॰ जीवसत्वनविष मिबहितचितव्यारूप मेत्रलावनुपनावं मिब्मनलाव न मसन्तरूप ला॰ त्रालिप्रायपाम्ययिकी मित्तिलाव चुपाएइ पएलावसुदागएय ॥

ऋ-२ए

3,30

. इ३१

सजायकरवेकरी ना॰ ज्ञानावरए।। वा वांचणी देवी तेएों करी सु॰ सिद्धाननी कि विस्य नुपराजी त्र्यया सिद्धांतना सजायनेत्रार्थे तिः गए। धरना धर्म अ आचरतीयको

333

कं॰ सत्त्र अने अर्थ एए। प्रकार करी युजने त्नणावी के त्नणाववी इत्यादिकवां गरूपमोहनीकर्म पारय ज्य जीव कि स्युनुपराजे प॰ बारवार णि तबि तथापदारथानु सारणी तब्धिनपजे २१ ऋ सत्रना ऋर्यचिंतवेकरी त्य हेपूज्य जीवसुंनुपराजे स्व स्त्रना ऋर्य चितववेकरी श्रान कर्मनी मक्रतिवजीने स॰ सातकर्मनी मकृति ध॰गारेबंधने बांधी है ते ते प्रकृति कर यवद्यान ति॰ तीवरसपएो जे कर्मनी पकृति बांधी छे तेगं। दि॰ घएगकालनी स्थितीए जेकर्मनी प्रकृतिबांधी बेतेर॰ थोमा कालनी थिति करेः बि घए।। कमनापुदगल क्लएते अ० थींना पुदगल करे सि॰ कदाचित् को इक बांधे सि॰ कदाचित्नबांध ऋा॰ त्रानुषाकर्म

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ण ३३३

नुन न बांधे अन्यनादिते त्रमदिरहित्तं नोवत्त्रव वारवार नुवाचएगाइ श्रिए। इयचए पाम २२ ससारकतार धि धर्मक था कहते करी नि क्रमेन्द्र्न य करना नीविध लुपराजे पर सिद्धांतना पर प्रलावना गुएं करी सिद्धांतना गुए। दीपावव जीव किस्य नुपराजे प्रात्नागुएदीपाववंकरी स्त्राव त्र्यागलेलावे लाव कल्याएहोए कर्म शतल नपूराने स्र भिदांतनी त्र्याराधना करवेकरी स॰ सिधानना श्राराधनी करवे करी अप्र त्र्यज्ञानषपाव पूज्य जीव क्त रूपराजे ए॰ एकाग्रमन श्रुत सं॰ धापना करवे करी विष्नुन्माद ए॰ एकाथमननी संच्यापना नेएकिरी लं हे पूज्यजीव किस्यु नपराज एगगमए। सानवस्एयाएए। त्नतजाव

ऋ. २ N

. કેક્ક

चित्त जातो क्रए तेहनो निरोध करे सं असतरत्नेद संज्ञमें करी लब्हें पूज्य जीव किस्युं नुपराने सं व संज्ञमें करी आव आश्वरहितपणें नुपराजे २६ बो॰ क मने टाखर्व करी ऋ॰ पापनी कियारहितपण्य नुपराजे ऋ॰ पापनी क्रिया रहितपर्ण मुन्ससारथी मूकाएपन कमे रूपदावानलने टालवेकरी सात स॰ सर्वे ५षनी व्यतकरे बीलूत भाए कि॰ सूनुपराजे हवेनुत्र विषय सारवने टाल व अ॰ अचसपणारहित न्प्रएह बक् पएह नुपराज जाव ऋन्परजीवने पुषीने तत्काल कर्पते त्र्य**ब्हर**षवादर्गहेत श्रप्तिबकपण करी

त्रम् २ए।

उ ३३५

श्रा त्राप्रतिबंद्रपए नि॰ स्त्रियादि ऋ ऋमतिब द्वपए कना संगरहितपएफ अपूराज अन्स्त्रियादिकरिहतपणु अन्मतिबंदरिहत विन्विचरे ३० विवस्त्रियस्क पमगरहित्सा । पाटीपाटलादिकसेववेकरील । हेपूज्यजीव किस्यु नु से॰सेववेकरीच॰चारित्ररन्दा नुपराज् साइ रहित द॰ निश्चल चारित्र। ए॰ एनिश्चरितवततपसंजमनी मो॰ मोक्त साधवाना त्र्यतकरएात्र्यात्मेप्रायत एकिरी त्र्य॰ त्र्याव्यकारना कर्मनी गांव वि विसेषे पि विषययी निवर्तवे हे पूज्य जीव किं विस्यु गुपराजे

ऋा २ ता

Ì Ì

ઇ. 33६

पुः पूर्वीजे पापकर्म बांध्या केजेने निः निर्जरवा तेएों करी. तं ते पापकर्मने टाले तः तिवारपढी न्य्र॰ धर्म करवे करी सन् त्रापएर त्यापएर एज त्याहार ते त्र्यनेबीजे जतीएं ते एक ग करीने वेची सी ए ते संत्नोग कहिए ते संत्नोगनो पचषाएाकरवेकरी हेपूज्य जीव सुं गुपराजे हवे गुनर एकग आहार करवानो पचषाएा करवेकरी आव्ज रोगीया न्य्रसमर्थ होए ते बीजाजती न्याधार वांबे न्य्रासंबन कहिए एवा न्यासंबन न्या गल त्र्यालंबन रहित त्र्या॰ मोन्त तथा संजम तेनी त्र्यरथजेने एवा जतीने संजमनो व्यापार क्रए स॰ त्र्याप एो पोताने लालेकरी सं॰ संनोष ए॰ बीजाजतीना तालनी नी॰ त्र्यासानकरे नी॰ एष्ठजनदीए मनकत्यनानकरे नी॰ त्र्यापए। त्र्यात्मानी वाबावचने करीबीजा जतीने जणा वंबीजाज तीकने जावे नो • स्प्रतिसाषानकरे ए • बीजाजतीना स्प्र • स्प्रासा स्प्रण श्रु • एमुजने दीएएम मने **क** त्र्यातलाषा ऋण

*X.7(U

330

न्यः बीजाजतीकने स्प्रएाजाचतो यको दो बीजा सुषसज्या नु स्त्रंगीकार करीने विचर हेपूज्यजीव किस्य जपराजे हवे जत्तर नु । सदीव आहार सवानेपचरवाएं करी ' बेदे जी॰ जीवतव्यनु बाबानु यो॰ बेदे जी॰ जीव न्त्राहाराँवेना न॰ किलेसनपामे जीव किर्म्य नुपराज हवे उत्तर कः कषायपचषाएं करवे करी वी॰ रागद्वे घरहित वीतरागलाव नुपराज वी॰रागदे घरहितला कसायपचरकाएाए। वायरागलाव जाएयइ 361

*33*ट ब्र. प॰पिनवज्यों है ने जीव साधने सर्वक षायनीय चषाए। है तेलागनों स॰ समसर्षे है सु॰सुषपुषनैविषेहीए ३६ जी॰ मनवचनकायाना ऋकल जीग समसह इस्त लवड पुन्पूर्वी ने कर्म बांध्या होए ते निजेरे ३९ सन्पत्तरवाए। करवेकरी हे पूज्य जीव नबांधे. सि॰ सिद्दना ऋतिसयना गुन्गुएापएक बर्ए गधरस फरस राहतपएफ जी॰ जीव सी॰ सोकाग्रमोन्क नुरुपाम्योदको पर श्राति हे सुषी होए ३ -गुरुगुए। करी सहित सं संवायन राववान पर्पच्याएं करीए एक सापए जन्न

ग्रा २ त

336) 9.

एव एकलाप्युंलावनीयको न्याव त्र्यात्पकहतां त्र्यालावशब्द करनो हो एनहीं त्र्यव्यचननोकलहकरनोनहि सजम घएर कुए सन संवरघणा होए सन्समाधि घणा होए थाए ते जीवने स॰ ज्ञानादिक समाधि करी **जपराज** सक ष्यकरवानी कम क्रए ते हाले ४० ल॰ त्राहार प्रमुषत्नातपाए। न प्रविष् श्रीव घएगा लब लचना करा स॰ जीवना सलावनु प॰ पचषाए। सबै विरति जिविनो सत्नाव बेपचषाए। सर्व वीरातिन कर्स्करी करवे करी. हपूज्य जीव किस्य अपराजे हवे अत्तर एव सक लध्याननी चोधो लेद जुपराजे

ऋा-२ल

33 (U

<u>ত</u> 3ধa

खक्र्यमाये तेक तेजीम छे तेम अनुक्र में के हे वेक वेदनी त्र्याः त्र्यानुषु २ नामगात्रकमक्तयक स्व सर्वे पुर्वयी मुकाए पव कमी + जुपसमकरी सीत सील्यु तथाए स्रोपया दावानल + करी ला॰ हेपूज्य जीव किस्यु गपराज हवनुत्तर लावधी ऋप्राति बंहपएो चपराजे त॰ द्रव्यथी लावधी छपगरएा लावराहत इसवा जिए तजीव वि निमेल स॰ सम्यक्तवनी धए। क्रिए स॰ सत्वनी बलवीयीपए। स॰सव वि॰ पीमानकरे ते लएगिविस्वास छपजे तैवी रूपके त्रा० त्राटप प्रतिलेखना के

न्य-२०

ट १४६

वि•विस्तिर्णु तम् स• समित मजोदादिकं करी सहित ला• याए वे • ऋाचार्यादिक नीवेयावच त्तरः वयावचएलित जावाक जएयड तिः तीर्थकरनामगोत्रकर्मनिः बांधे ४३ स॰ ञानादि ३ सर्वे गुण स॰ सहितपणकरा ऋ॰ ससारमाहवानी ऋए। ऋविवा नुपराज मान्द माहे बिल ऋण ऋाववी पर पाम्यीयकोजीव सार सरीर मानसी उपनीत्नीगवण हार नहीं वी॰ बीनरागराग हुपराहतप हर्वनुत्तर बी॰ वीतरागद्वरहितपणे

ग्र.२७

. ३४२

श्रु उच्चना सी संपी त्स्य नुपराजे मु॰ निर्दाल करी परिश्रहरहित पए नुपराजे त्र्यः त्र्यागत्र्यालेलाष् निक क्रुए परियहर्राहे तने चौरादिक खुटवानी त्र्यन्तरसपए। करीह चारादिक पुरुषन ॥ लावन करे उत्तर ऋ सरवपएों करी का॰ कायाएकरी सरवपएं ला॰ ऋलिमायनुं सरवपएं ानेए करी संग्रसहित जीव ४० धर्मनी ऋरिश्व होए त्रा परजीवने पुष नदेवे म॰ श्रहकाररहितपणकर 901 है पूज्यनीव किन् सुनुपराजे हवे नुत्तर में। ऋहंकाररहितपएोकरी ऋ• ऋए। नुद्दतपएक नुपराजे ऋ• ऋए। नुधतपए। करी सहित जी•जीव

ऋ २०

च ३४३ मि॰ सुद्दालापएर अने म॰ अहंकाररहितपएर। अ॰ जातिमद१ कुल२ बल३ रूपघयीवन ५ ऐसर्व ६ श्रुत आला ८ ॥ धए ॥ एट यानक टाले घए ज्यजीव संगुपराजे हर्व गुत्तर लाव लाव राष्ट्रत्यतः करएकिरी शुष्टत्यध्यवसायने ज**्गुपराजे लाव शुष्टलाव त्रा**तः करएो करीक त्राव त्राराधनाने विषे नुदम्बत थाए श्रव स्मारहतना पव परूप्या त्र्यरहत प॰ परलोकने विवे ध॰ घर्मने त्र्याराधक थाए धर्म पार्मे ऋ न रामवत थ इने परूप्यात्र्याराधनानिविष मते लेषणा तेमकरे ते करण सत्येकरी हेपूज्यजीव स्नुपराज क॰ मित लेषनादिक जेएगि विधे किया करवी कहीं । मार्यकरी जीव क॰ किया कर वानासमर्थिथाए कः प्रतिसेषनादिक अएगिविध कियाकरवी कही है तेम | जीव जन्जेमवान्वचनेकरीक हे मे किया एमकरवी तन तेमजिता करे करेतेकरणसत्यनेविषे जहावाई तहाकारियाविलवई ॥ ५१॥

ग्राःशा

For Private and Personal Use Only

ર્શે. રુઇક

मः पापथी मन निवारीने गुः ग्रमपूरी प्रवस्तता ए॰ धर्मने विषे एकाश्राचितपण जीव कि॰ सू अपराज हवे अत्तर दे वचन गुप्तपए। करी नि॰ विकयानु त्र्यणकरवानु नुपरान निश्चकार किरीजीव जीववचनग्रसंचिको त्र्यव मननाजीन धर्म ध्यानादिक व्यापार ना साव साधनधर्मनुपरे एकात्राचित्तपासी स का०काय्य पूज्य जीव कि॰ किस्क नुपराजे हर्वनुत्तर का॰ कायगुप्तपणे करी स॰ सवरनपराजे स॰ सवर करी कायगुप्तपेको पु॰वसीपाप

कर्म त्याववाने जे हे ते निरुक्षंधे ५५ मन्मनसाचे लावे धापने लावेकरी ए अते जावाक जए। यह पवे त्नावेंकरी ए॰ ए धर्मनेविषे एकायचित्तपए हैं नुपराजीने ना॰ ज्ञानपर्योपे नुपराजीन मिह्यत्तच साचेलावे भापवापऐकरी ४० वचन स्वाध्यायादिकने पचन लं हेषूज्यजीव सूं नपराजे व व वचन साचेखा विवसिनपएं टार्स देव सम्यक्त्वना लेदने विव सिनपएं टार्स जीव कि॰ सं नुपराज कायान साचे त्माव य॰ चारित्रना ३४५ चार तपद्यव विसाह ५ चारत

*३*8*६* ञ.

अन्ययाज्यात चारि तन्तिवारपढी सिन्सवीयसिद्धक्कए बन्दिन त्रायाकन स्वरूपनाए। मुन्कमया निद्यानन स॰ सर्वे इषनी अंतकर ५० संव सर्व जीवादिकना त्नावनी जाए। पए। जन्तुपराजे नाव झाने करी साहित अटवीने विषे न विएसे नहि जि जैम सुइस्त्रना दोरा सहित तन्त्रेमजावपए। सुन सूत्रसाहत जाएापणा सहित सं संसारमांहे विश्रसेनही धर्म पांमे ना॰ ज्ञानिक विनयतप च॰ ससारनविएास्स्इ

श्रा २८७

383 3

पन परपारवंभिनाशास्त्रने सं मेखणहार फ्लाए लन् तेनासरूप दं दरसनसहितपणे हे पूज्य जीव किं॰ सुंनपराजी हवेनतर अर. २० जाए कुए प॰ नत्क्रष्ट तेए। लवे केवसङ्गानपामयक ज्ञानन प॰न दे दरसन्सहितपए करी श्र_व प्रधानज्ञान दरसनने करी श्रव त्र्यापणा त्र्यात्मान सव सम्यक्रियकार जीमनायकात्माव पामबत साचेत्नावे त्र्यापएगा त्र्यातमाने त्नावतोथको । नः चारित्रसाहितपएं करीहे प्रज्य ं जीव मं जपराजे हर्व जनरः सोलिसि सोलकहता पर वत तमाई इसी कहता वाक्तरमेर पर्वत तेनी पर निश्चल पए दिसे सेलेसिनी लाव प॰ पिक्यों वे अ॰ अए। गार सेलेसि तेनु लाव नपराजी न तिवारपछी सि सर्वार्थिसि इ व्॰ बूर्फ मूकाए प॰सीतलील्ब्रनथाए स॰सवे छवनी त्र्यंत चि च्यार केवालना कमीवेलाग पपाव तन्पनासिक्षक बुक्षक

For Private and Personal Use Only

र्गुः ३४*७*

सो॰ सोतेंदियमानि॰ नियहकरवेकरी हे पूज्यजीव किं॰ सुनुपराजेहर्वनुत्तर सो॰ सोतेदीन नियह पर्णांकरी म॰ मनोश रा॰ रागदेष निव् नियह करवे अपराजी त्रमनाज्ञ शब्दन त॰ रागद्वधानमत्त्रकम है पूज्य जीव स नुपराजे हवे नुतर विकरी मन्मनोज्ञ अपनोज्ञ रूपनेविषे रा॰ रागद्वषानिमहकरवा नुपराज तः ते रागदेष निमत्तकम रगिदासानग्गह जएाय कमे पूर्वे बांध्या वसी वपावे

३धट

र्गः ३४ए

दीनोनियहकररेकरी हेपूज्यनीय संख्यराजे धार नासका इंदीनो नियह करवेकरी मर मनोज्ञ स्ममोझ गंरगंधनेविषेता ले •हेपूज्यं जीव सु नुपराजं हुव नुत्तर जिं॰ जीलनी इंडीनो नियह करवेकरी मु॰ मनाञ्च त्र्यमनाञ्च पूज्यूवेज बाध्या क्लएते कमे बपावे ६५ नः नबाधः व्यव र यानहा फरसंदीनु नियह करवे करी मन मनोज्ञ त्र्यमनोज्ञफानफरसनेविषेराव

386

(30)

340

को कि कोध जे कर्म बांधीने देन पर्व कर्म लोगवे तेवा चन्पूरणे कर्म काणंकरी नवांध पुन पूर्व बाध्या | ग्रा २ ए . क्रोधनेजीतवेकरी खन्दामानुपराजे काहत्रयाण द्यन कम्मनबध् कि॰ सं नुपराज हव जत्तर मान मानन जीतव करी में न्यहंकार रहितपएं नुपराजे 83 कर्मबांधीने वे॰ पड़े ते कर्म त्नोगवे तेवां कर्मन प्रविच्चानसर्घ मा॰ माया करवे करी जैकमें बांधीन पर्व त्नोगवेते किं संनुपराजे हुवे नुत्तर मा॰ मायाने जीतवे करी नु॰ सरस लाव नुपराड़ी गनुसुत्नाव जएा किं सं नुपराजे हवे नुत्तर सो सोलें करी जे कर्मबांध्य वाकमनबाध पुरुपूर बाध्याजेकम षपार्व ६ए ॥ ६ ए॥ ला॰ लालंकरी जे कमें बाध्या पर्व त्योगर्व तेवा कर्मनबांधे पुरुपूर्व जे बांध्या ते निर्जरें ७० पेर जीवेने संवसतीष लाव जपराज तोलवेयंणिद्यंकम्मनबंधई। पुन्नबंधचनिद्यर् सलाव ज ए। य इ

348

मि॰ मिध्यात्वदरसननेत जीववेकरी हे पूज्य जीव किं॰ सूं नुपराजेहवेनुत्तर पे॰ रागदेष मि॰ मिध्यात्वदरसन टासवेंकरी ना॰ ज्ञान १ दं॰ दर्शन २ एए। लगजावाकजए। यड ॥ पश्चदासामबादसए चारित्र ३ ने त्र्याव त्र्याराधवाने त्र्यथे नुद्रम करे त्र्यव त्र्याव प्रकारना कव जे कर्म षणवतां दोहेखा कर्मनी गांव विवसूकाववाने त्र्यथे तव ते कर्म मोहनी पहिल् वपान्य जि॰ जम त्रानुक्रमे वपाववानी विधि वे तम वपावे त्रान तानुवधीयाक्रीधादि वपावे पं । पांचमकारे ना । ज्ञानावाएं किम न । नव नयो प्रकार दरसनाविए किमे न॰ पं॰ पांच प्रकारना त्र्यंतराय कमे ए॰ एत्रएा नित्र्यंकमेना त्र्यंस जुरु समकाखं सार्वज बपाव तवतिवार विह त्र्यनत ज्ञान त्र्यं सर्वपदारथनु आए।पएन पर संपूर्णज्ञान त्र्यावरण रहित नि॰ व्याघात पढ़ी अप्र स्पत्रहित विव त्र्यज्ञान रूप ऋषकारराहर रहित त वि॰ सर्वदोषरहित लोक त्र्यलाकमा है प्रकासना करणहार कै॰ केवलमधान ना॰ ज्ञानदरसन सम्यक् प्रकारिन पर्ने जा॰ जावनमन वन्न कायानाव्यापा खतहाएना । तहा इयावही कमे

ड ३५३

निव बांधे तेव ते इरियाबहिकमें बाध्य कुए फरस्यु कुए लिगव्या वेव षयगयो क्षए पान्योत्नोगव्यो ष्यगयोत्रागांगएकाले ऋव । ज्याम्यो कर्मरहित नोधेसमे क्लए ७१ ऋ अत्मेक्त्रतिक जैतलो आनुषो क्रुने तेतलो पान अं अंतरमुक्तते अव त्यानुषी धाकतो कुए तिवारे जीवम लोगवी जाग ागपम्वानिब्यापार नेयी एवा श्रुक्कुध्याननो त्रीजोत्नेदध्या त॰ तेमाहे पहिला म॰ मननाव्यापार रुध मण्मननाच्यापार रुधीन वि वचननी व्यापार व॰ वचनना ज्यापार रंधीने कार कायाना जोगने संधीने का कायाना जागने रुधे त्र्यान्नेसास निसास रुध श्राव नुसासानसास

刻. 2 M

ર્ગ. કપર

क् तर्च्यार नचारकरे त्र्यवधीराकाल लगे एवेसम रुधीने 50 सिगारेक संसी पिनवज्यी क्रए मनवचनकायाना व्यार बदाणी ब कि॰ कियाकर्म क्वयकीधाविना जे एवो सु॰ सुकसध्याननो चोथो लोद वे॰ वेदनिकर्म नाव नाम नाम ध्यान पाबाचसनह। त॰तेमाटे नु॰ नुदारिक सरीर ते॰ तेजस सरीर क नन्त्रने श्रमिकाग जु॰ समकाल पंपावीन ७२ त्रावणा जीवनी त्रवगहना जनसी त्राकास जोइए कामेए।सरीरविव डांमवेकरी विव डांभीने नु समश्रीपाम तेतलानुपरांत श्रदकी श्राकास विष्यजाहत्ता । सा॰ ज्ञाननपूजागवत ते लगवतन सिंग सिंख येई सर्वे ऋषे न चाएकसमे ग्रा॰ वाकी त्राएगित रताप मांक जाए स॰ सर्वे प्रथमिकाए प॰ कमरूपदावानलन

ऋग् २०७

For Private and Personal Use Only

. ૩૫**ઇ**

सन्समए। नपस्वी लान लगवत सन श्रीमहावीरदेव त्र्यः त्र्यध्ययननो त्र्यर्थ एनिश्र्व सम्यक्तवपराक्रम प॰फलदेषानवंकरी आएयोप॰ सरूपनकहवकरा जंब्रजिममेश्रीमहावीरदेवसमीप सालस्यु हतु तिमञ्ज तुजपतकज्ञु ब ज॰ जीपापकर्म मां ऋध्ययननेविषे कहे बे तपकरी साधू ते एव एकाच एकमने यको सात्न दे पा॰ प्राणवध सु॰ मृषावाद जूवा न्त्रव न्त्रदत्तमधुन परिग्रहर्य निवत्यो रात्रीलौजनर्था निवत्यौ एवो जीव हर्वे थाए ऋपूर नवा कमे यहवायी रहित २

न्य्यः <u>३</u>०

રૂપ્ધ

ण ३५५

जी॰ एवी जीव फुए ते थाए नवां कर्म ग्रहवा रहित ३ श्रव त्र्यणगार परहित निव त्रणसं परिहत त्र्या कषायरहित नि॰ नितेरी ॥ श्रागारवायानस्सद्ध विरति प्रमुष विविषयीत | विषे राव राग देव सव त्र्यतिह नुपराजा पापकमरयः खपावे जेम साधु न ॰ एकाय सा त्नलहाशष्यमुफने कहतायका ७ ज॰ जेम मोटा तलावने सो । पाणीनी सो बए। ए॰ एए प्रकार स॰ साधूनपए। पा॰ पापकमे नवा त्र्यावता रह्या एवासाधुहाइतन त्नवनी कोमिना सं संच्याकर्म तव तपंकरी दाय थाए सिव्तेतप ५० वेपकार कहा। वा॰बाद्यतप ज॰ बप्रकारे कहा। ए॰ एम अस्यतर तप बाह्यतपना नाम कहनु त्र्यं नमांकारांसे त्र्यादि

平30

ચુ. 34દ

रु रसपार त्याग तप वि॰ ए ब प्रकार बाह्य तप हो ए ट ६० थीमा काखनी मयोदा नमी कारसी प्रमुख मन मरण । ऋणासणा ऋण ऋणासणा तप वैप्रकारें त्लाजनकरवानी वाबा सहित फुए जो व जेते इव थोना का सनीत्व एतिनपत्ते बरा २ त्रम्य २ दसम २ प्रमुषजावत् ६ मास एक खा करे ते श्रेएतिन प० बीजी प्रकार तपते श्रेएतिसुएकिरीए तिवार प्रतर तप थाए वगाय प्रतर तपने ते श्रेणियुपोकरी ए तिवारे धनतपयाए एवं वरगतपते धनधन युपोकरीए लगी डे एके वारी एं ते श्रे एि तप १ पयर तबो व श्रे एि। यु एो करी ए ते भतर तप डे भतर ते श्रीयु ए। ते घनतप ३ घन घन यु ए। वर्ग ७ वर्ग वर्ग मनमनवंबितनपएकहिए चि॰चितनेविषेजे मुगत नो अर्थे बेपामिएनात्जाए। बोहोए गुणो तेवर्गतप ५ ए ४ नुपकासनी १श्रेणी तेयंत्रोयंत्र. पचमानुबन्न

र् १५९

जा॰ जेहवे मरएाकाखनो त्र्यएासएा कहेबे सा॰ ते त्र्यएासए। ५० बेपकारें कह्युं लगवंतें ए॰ एक हाध्यपगादिकहलावेते लावनुं पचवाए। स्र॰हा सवियारमवियारि॥ धपगादि श्वहासावियाहिया कहलावे नहि तेपादोपगमन का॰ जुवबूं इत्यादिक कायानी चेष्ठा करवी ऋषवा नकरवी ऋ। श्री ला॰ अ, त्रायवा वली बज्जमकारे त्राएास द्गएवपकारन त्र्यणसण १२ ए। स॰ एक विश्वांमणादिक वैयावच अप्रबीर्जु वैयावचकरबा श्रेणसण आह ए बेकह्या लगवंते नि॰ वाचिसं चादिकने लयेंकरी नुपरपार संधारो ऋपारक्तमाय ऋगाद्रया जीवषाचकाढवामार्टे त्र्याव बेलेन्त्र्यवसरकरवाने त्र्याहारनी बेवन खेवी दोव्बे द्वा त्र्यएसएएनेविषेपएर प्रकारें द॰ द्रव्ययीर षेत्रयीर काल्यी ३ त्नावधी ४ पन्पर्याययकी हारथी तब तेनलात्र्याहारमांहेनुएं जेकरं जब्जघन्ययो हूं ते एबएकसिधादिक एबएमद्रव्ययीन एगेदरीतप फुए १५ गाव गामने विषेन एवद्वए। नुलव।।

त्र्य-३व

ર્જો. ३५८

निः जिहां वाणिया चणावसे तिहां त्र्याः सोना रूपानात्र्यागरनेविषे परं घणे वृत्तें करी। खे जिहां माटीनोगढ ने सामान्यनगरनेविषे जलवटनो मार्ग सहित वाम चोर पह्नी प्रमुषने विषे श्चनेद्यं खब टना मारगने विषेपाटए ने विषे मं अने पाषति सघ से २॥ कोस गाम इतए ते मंनवने सा पत्रियादिक ना वर्णवसे बे तिहां अयेवा त्राव जिहा तापसनाया १६॥ काइकत्मय जपजेतिबारेधान ममुष परवत जपरे वहिने लेइ जाए ते संबाहनेविषे नके विषेनाः नागकुमार प्रमुषेयानकनेविषे सं नानाने समानेविषे सं नपंथी जोक प्रमुषवी सामी रहे तेने सरानेविषे । ये रतना नं चायलने विषे खें न चो॰ जिहां गाएप्रमुष गोकसरहित फूए तिहां विषे कटकनार जतरवाना वाम तिहा सं सर्थिवाहना साथे प्रमुखना जतरवाना वाम तेनेविषे सक त्मयमाटे खोक एकवां वाक वामाने विषे रकरथनी मलेते धानक तेनेविषे को॰ कोट सहित गांमते तथा चक्करानी। घरु घरने विषे बारु ऋषेवा एर एऐ। प्रकारें एतलाज षेत्र तिहां कर कब्ये त्या हारादिक एर एपू वैकह्या डे धानक ऋगदि नेरन प्रमुषने विषे त्र्याहार मलसेतोलेस पे॰ पेटा ने त्राकारे चोषुणी गो चरी करे तेपेमा त्रा ० त्रारथपेटी ने त्राकारे गोचरीकरे ते ऋरधपेमा ते बीजो लेद

-TT. 2 -

३५७

क्रिए तिहां गोचरीकरे तेगोमुत्ति ५० पतंगीयानी नुमवानीपरे टूटकर । संव संवना त्र्यावर्तननीपरे पामामां गोचरीकरे १ पामामां बाहिरनिक वतांपए तेम गोचरीकरे तेम संखायतीनोबीजीलेदगबपाधरुधर घरे गोचरी करे थीबेक्रालगे पे पाने बले निवारे गोचरी करे ते बन निवारे गोचरी करे दिवदिवसना पोरसीनं ॥१ए॥ तेपए षेत्रथी छए। देश नप जेने जेनसो को इकास ए॰एए। प्रकारें विचरतीयको रव॰ निश्चे कालनी प्रमाएंनी नुएरेदरी तप जाए। वी २० त्रमहवा दसमनीश्रेणी राष्ट्र नुपवास श्रेणी वगवरे तप प प्रतरतप घनतप ३ चाक रूनुमा चोक अश्रेणी चोकमा चो. हरध चीकमा एकतासीस साष ७ ६ ह चौकमा ध पारएग ७ ध हजार ३ से ४ पारएा 511 9 દ્ય १ हजार नुपवास दिन १कोनि ६९ लाष ९ इ.२ सहे १६ नुपवास 98 ६ध धच ए ६ ы २कोरि ए लाष ४१ हजार ५ सहै २० दिन तहना वर्ष ५ ट हजार २ से ५४ वर्ष मास २ दिन २० सर्व दिनमान विषेश्रभास CO २० प्रमुषनो यंत्र तेथी सर्वतपनुं मान जाए।वूं

३५ छ

ુ. 3ફ્∂

| | 3 | २ | 3 | ધ | Ч |
|----------------------|---------|----------|------------|------------------------|---|
| २॥ बबलक्त | श्रेणी | मतर | घन | वरगत्तप | व्रगवरगत्तप. |
| अपवास दिन | २ | છ | b | ६६ त्रीस बब | २। घट बेहजार घट बर्ग त्र्यने पारएह पए। |
| तथावर्षमान | ધ | b | १६ | २५६ दिन | ४० ए६ च्यारहजार बनु जपवास थाए |
| ऋष्ट्रमल क | इदि | १२दि | २धदिन | ए६ दिन | १इ.१सो ६१७ धि. त्र्यनेवर्ष १७ दिन २६ |
| ज पवासदिन | 3 | 2/ | २७ | २ सहे २५३ ऋगम | १ लाष ३७ इ. १ सो ६३ ऋवम |
| तथा वर्षमान | G | २७ | ८१ | ७ सह २० जपवास | ३५ सा ३१ ह ६ सो ६१ जपवास थाए |
| ५॥ दूबा धस | १२ | ३६दिः | १० ८ दिन | एसहे ७२ दिन | अ ला ए हे ५ सो ए ए दिन |
| ज पदास्त्रक्त | પ | २५ | २५६ | ३ ह १ सो २५ पुवास | धको ए छ बा २ इसो २५ पुवासस त्नक्त एतसा पारणां |
| तथावर्षमान | રપ | २५६ | १सी २५ | १५ ह ६ सो २५ जपवास | २६को ध१ लाग ७० हे ६ सो २५ नुपवास |
| ६ बहुद्सुत्नः | દ્ય | 30 | १सो ५० | १८ ह ७ सी ५० दिन | २० की २० दाष ६० ह । सा ५० दिन वर्ष ८ को १३ दा - ए |
| जुपवास दिन | 8 | کی | ३६ | उह ७ सो ७६दि | ३६को २ एला ए ३ ह ५६ चनु दस सिक्त पार एतसाज. |
| वष्मान | ધ | स त्र | १२५ | ध६ ह बसी ५६ छपः | र सहै १७ की ६० ला ७ २ ह ३ से ३६ च पवास. |
| 3 सोवस ल | 3 | ध२ | २७२ | एध ह धसी ३२ दिन | २सहेप्३की एप सा ७ एह ३ सी ए २ सवीवन |
| <u>जपबासदिन</u> | 9 | 3 | ध ण | १६ हट सी 3 सील | १सी ए 9 को दि इं 9 लाष ३६ ह 3 सी ३३ सो अस त्मक्त पारणां |
| वरषमान | 3 | न्त | ३ सो ध ३ | १ साष १३ हः दसी ७० | १सी ३८ की ध१ लाप २८ इजार ७ सी २१ |
| | ٦ تا | पद | ३ सो (७२ | १ ला ३ ध ह । सी ५६ दिन | |
| | | | | | |

For Private and Personal Use Only

۳ 9ع د

नुष् काइक नुएयिक घाष्ट्रमाहार एवगवेषतायकाप्रवर्तेयवपोरसीने युव चोये लाग तपार । ऋयेवापा वर्म लाग नुए।।पोरसी एव सी नुणा बाह हवं लावयी। भक्ते हे 50 स्त्री ऋषवा पुरुष त्राक्त्रालरण सहित ऋषवात्रालरण नहीए त्राक त्रानेरीको इक वक वृद्धावय ३ एत्रणवयमाही को इकवयनेविषे प्रवर्तना त्र्याहारादि देसे ते लेस्क त्र्यु न्यूनेरी को इ कपमी बच्चेमसुष व० वस्त्रसहिन क्रूसे तेने हाथे वेस्क २२ पादिकसिहनइत्यादित्रप्रवस्था अनेरुकोई वि॰ लेद्त्रप्रमूकिन अवस्था सिहतइत्से तेने। तोनहिले छंइत्यादिक लावनु अलियह करतो हायेतेसुं व॰ कालेत्यागारवर्षे दातारत दसता लस्क लावम्ए थको ए॰ एएरे प्रवर्तनान् खंडनिश्चै त्ना॰ लाययी चएरोदरी नप जाएरावी २३ द० उच्ययी त्रप्रसनादिकनेखे॰ पेत्रयीयामादिकनेखिषे त्नावयी स्त्रीपुरुष त्र्यालरणादिक साहित तथा रहित इत्यादिलाय निवयकह्या जेलाव ए॰ एए। द्रव्यषेत्रकास

र्ड इहर

न्य्रवन्यावप्रकार्तुं गोचरी तेपेमा त्र्यद्वपेमादिक तव तेम सात एषणा श्रीत्र्याचारंगमां कही वेश्ववश्यात्माद जैव जेपूर्वे न्यात्म्यह कह्या वे तेथीव जी श्रव श्रानेरा बीजा त्र्य ॥ बमकार ब तहासत्त वएसएगा लियह लि॰ लिकाचरीतपुँ अप॰ कह्यो त्मगवंतें २५ हवे रसपरित्याग खी॰ दूधदही घी ऋादि शब्दयी सर्वे तपकहं ब ला कहा लगवत रवएरसपरित्याग नपवरजव १६ हर्वकायकी लेस वा काया एकवापरापवीजी वी-प॰ एवजेबू तप कहे वे रासनप्रमुप जी न जीवने सुन्मोपसम्बान्त्रापए। हारबे जनएत्रांते दुक्न जेन्जेमकरयूं बे कार कायांके पेस नेतपकहर्म त्यार लगवंतें तेम काया एकरी सेव कार्यकिवसतमाहिय ॥ २९॥ अविस्सन सहानग्ग जहा धारछात सलीनता तप कहे हैं एव एकांते जिहां स्त्रियादिकन त्राववनधी.इव स्त्रीत्राने इव बालिगाए ममुषरहितसव एवानुपाश्रय त्राच पाटपाटलादिक वि॰ स्त्रियादिक रहित स॰ नुपाश्रय त्र्यने त्राव पाटपाटलादिक एसंसीनता एव ए पूर्व कह्य बाव बाह्य तप स० संन्ति पे विवक ह्यो लगवते विवित्तसयएगसएं ॥ २० ॥ तपवे २०

ऋ∙३०

ण ३६३

त्राव त्रात्यंतरत्तप एव बाह्य तप कह्या पावी हवैकहेवे श्रीसु धर्मास्वामी जंबू प्रते कहे वे हे जंबू जेममें श्रीमहावीरदेव समीपें सांत्माट्युं पुतृ पावपाप नेमतुजमतें कड़्ते बुं ऋ ऋ ऋ ऋ में २० •कान रसग्गकरपो ए चिविन्रस्त्रेगा स॰ सङ्गायनोकर्या आ॰धर्मध्यानादिकना एसा न्या ॰ गुरुतेसमीपं जे पाय त्र्याकोचाओग्यत्र्या ६ ए त्र्यादिदै ६ पा ॰ मायश्चित्त पा ॰ दसविहन्ना क्षोच एग पिकमण् २ त्मय ३ विवेगावि ह ध सगी ५ तव ६ वय ७ मूल ८ त्र्राणव बपाय ८ पारं चियाएचेव तु॰ पूर्ण जे॰ जेसाधु कायाएं केरी सेवेसाचेमनें पा॰ पायि जेन तेक खुं हवे विनय तप कहे द॰ दसमकार जे श्चित्ततमाहिय ॥३१॥ ब ३१ नुलो थावं त्र्यं वे त्व तिमज्ञीव पाटेलादिक त्र्यासन युव युक्तनी लक्ति लाव लावसहित्युरुनोत्र्यादेस हाय जीमवु हवे वेयावच तप कहें बे खां अभाचार्य आदि देइ तेनो वं वेयावच करे दे दसमकारें त्र्याचार्यादिकने त्र्या वेयावच करवूं जब नेवूत्र्यापुणुं याज्व 1137 11

-3T. 30

*३६*६ ग

वाब गुरूनी समीपे बांचणी खेवी संदेहनुपजेतिवारे गुरूने पूबवूं तब तिमज पब फरी वै॰ वैयावच करयुं त॰ तेत्रप कयुं त्मगवंते हवे स्वाध्याय स्र एम्बाध्याय पर पारप्कार क्रए इवध्यानकहेती अर स्नानध्यान स्रने स रहिंसा सुत्रादिकना त्र्यर्थाचेनववा. धि धर्मध्यानना ध्यायो सुरु सुकान ध्यान ए २ ध्यावू तै र पूर्ण तीर्यकर एम न्त्रह्ध्यान तेवजीनध्यानी सुरुद्धित्तेनवका समाधिवन ध्याए श्रम सुरु स्वानेविषे बेसवानेविष वार नुला रेहेवानेविष जेन्जेला धून इलाववूं चलाववूं कार कायानुं वीसरावुंक नुस्ताग करवी त॰ वही एत्र्याल्यंनरतप प॰ कह्यं लगवर्त व प्रकार बाह्यतपूर्व ए २ लीट नपत्तु॰ पूरण वे लीट जे कोई साचीमने त्र्याचर ३६॥ प्रकार अरुपनरनप सरु संसार नरकादिक नेथिविशेषेप्पर मुकाए पंर पंधित आधु ६० श्रीस्प्यमीस्वामी जंबूपर्तेकहेबेहे विषम् चई पंतिए इति बेमि संखिप सञ्चससारा ॥

-21.72r

च ३६५

सो लाट्युं तेम के तुफ्रप्रते कक्कं बु इतिश्रीतपमारगनामा त्र्यध्ययनं समाप्त ॥३०॥ त्रीसमा त्र्यध्ययनने विषे तपकरवूं कह्युं ते तपचारित्रवंत क्रइते करे तेलएरी चारित्रनी विधि ३१ मां न्यध्ययननेविषे कहे छे ३० च॰ चारित्रविधीने कुंक कुं गुरु शिष्यमतेकहें जी जीवने सुषनु श्रापणहार जंब जे चारित्र त्र्यादरीने बन्घएम जीव निक नस्या ए॰ एकबो स्थी विच विरातिकरे ते संग्सार ऋषिया समुड्नेविषे ए॰ एक बोसची पन्मवर्तवं ते केवा बोल अन् त्रसंजमधी पा॰ पापकर्मि विद्यात्वादिकनं पः भवति सं संज्ञमने विषे पः प्रवर्ते बू रा॰ राग इंब पूरणे दो॰ एबे मेला बे रागदासयदापाव पाहार तन से॰ तेनरहे संसारमाहे लमे नहि ३ जे॰ जेसाध क॰ त्र्यसगाकरे सदाए सनभावद्यम् सी च॰ वामीने सदाए से नेनरहे संसारमां हे लमे नहि ध दिव्देवता **न** नपसग द्वयन्वसम्

त्रा.३१

३*६*६ ७. तः नेम तिर्येचना की धा नप्सर्गमनुष्यना जेन जे साधु सहे साचे मने से॰ ते नरहे संसारमाई तम नाह शाव त्यातध्यानं त्यनं रेडिध्यान एवं सद पांचसमतिनेविषेकि काइत्रादिक ते ब लेस्यानेविषं ड॰ वेयए। वेयावचक यानेविषेत्रकायनो कारणो त्र्याहारकरवाने विषे नुसमकरे निव स-पिं॰ संसवादिक त्याहार ग्रहवाना त्र्यालिग्रह सातवे

For Private and Personal Use Only

કેદઉ છ

मः जातिमदादिक त्र्यावमदनेविषे बंग ब्रह्मचर्यनी नव वामने । तिग्क्तमादि नीयः धर्म निन्सदाए सेन्ते नरहे संसारमाहे लमे नहि ए द्ृदस प्रकारे तेहने जें जे साधु न्यावमद बांनवाने विषे नववाने सेववाने विषेदसविध यति धर्मपाय। से तेनरहे संसारेमांहे लमे नहिं १० वानेविषे चदमकरे नि॰ सदाए लिंवे लिन्क्रनी पव १२ मतिज्ञानेविषे अव जे साधु श्रावकनी ११ मतिज्ञाजाएवानेविषे लिषूनी १ नरहे संसारमां हे त्नमे नहिं ११ कि ०१३ प्रकारेनी कियाने लु ० एकेंदियादिक १७ मकारेना प० पन्नरजातिना परमाधामीने विषे जे० जे साधु १७ मका जीवने जीवनीरकाने करवाने विषे जुदमकरे १३ क्रिया थानक टालवाने विषे १५ जातिना परमाधामी जेवा गा॰ श्रीस्मगर्मागना पहिलाश्चनस्कंदनेवि जाएावानेथिषे जदमकरे निः सदाए तेनरहे संसारमांहे त्नमेनहि १२ सीखमुगाहा नामा न्य्राध्य तन तेम सतरलेदे संजमनेविषे जेन जे साधु जन सीलमुं न्याध्ययनमा त्राणाववाने विषे १७ लेदे न्य्र संजम तजवाने विषेष्ठ यननेविषे

त्रा. ३१

र्जु. ३६८

से के नरहे संसारमां हे त्रमे नहि १३ वं अनेरा आवमदेंकरीना ज्ञाताना १० मा अध्ययनने विषे अ वास धानकने अ असमाधीने ति जै॰ जैसाधु ज॰ ब्रम्हचर्यपालवानेविष ज्ञाताना त्र्यध्ययननेसमा सदहवान करेनि॰ सदाएनेनरहे संसारमाह लमे नहिँ १४ ए॰ चारित्रने काव । विषेत्रसमाधिनाधानकवानवानेविषे छुद्म सन्त्रवडमम्ति॥ सकरे तेएक वीस सबसा तेनेविषे बार बाविस परिसहे जे॰ जे साधु जिं एक बीस सबला जीनवाने विषेत्र ॥परिसह सहवाने ते॰ त्रेवीस ऋध्ययन सूयगमांगना वे बेश्वतंस्कं धनेविषे सर्वे त्रेवीस नुपरे १ ऋषकू कीजेनो २६ कुए स्व २६ दंसत्मवनपति छ व्यंतर ५ ज्योतर्षा एक जे वैमानिक २६ दवतानी जात श्रयिवा तीर्थिकर जे साध सर सुगर्गागने विषे समासदहवाने विषे २७ तीर्थिकर सेंब तेनरहे संसारमा है लमे निह १६ पर पहाब्रतनी २५ त्यावनानि विषे ॥ त्राराधवानेविषे नि॰सदाए सेन त्र्यत्त इसम् दि॥ जि॰ २६ नुद्रेशोद॰ दशाश्वनस्क धना १० नुद्रेसा तेत्र्यादिदे इन्नहत्। १० नुद्देशानेविषे जेसाधु जि॰ २५ लावना समित्र्याराध्यानेविषे २६ नुद्देशा समा कत्पना ६ ग्रदेशाव्यवहारना 'जे लिस्क जय इ निर्च

न्य्र. ३१

र्च ३६०

से॰ ते नरहे संसारमाई क्रमे नहिर ३ अ॰ ऋणगारना १७ गुएाने विषे प॰ वली आचारंगना बे श्रुतस्कंषना २५ ऋध्ययनिसीयना ३ए २८ जसाधु त्र्याराधवानविषेजुदमकरसदाए से॰ ने नरहे संसारना है लमेनहि १० पा० २० पाप त्र्याववाना सुरुशास्त्रानामत तनात्र्याववाना सनभाग्रहमम जैब्जेसाथ जब पापशास्त्र त्र्यने मोहनीना स्वानक बानवानी सब्तेन रहेसंसारमा ह लमे नाह १० क्षिनसे द्वमं यानकने विष 11 विषेत्रदमकरे सदाए सनत्राह 5मम ल -कापाम्याने त्र्यादिनुंपहिलुजेसमयते सिकाँदिगुए। ३१ तेनेविषे जो०मनवचनकायाना समाजाग व्यापारतेना ३२ लंद। जे०जे साधु सिद्ध त्रप्रालीयणादिक तेने विर्ध ३३ त्र्यासा तनाने विष हिवाने विषे नुद्यमंकर मनवन्वनकायाना ३२ जोग ब्यापार समा प्रवरताववाने विषे नुद्रमकरे तेत्रीस त्र्यासातना । ६० एएँ प्रकार सनत्रवादमम् त ।। २०॥ बांन्याकरेसदाए से ब्रेनरहे संसारमां है एपूर्वे कह्योते वार्व्यानकनेविषे जेव जंसायु जर सदहवा नजवा पालवाने विषे नुद्रम् । रिक शौधते नरकादिक धगति हर सर्वसंसारयी विरु सूका ए जयइ शिया । करे सक सदाए रिवे पासे साई संसारा ॥

₹.39

.

છ. કુ**ક**ુઇ

इ॰ श्रीसुधर्मास्वामी जबूत्रतेकहे हे हे जंबू जेममे श्रीमहावीरदेव समीपे सांत्मध्युहतुं तेमकुं तुक्रप्रतेककुं २१॥ इतिचारित्तविहि ऋ अयए। एकती सइमें समत्त ॥ ३१ ॥ वुं भविती चारित्रविधीनामा एक त्रीसमुंत्र्यध्ययनसंपूर्ण ॥३१॥ ३१मे ऋध्ययने चारित्रपालद्वं कह्यं ते तो प्रमादने | सारवापरित्रमणाकरावे ्यागे पासे ते माटे ३२ माश्रध्ययने प्रमादना धानक देषाधीने प्रमादनायांनकराखवाकहै ते मारे प्रमाद संिती संसार केवी है स्विमिट्यातादिकमूर्योकरी सहित है सवस्विधगतिरूपपुरुष्ठपमयसंसार है तेनी पर मीन्त मूकाववी तं वे मूकाववी के वी हैलाव सहस्स इस्करस गुजापम्स्का तलास्डम पः प्रतिपूर्णि चित्तथकी है शिष्य तुम्हों सः सांतालो ए॰ एकांतिहतकारी है वितामोक्त तैने अपरथे ना॰ ज्ञानने सर्व मितिश्रुतादि पहिनरमेला करे अया मित अज्ञानादि मो । मिथ्यातमो इनीने वि । विशेष वर्जवेकरी रा । रागने हैं बने वसी नेपामे मोन्त करे केवों ने तब तेमोन्त पामवागएमारगयुब ज्ञानादिक युएं करी बना तेनी ला | दिव विशेष वर्जना करवी ऋज्ञानी जननी दुब दूरवी क्ति करे

.II.33

३११

सु० श्रुतत्र्यने त्र्यर्थ सं • सम्यक् प्रकारें चिं • चिंतवु एकाग्रपए वसी ३ त्र्या • वसीमोन्स ए० एकांत धानके नि० सेवना करवी सुत्त साचत्रायाधिकय पामवानी मारगमोक्त पामवाने अरथे साध्याहार इ॰ वां हेपए। मि॰ मर्यादा तेपए। एषिक स॰ सिब्या नि॰ वां हे पए। त्यता मोक्त दि सषाइयाने सहायामच निन्एहिना ना अरथनेविषे इदि वे जेनी निवर हवाना थानकने बांडे पए। विव स्त्री परक पंत्रगरहित तेपए। रिवाजोग्य सव। नः कदाचित्नः सः नपांमे ॥ ध ॥ चारित्रनीसमाधीनो वांबणहार साध तपसी नवासालख नि॰ त्नलाविवेकवंत स॰ सिष्यने नपांमे यु॰ ऋषवा युएरेकरी ऋधिक युएरेकरी सरघो ते पोते कार काम स्रोगने ऋर ऋसावधान यंको पवर्ते ५ जे॰ जेमवती ऋं॰ ईमाधी सुपना जहाय ए॰ एहीज मो॰ मोह नुपजवानु श्रा॰ धानकए तृष्णानु विशेषण बे खु॰ निश्चे त॰ तृष्णाने तीर्धकर्कहे मो॰ मोहने

332 2.

रा॰ मायाना लोल तेराग दो॰ कोध मान तेहेष न्य्र निश्चे वली क कर्मनाबीज कर्मनावली मो॰ मोहथी चपच कहेतीर्थिकर पु • पुषने वित जा॰ जन्ममरण कहे बे नममरणानु मूल लो॰लाल हिएगएग अहन तः तृष्णा हणाणा जहने न० नहीए रा॰ रागन यसी दो॰ इंपनेवली तब तिमल महिने नु॰ नुधरवानु का॰ जाचए। हार पुरर्षसे॰ मूल सहित ऋ अनुक्रम अगोकार करवा र॰ प्राणितप॰ घणा घणा न॰ न संववा प्तनाकरणहारनः किदीप्तपुरुषनेस्त्री संग्सामात्र्याविपीमानुषीएसाइः

For Private and Personal Use Only

333 .a.

किया उस्व वायरकरा सदित नाव्जुव • <u>१ च</u>पसमनपाम जुलाएनाह. सभारत नावसमनवड नः ब्रह्मचारीने नः हीन होए हेतने स्प्रयीं कः कर्याचन कोइ ब्रह्मचारीने अमणहारन पण वादन गपंमंगरहितासि॰ यानकपाटिपाटलादिकना जं॰ सेवएाहारना प॰ दूरकी घोटाल्यो वन ने रहवानी जाएगामन्यन लाली एनएड्रष्टांत इन्स्त्रीनानि रहिवाना वस्त्रवाना थानकन नही खं नहि युक्ती लर्ला निवास रहिवु १३ सं साधुतपसीहीए इवस्त्रीना सातवानादित सिं पाताना वितनेविषेनिवेस इत्ताव व- ब्रह्मचारी 30

. કુકુક

थापीने राषीने त्राथवा देषीने न वसे॰ निवंतवे श्राध्यवसायनाएं। एवा जे । वानां स्थिनावारु एम चिंतवेनहि तलालीनधाए ते । वामा केवा चित्तंभिनिवेस्यक्ता ॥ रुवः स्त्रीरुप तेशरीरनो त्र्याकार १ सवएं । सावन्यतेबोखवानी चतुराई २ विवासते वस्त्रादिकपेरवानी रचना ३ हासक मधुरु हे सबूं नेहने ७ जंपियं क मधुर यहाम हारा वचननी बोलवी ए इंगियं श्रंग छपांगनी मीमवी ६ एहियं व वांकी नजरें जोबूं अश्ववा ए अवाना वितमां धारेनहिं स्वाएक सदाएवंत्नचेरं । ब्रह्मचर्यनेविषे रया एां अराता के जेपुरव तेने इक्रिजणस्व स्त्रीजनने त्र्यदंसएं करानुबंधे करी त्र्यदरसने के समुचे एव त्र्यवधारणे त्र्यपन्नणं चःचका द्वववस्सेसमएतिवस्सी ॥ १८ ॥ त्यदं सर्गाचेव त्र्यपञ्चणंच ॥ स्त्रीनेसरागे त्र्यपर्वहं र त्र्यवितराचिव रबीचु त्यालिसाषानुं त्र्यएकरवूं त्र्याचितएां० सरागी रहपादिक चुत्र्यए चितवदुं धन्य समुचेएब० निश्चे त्र्यकित्तएां । सरागेनाम र्कं इ ते गुएाकीर्त्तननुं त्र्यएाकरबूं ५ च व पदपूरी ' का॰ जो कदाचित् दे॰ देवांगनाएं वि॰ वित्सूषाएं सहित न॰ त्राशक्यनहिं ध्यानते जोग्य बेसदाए हिं॰ हिननुकारण बेन्प्रदरसादिक ५ बोल १५ यजागा ॥ हियसयाबलचररयाए। ॥१५॥ त्र्यसंजनर्थि सं जमयी षो त्यायवाने विषे तब त्रए। एवा एसाधु बेत बतोहेयए। एव एकां तहित्तुं कारए। एमजाएँ। ने विवास्त्रियादिकरहित्<u>धानक ११ मुंसु</u> व

. ૩૩૫

माएाक्सन्मनुष्यनेपए सं संसारना परित्नमए थी ली । बीए वे तेने वि रह्यों वे तेने धर्म | न न ता नेह वो ए ब दोहे ससारलार स्सावयस्सयम्म जिं नेहवी स्त्री मूकतां दोहि सी स्त्रिने केहवी है बाव त्राज्ञानी नामन नी - । एव एस्त्री संबंधी यव पूरणे संगने संव नुसंघीने नि तानिया लाकने विषे हरएाहा ११३ । गंगासमापा • गंगानदीसरषात्र्यापुरानुतर का॰ कामलोगने विषे ऋ॰ऋलिताषा + लोकन सब्देवतासहित लोकन जब्जनवास बधी सरीरी खुष जै॰ जेम निरधाराई कंपाक हुन्तना फलने म० मननेरमणीक मा॰ मानसि पुरववली अप्रिए नव्ते प्रयमा अनेने गव पामवीतरागे वहो१ (८) पचमाणाः विपाकतीत्रप्रवस्थानेपाम्यायिकाएत सीकावकामलोगव्यानाविव फलनेविषेजी

ऋ:3२

3**3**8 9,

ला॰ मनने नकरे कि कारे पए। य॰ वली जे वेइं दियना वि विषय मे मनोज्ञ १३ श्रव श्रमनोज्ञने विषेमः का० बीं जए हार सब साधुनेपसी २१ हर्व चन्तु इंडीनी ऋषिकार १३ च नेत्रने २१ स्टब्स्य ग्राच्यहि वायोग्य है वर्ष नीर्यकरक है रू रह पने वयंति व तीर्यकरक है चस्त व नेत्रने कर्य त्युतंन व तमएमह मनाइन्हिपने ऋद ती येकर कहे क्येत्यून मएहए। हेनु व रागहेनु व रागनपजवानु हेतु बे तु व पूरणे दां अमण् । अमनानक्ष्पनं अप्राक्त विविकरकहे दीं वेदनुपजवानु हेतु वे सव नरियो राग देवरहित ११ यव्यवाजिकोई ते बेह्नने विवेसन कई क्यलून चक्त ऋवसं र रूपने यह एं र प्रदिवाजी यरूप सर ने बने गह एं र यह एहार र ऋवं र ऋपने वयंति र ती विकर कहे क्यें ल्यूनं चक्त सर नेत्रनगहणं • यहिवाजीग्य चस्कूरसं • नेत्रने ऋपवेतेत्रह श्रव श्रमनोज्ञ नीयेकर कहे २३ यहिवाजीयवी राज्यनाहेतुबे६१ सज्मनाङ्गरूपनेतीयकरकहे दि॰ इषनाहेतुने६३ वयं तीर्थकर कहे रागस्सहनु समएकन्नम

34.33

33**3**

मनोज्ञ रूपनेविषे जी॰ जेमूर्डाने पामे तीय न्या अकाले पांसे ते विवमरणने राव्रागेकरीपीम्या सेवतेजेमवाब्द्र्यथवा पतंग त्र्याव दीवो देषवाने विषे लाव त्निलपी यको जुब पांसमब्भरएनि २४ जोव जेपए। यावा ऋष देपीने नक कि वोद्रूप पए। २२० रूप अवन्यी अपराध करतीते एकरी स॰पोनान कीधं जीव सं॰ पीमान पाम त्र्यज्ञानी विच रागरहित श्रि॰ केर प्रवत एवा त्र्यासाने विषेप्रवतता स्टलमा स्ट्रपनावष अनेक प्रकारना श रख्नें करी तेथावरजीवने परितापना नुपजावे बा॰ अज्ञा नी बास के हवा व

₹ ३3C

कि रूमा रूपनेविषे रागडे ते पर सूर्जी सुप्जे रूपवंतवस्तुने विषे करे अन् मुप्जाववाने विषे रव तेवली चीरादिकना लयशी राषवाने विषे सव स्व मनाज्ञरूप लागववाना का व कालनावष यववित्रिक प्रकार त्रप्रस्थे त्रप्राववानेविषे विच्नांगर्व ते पताना तथापरना प्रयोजनने विनास थाए विएावे बते वली कि हांयकी सुध ते ऋपनारागी त्री श्रेपाकरतोथको ला॰ पामते बते हु मनो इस्पनोविषे त्र्यत्तियको य॰ वली तेने विषे मूर्वीपामे । बतो त्र्यवन्त्राति हे त्र्या निव्यामे संतो त्रा॰में त्रिको कहिए श्रदत्तने विषे २० ्इ० डुष बनो प॰ पारकी बस्ताने खो ॰ **खो लेक**री परात्रव्योर्थिको त्र्युर्व चोरीनोकरण हारतेकेवो रह रूपदेषवाने विषे त्र्युर्व त्र्यसंतोषी के रहपवंतपरियहमेल मानमायासहित मोन मुषाबाद ॥ वाने ऋसंतोषीने सीलनधे देषयंके त्वतिहां मृषावाद बोले बतेपए पुण्ड विभाग काए तेजीव मो मूषावादबोट्यायकीप - प्रवेपस्वा पु - पहिलुवली विद्यानविम्बद्यं ॥ ३०॥ ३० मासस्सप्रायपुरचनु

375-30

न ३९ए

तः म नोझ रूपने विषे राती न • नरने एम क किहांथी सुब होए क किवार पण ऋ॰ ऋतिहें इषोहीए ऋ॰ सजनादिकनी नि॰ नुपजावे जञ्जहर्न कार्शनिमित्ते प्रवर्गे ३२ ने विहासनोज्ञ रूपने ब्लॉगववानविषयण किलेस ऋने **चुष पामे** 30 जस स्व मनाज्ञस्यपनावय सबरहितवती जिल्पा एा

अ•३२

जु. ३८०

मा मनो इत्र बाब्दने त्याव तीर्यकरक है कथंत्वतं शब्दं संव सरधो राग है धरहिन जीव स॰ काननवयति वियकरकहे कयेल् त सो यस सहस्स व शब्दने गहण्व जीव जी मूर्वीने पामे तिवतीव श्रि॰ श्रकाल विती जैम इरिएकबोर्च मु॰ ऋज्ञानी स॰ शब्दने त्रप्रतृप्ती नुरुपाने मरणने जेन्जवलीपण स्प्रन्मागुश्ह्रद साल्द्रानिरी

双·33

3 C 9 D

इ॰ इदीत दोब देवेकरी पोताने की धे जीव त्र्यः नवीत्रपराध करती ३० ए० एकांत नु॰ पाम इषन ते ते ते पारान इषकरी मुख्या धु दिरागरहित ते सः ह्माशब्दने आः ग्रासाने विषे केम प्रवती व लीजीन पोर पोमानपजाव किलूते बास अठ त्र्यात्माना त्र्यरथ गुन्ला नक<u>मकारना जावना क</u>त्र्यनकमकारनशस्त्रकरी रितापना जपजाबब्राः ग्रानी रें जेने कि॰ मइल परिएगम सहित ब से तेशब्दना रागीने संव न्प्राववानं विष

ग्राउ३

र्ज ३८२

मनोज्ञ शब्दने त्र्यसंतोषीयको पन् मनोज्ञवीणादिकनापरियहने विषे त्र्यान्त्र्यासको नन् नपामे संतोष अव असंतोषीने ही दोषेकराने वसना अभ्यत्यत्यासन्बद्धत ली॰ लीलेकरी मध्व छ ए वित्तर्यको आर्व लीएवी एगादिक पारकी वस्त प॰ परियह मेलवाने विषे असं मा॰ मायासहित मृषावाद बोलवुवाधे लो॰ सीलने सन् शब्दने ऋसंतीषीने ॥ तोषीने तः निहापण मुषा बाति क्रते पुण्यपिनस्काए से निविधे जीव मोन्मूषाबाले मायासहित मृषा बोल 1183 11 खिवानी दिलिपोजीव पु॰ पहिलुपए। एवाचितानकर प॰मृषाबीलवाने त्र्यवसरे ते एमजाए। रषे कोइजूवा बोखी जाड़ी गीत गए बे तेना धणी श्रागले मृषाकेम बोलस्त्रश्रने केम करस्त त्रांतदोहे लोपांमे एक एपिए परें त्रादत्तने लेतियको सक मनोज्ञ शब्दने विषेत्राक्त्रासंतीषी यको प्रधीयको त्राक्

J-32

रा: ३८३ र॰ रक्त ड जमनुष्यन ए॰ एए। प्रकार किहाया सु॰ स्व हाएक॰ कहिए पए। या प्रूएपए। त॰ चि॰ बांधेकर्मतेजीव पु॰ प॰ देषेकरी पृष्ट चिंह चितनी धणी बि॰ रागरहित फुएतंमनोज्ञ वि॰ सोकरहित एंकरी पुर कमलनुं परपानहूं लिपाए नहि नेमविरक्त मनुष्य निर्देपाए ४७ षाव नासकान गर्वकस्त्रीय श्रा॰ एमकहतार येक्र

For Private and Personal Use Only

3⊂ક ગ

सन् समसरिषो त्नाव रागदेषरहिन जोन् जेको इते त्नलापाद्रया गंधनी गंन रहमापाद्रया गंधने विषेगः नासिका ते ग्रह्मणहार ने। घान नासकानीगंध हित्ने ऋ जैमनो झगंधबे ऋ एमकह मनोज्ञगथ् बेजा॰ जेकाई मूबोपाम तीव्रा त्र्या॰ जेमनोज्ञतया त्र्यमनीज्ञगधनविष यूबोपाति पुरुष त्र्यकार्षपामी सक त्रापणकीर्धजीवनक किन् शेमूर गंधत्रप्रकत्रपराध ाति॰ तीव्र त्राक्त तं वतेत्र्यवसरनेविषे नु पाम प्रवन ३० <u>प्रदोत्तदीय</u> स्विमनोझगंधने विषे ऋष् एसरषो त्रूंमो कोई बीजो गंधनहीं कुव करेएको इ • <u>५ पसंबंधनी</u> संबंधी

≯₹

र्जः ३८५

नः निंदाएन घरमाए ते॰ तेऐां रागद्वेषऋषी एवचनेकरीने साधु वि॰ रागरहित पुषनुपजावेबा व्यक्तानी फ्जिए श्रव्श्रापणा श्रात्मानी स्रर्थ गुव्मोटीजाएो ्रीप्रमुषचपराज्ञवानेविषे रः कस्तुरीप्रमुखसुगंध वए मनोज्ञगंधने लोगववानो का॰ कायनेविषे अ॰ अस तोषी फुएत सत्तावसता ननुवर

श्र ३२

ग्र ३८६

लो॰ पारकारकगंध इच्यदेषीने लोले करी महलुं दुष्टिचित्तयको त्र्या॰ सी एत्र्या॰ पारकी सुगंधड्यदेषीने ५५ सुगंधद्व्यनेविषेत्र्यसंतोषीने प०सगंधद्व्यकस्तूरी प्रमुपनु परिग्रह मेलवाने विषेत्र्यसंतोषीने यञ्बाधं ऋयेवा मृषा वादबो संचानं विषे प्रवरते लोग लोलनेदीषयेकी तोली सगंधडव्यनी चोरीकर पर्व को इपूर्वती से विषेजीवमृषाबाख्या तिपीजीव पञ्चाहिने ५व्यनाधिएरी ऋगितस्वाकमबाद ए॰ एपिपरें ऋ॰ सुगंधद्वय ऋदत्त सब्सेतीयको गं ॰ सुगंधनेवि सु पर मृषाबालवानकार अवसरे तेमु जने ज्रवाबीली त्नणावसी ७० ७षी होए ७० ७षनो त्र्यंतदोहेसोपांमे तोषियको पु० पुषी होए त्र्या त्र्यायमाटे तेनुको इनुपर वीर गं॰ मनो झगंधने विषे जे रह रक्त वे ते

74·37

ट**ा** टाइ

तर तिहां मनोज्ञ गंधलोग न्य्राववाने विषेपण किर किलेस पुष एनषरमाए ला॰ सं सारमापए। बती जा॰ कि छ। जी जीत्नेने रु॰ तीषा मधुरादिक रसनास्वादन गु॰ ग्रहवाजीग्यो रसना स्वादे ने त्राव एमक हे तीर्थिकर नं वते रसदीव देवनाहे तु ब

श्रम ३२

३८८ ज

त्रज्ञानी नः नादिंपाए ते ने ते ऐरागदेष रूपिएक चरेकरी मुक्साधु विक्रागरहित रक रूपार्स ॥ नालिप्पञ्च ते ए। सुए। विरागे इषत्नाव

AT-32

For Private and Personal Use Only

उट्ट १८३६

किर्म प्रवर्ति आ॰ रहनारसतीषादिक नी त्र्यासाए पी॰ परजीवने पीमानुपाए ऋ० ऋापए।।ऋात्माने ऋरवैजे यु॰ मीटाजाए। ते कि॰ रागदिकनेपरिएगमे दनेविषे ऋ ऋासक ययोयके प॰ परिग्रहण करवानी जि॰ तीषामधुरादिकरसनास्वादकारएरी वस्त नुपजवाविषे सं ० तीषादिकरसना वः विनासते विएवि बते विः मनो इत्सना स्वादवि जोग कुएयके कः कि हा यकी मनी इरसना स्वादत्भोगववानाका लनेविषे त्राक त्र्यसं तोष कुए सम्बहीएसे॰तेजीव सं॰ संलोगकालयत्रातालाल रः मनोङ्गरसँनास्वादनेविषे त्राः त्रासं तोषयको पञ्चली तीषादि रसना। सः त्रासक्तत्र्यत्यंतनः नपामे संतोषने त्राः त्रासंतोषी सम्बहाए परिश्रह मेलववाने विषे रसंत्र्यती तयपारग्गहाम नेदोषंकरीपुरु तेजीव पुषी होए पारका रसना श्राव महतुं प्रश्चित्तयको लीए श्रव श्रप्प दीधापारका तब्बट्रसँनेद्योत्में ॥ ६०॥ रस ६० तएहालिल्य

ग्र.३३

म् ३००

न्या परात्नव्यो फुए तेने चोरीना करए। हारने रव षट्रसानेविषेत्र्यव त्र्यसंतीषी ने पन्षट्रसानुपरियह मेलवानेविषेत्र्यसंतीषी ने माव मायासहित मीव वुं वरु वाधेतथा मृषाबादबोलवानेविषे प्रवरते लोट लोलाना देषयी तरोतहां पणम्षाबोले पुरु प्रविकानन मोव सूबाबोल्योप व पर्व पश्चान्ताप करे नमूकाएतरसनो सोसपीजीव रस लोलपीजीव पुरुपहिल्पएा एवी बिता करे घट रसना घणी प॰ मृषाबोस का॰ त्र्यवसरे तेएम जाएी रषेकोड मुजनेजुठा बोलोजाए त्र्यागले मृषा केमबोलसं एने केम करकं र्श्यंत दोहे लोपांने एवए एपिपरें त्राव षड् रसादिक त्रादत्त लेतीयकोमनोझषट्रसनेविषेत्राव त्राव त्रावीयको हु वहावी होए बाव क्यान्यायमाटे तेतु ्।। रसत्रम्ताता प्रहिन्त्र्याणे स्सी रु मनोज्ञ षट्रसना स्वादनु जे त्रा न्यानुरक्त ने नन तेमनुष्यने एन एएरें प्रकारें कनके हांथकी कन सुषहोए कन कहिएं कतासह हास कया शकाच l-u स्वाद त्नो॰ त्नोगे त्र्याववानेपए। क लेस ५ षपां मे । नि॰ नीपँजावे जे॰ जेमनोज्ञ षटरसना स्वाद त्नोगववानी निवत्त के जस्सक एए। कुरका ॥ ३१॥ कार्जे उसक

71.32

3698

जं जे कमीते जीव वलीही व्हीए पुच पुषकारिया । अ ३२ द्वपाम ५० ५ बना समूहनी प॰ श्रेएी प॰ देषें करी इष्ट चि॰ क्तिनो धणी बांधेक में रण्षटरसना मनो झस्यादनेविषे विक रागादिकरहितमनुष्यशोकरहितयको ए०एपूर्वे कहाते प्रधना समू अ॰ जैमपाँदीए पु॰ कम अनु प॰ पानकू विपाए नहि तेमविरक्त मन का०का काव्य कहर याने ताढा जनादिक फरस गंग यहवा जोग्य के एमक है तीरधंकर तंग ते रागना हेतु के मन मनो झ फर्स के न्या । एम कह ती दोषनो हेत् छे त्रा त्रामनोझ फरसबे ते एम कहे तिथिकर सब्समी सरषो लाव राग है बरहित कुएँ जो ब जे कोई ते लिखा पा हुया फरसने वि का॰ कायानो फरस ग॰ ग्रहवाजोग्यव॰ एमकहेती तं॰रागनु हेतु वे पूरए फा॰फरसताढानुनादिकनेका॰ कायाएकश सहए।हारव॰

છ_{ે.} રૂળર

तं ते हेपनु हेत् के त्राव त्रामनोज्ञ फरसके ते एम कहे तीरये कर राव रागिकरी पीमयो वे सीवसीतल पाएपिनेविषे अव रह्यो बतो गाव्याह ऋ ऋकाल पा॰ पार्म ते मरएाने रागान्रसायज जे॰ जेकोई पारुया फरस पामतीब्र मरएा पाम्या उ६ स॰ त्र्यापणोकीधेजीव न॰ थोरूइ फरस त्र्यं त्र्यपराध करना नथी ते जीव ३९ मा ताढी दिक फरसने विषेत्रप्र एसरषी बीजिंसे व ते जीव करेएवी ३० इष्सवधी संच्यीमा पामे त्राज्ञानी नः निलपाए नष्रमाए ते वे

4.41

३ए२

इ७३ नु

वि॰ घणे प्रकारने सस्त्रेंकरी तेफरस त्योगववानेविषेजीव पन परजीवने पी॰ परजीवने पीमा लुपाए त्र्यान त्र्यापणा त्र्यात्मानोत्र्यर्थ पुषनुपनावेबाः त्र्यज्ञानी न नवांफरसन पराजवाने विषे रव चौरादिक राषवाने विषे संलोगे। वव रहमा फरसनो विनास जिएयक विव हरमा फरसनाविजाँग वसी कव त्र्याववाने**विषे** सं॰ फरस लोगेत्र्याववानेविषे का॰कालनेविषे ऋ॰ ऋसंतोषकुएयके किहांथी सम्बहीए ए । सन् न्यासक्त न्यत्यंत न्यासक्तयको जीव नन् नपांमे संतीष त्र्यन त्र्यसंतीषदोषंकरी मेलवानेविषे त्रप्रता त्राव महतु प्रश्चित्तयको त्राव तीए त्राव स्त्रा सहाता

न्यः ३२

3બિક નુ_:

विषे असंतोषीने तनतिहां पए। मुषाबी ते कते कु उपयी नमूकाए ते का फरसनी मो॰मृषाबोले प॰पर्वपश्चा रहमाफरसने चौरीकरे है पढ़े की इपूर्व त्तापकरेरूमा फरस लोगववानो लोली पु॰ पहिल्पण एवी ए॰ एएिएरें पारका रूमा फरस त्र्यदत्त सब दोत्तीयको रूमाफरसने। दुधी हो ए त्र्यन्त्रायमाटेतेनु को इन दोहेलो पांमे माफ्रस्त लो॰ लोगन्त्राववाने विषे कि॰ कलसपुषपाम नि॰ नीपजावे ज॰ जेमें र फार्क्सिफर स्ट्रेविये **८ ध** ॥ क॰ कार्ज उष ए ध एमव फासाम

श्र-3३

३ए।५ इरा५

ग० पह्न तो यको प॰ देषला अ॰ उपना समूहनी श्रेणी प॰ देषें करी उषु चित्तें करी फरसनेविषे वि॰ चुषनी ए पुरु पुषकारियाविपाक इहसोकपरलोकनेविषे ८५ फा॰ ताढा रूमादि पपूर्व कहीत ५० ५ षना समूहनी श्रेणीएक स जः जेमपाएरिएकरी पुः कमलनापलास तपान मां निलेपाएतमविरक्तमनुष्यनविपाए मन्मनने लाव जीवनी परिएगम त्र्यासा ते ग्वयहवा जाग्यवन ए६ हवे मनना १३ काव्यके ह मन मनोज्ञस्यत्नाव के ते त्र्याव एमक है। तंव तेजीय इषनोहेतु त्र्यव त्र्यम्नोज्ञ लाव के ते त्र्याव एम लीव त्नावने में चमनने गव्यहणकरे व्व एमक हैती मक्मनन त्माव्गक ग्रहवाजीय ये एम कहतीर । रथंकर

ग्रा3२

३ए५

उ ३७६

सन जीमनीझ लावने तें न्यान एमकहेती दो॰ देपनो हेतु बे ऋ॰ ऋमनोज्ञालाव ऋा॰ एम कह तीर्थकर ८ ए जा॰ ज कार्र गृद्ध मूबा गु॰पाम तीव्र त्रा॰ त्राकालेपाम ते वि•मरएा गृ दयक हायए। काँगलनी जिहांहती हायिए। ने मिलवानी न्यासा एं चाल्यों ग० तेमारगने विषे ऋ हत्यु जेम हाथी **५०५ दोत दो॰ इंपेकरी स॰ त्र्यापएो कींघेजीव यो**ई तं व तेलाव प्रवरत्वाना रव व त्र्यवसरने विषे ते जीव पांमे तासकारा सन्न व व ५ ५ ५० करी जी वित्तव्या पदारथने लाव त्यास्या त्र्यं व्यापराध ५० ५ पसंबंधनी स॰ पीमा पामे बा॰ ऋजानी

双.32

•

३५<u>५</u>

ला॰ लावनेकेनप्रवत्तेत्र्या॰ रहमा लावधीत्र्यासाएप्रवर्तताजी व च॰ त्रसजीवने धावरजीवने हुए। त्रब्धणा ते लावनोत्र्यरथी जीवपरजीवने पुषनुपजाव बा॰ स्रज्ञानी ऋ॰ स्रात्माने ऋधै त्ना॰ रहमा अत्तम अधादिक ने रोगेकरी प॰ रहमात्नाव ने ग्रह एक रवानी नु रहमा जपजाववान विष रव चौरादिक राषवानविष सवस्हमा नुपजें तेऐंकरी पर्णित्रवर्तावी व॰ ऋमात्नावनीविजीगयक क॰ किहायी सुषहीए तजीव स॰ ऋमात्नावलाग Ø 3 स॰ त्रासक्त त्रत्यत त्रासक्त बनी न॰ नपार्म त्र्यव त्र्यसतीय यका पर क्रमेक् ग्रह में लवाने विष त्र्यः महलुदुष्टाचित्तयकातीएत्र्यं त्र्यदत्त त्र लात्मकरा ऋञ्पर 38

स्र ३२

इंधाट जुब

ला॰ लावनविष त्र्यासानविष त्र्याः त्र्यस्तिषीन पन्परियह मैलवाने थि। ताला चरिकरेपबेकोइपूर्व तीमाया सहित मुषा बोले पि मृषाबोलवानित्रप्रवसर न्त्रागल मृषाकमबा लेतीयको का कहा पए। यो कूए पए। विषे कि॰ किँदीसष्ट्रषपांमीनि॰ नीपजार्वे जिं लोगे त्राववाने काजें छष एउ एक एएए) परे ल ३॥

ऋ:३२

नः ३०७

चिन चितनीधणी वाधेकर्म जन्जे तेजीवने पुन्वली होए ६० प्रथकारिया विपाक इहसोकपरसोक लाक लायन दिषे त्र्यासाने विषे रू रहित्यको मनुष्यविक स्रोक ए॰ पूर्व कहीते खुषना समूहनी श्रेणी करीन व निलपाए नषरनाए लब्स सारमाहेपए।वि॰बनाजि॰ जमपाए।एपु॰ कमलनु पानरू विपाएनहि तिम विरक्त मनुष्य नितिपाए एए स २ गंध ३फ रस वर्ती मन ऋ ऋरयुव इ॰ इपनाहत्व मन्मनुष्यनेराव केवामनुष्यनरावराग ाश्र्यवि पूर्णि निश्चें थीव थीमा एपए। किवारे ३० इषने वीयराग सब कहंबीतराग न॰ का॰ कामत्नागजन सब्समतालावनप ववध नव्याव अविव स्मोगकाम स्मोगपए। नुघेति, ननुपजाये जैवजीवते प्यव इषकोए नुपजाये ने विपास्

ग्र-३२

1500

*೩*೦೦ ೨.

को॰ क्रोधने बली मा॰ माननेवालि त॰तेमजमायाने तो॰ लोलने ५० प्रगबाने त्र्रा॰ त्रारीने -रतीने न्व नपुंसकना वेदेविकारने विबविधिप्रकारना बली त्नाव हर्षविषादादिक ए१४ बोलनेमाहे ए॰ पूर्वी क राग देव नाविकार न्त्रा॰ त्रानेक प्रकारना उपपान एवा का॰ कामलागनागु एनिविषे त्र्यासक्त क्र एते ए० यवव प्रकारना डुष पांमेको ए। पांमे प्प॰ नुपना ऋन्ने॰ ऋनेरा बीजा विसेषे पुरगती पोचारे एवा व्यसनादिकने का॰ दयामणी नुसीयाली दीन होएह० विशेषेन पांगे ते त्र्यासक्त केवी हीए कः त्राचारनेन ॰ नवां है सब शिष्यादिकने वां है तोयको एत ले सेवा करवा श्राचार पासवा न पञाएक तेइ तपकी धा पढी बराबरी बेद पांमती बतो व ली पर पत्र्वात्ताप करेवे करी तावेयत्वपत्नावं ॥ त॰ तेकमी निर्जरा करशी तेने नवांबे

. . . .

For Private and Personal Use Only

1908 20.

६० इंडियरूपिया चो० चोरने वस पम्योधको तः इंडियने तेइ जे लुपजे पः हिंसादिक विषय सेववानां निः बुनामवानेकाजें पीतानात्रा तन्स जायात पन्यणाड 808 11 80A सु॰ संसारना सुपनी गवेषी ५० ५ पटालवाने विषेते हिंसा दिकने पप॰ नपायने न ॰ न दामवंत होए राग है पीयकों तपचय नुधमएयरागा विरद्य वृद्याव प्यगाराव जेतला प्रकारना हे तेतला प्रकारना सदाएयाव शब्दादिक निष्यायीव ते सघला एपए। तसव ते विरद्यमाए। विषयी निवरत्या जे इंडिय बाव इंडीना ऋर्थ सबेव सदाइयाता वइयपाग मि रहमा शब्दादिकने रागपणाने विषे वार त्र्यप्रवानि मणुत्र्यण र त्र्माशब्दादिकनेविषे त्र्यः । पणे निवर्तवंत ए॰एऐं प्रकारे निवत्तयति अमएक ए।यवा एवससक सं ते पोताना संकत्प ऋध्यवसायने विचारणाने विषे गु सावधान बेरूमा ऋध्यवसाए प्रवर्ती तेपुरवने ऋब बिजी स॰ मयन समतापण संजायन नपजी वादिक पदारथनें सं वितवता तक ते समताथकी से व ते पुरष ही एत परे का कामगु एतनेविवे तक तृष्पाहीनपरे से ते तृष्णाना लोगवूएहार ब्रिक लूत

याः ३२

808

र्ग १०:

ख्व खुएमात्रमां तन्तेमन जंन्जेकर्म चयुदरसनादिक त्यार त्यावरणावेतेएतले सब सर्वपदारवनेतनतिवारेजाव जाएो पाव देषेवली जत्रप्रतरायप करङ्कम्म ॥ १०८॥ तन त्र्याः त्रानुषात् क्षपकती यो ना कान पामस्बर्ध ए कमे रहित न्त्राच्यात्रवरहित झाच्यानेकरी त्र्यने सब्समाधी करी सहितयको त्र्यानतए मास्कम्ब जंब जेवा एयंबए प्रतन्ते सथयं व नीरं तरजीयने बाह्य इव पीना नुपजावे बे एवा ह सांह ते मोन्सना पांमणहार जीवनंते सब सर्व प्रवी मुकाणा दीः सांबीयितीनाकर्मरूपोवे विसेषंप्पः मूकाएम के कार जैसर्व कारज जेएं तर तिवारेमुक्ति गयापबी हो होए अत्यंत साधी सिद्याए पः प्रशंसा करवा जीग्य विक्कारी तीर्यकरें जेवमोक्तमारगपामीने न्त्रव त्र्यनादिकालन् पा० नपजपुस्तवसर्व प्रधना पर मुकाववानी मार्ग सद्दरसङ्करसप मास्क म गा

803

हत्य इत्स

६० इतिश्रीप्रमाद स्पान ऋध्ययन बत्रीस्य उठ्य क्र कक्त्र १११ कः त्रनुक्रमेएा ऋ चएा सुरवी लः बत्रीसमात्र्यथ्ययननेविषे प्रगादना स्थानक कह्या ते प्रमाद ऋ सारकम पिकी जीवकर्मबाध ते ३३ मां न्य्रध्ययननेविषे प कर्मनी प्रकृति कहे वे जि॰ जेम हे आवकर्मतीम त्र्यनुक्रमें जेन जेएों कर्में करी हं धाएगे ए जीव सं॰ संसारनेविषे ना॰ हार्निन आवरे तेम सूर्यनी कांतिने वादल ढांके तेम ते दंग्दरसन केहे ता देपदू ते आठ ढांके तेम वे॰ वेदनी कर्मने मध्य परम्या ज्ञानावरणी करम + षमगनी लपमा त्र्याः त्र्यानुषाकर्मनी हमेनीलपमा तरु तेमजएहवे ए कमी नारु नामकर्मवी तरागनी **लपमा** गोर्श्वक ॥ २ ॥ नानामकहं व नामकस्मच तहामाह नुपमा श्रीं श्रीतरायकमीनी लंभारीनी नुपमा ए॰एए। मकारें ए सघलाएक में श्रा॰ श्रा॰ कम सन्तेपथकी जाए। बा एमूल मकात कह उ हवन श्रववन्समास्न

શ∘ત નુ.

प्रकारें स्क •सिद्धां ततुं जे त्र्याचरएा क्रएतेश्वतज्ञानावरएी ऋ•मतिज्ञानने जे त्र्याचरे | **ज्ञानावरएी वसी त्रीज़ं** | निब्स्षे जांगे तेनि ५। तब्तैमज नुत्भा बेबा त्यावे । निब्ध बेजगानी पते निद्धानिद्यापवबाटे जातां निदात्रमाने ते प्रचला त॰ तिवारपनी थि॰ चारधी त्रेप्यकी पं•पाचमीनिदाहोए जाएावी ५ तेचन्द्रादर्शनावरणि ऋवकांनेकरी शब्दसांत्मस्यायी जांणे एम बीजे इंदिएंकरी) + ऋए तैऋविय जाएावानु त्र्यावरए। क्लए नु॰ त्र्यविद्यानेकरी देषवानुं त्र्यावरए। ∔ दर्शनावरिए। वरए। क्लएतेकवलदसेनावरणीए । एमवली नाःजाए। बूंद व दरसनावरणी कमें ६ व । वेदनी कमें पए। सार साता वेदनीकर्मना बरु त्र्याव त्मेदजांएावा ए०एऐप्रकारे त्र्युरु त्र्यसाता वेदनीनापए ट मकार त्र्यः बाज् श्रासाता वेदनीकमकद्य जाएावा सायस्सन

Æ.33

शुक्छ

धन्प य

मो॰ मोहनी कर्मनापण वे प्रकार | द॰ दरसनमोहनी अपने चारित्रमोहनीकर्म तेपद॰ दरसनमोहनीकर्म ति॰ त्रणप्रकारे कह्य स॰ समिकतने सार्थमोहोयो न्यामि बतं नथी मिथ्यात सक सम्यकत्ववेदनी चन मिक मिथ्याते वदनी त्र्यंतरास मध्यलारी पवते वे एतसे मिट्याती रसत्नाव नुपनी त्र्यने समिकत ए० एपूर्वे कहीते तिरुत्रए प्रकृति मोर महिनीकर्म सामी थयो पए। समाकितमां त्र्यावी सक्यो नथी विचमांज हे तेने समामिहात वेदनी कही दं वरसन मोहनीकर्मधी ए चन्चारित्र मोहनी कर्म पूर्वे विच त्मगवंतें च पूरपी नो नोकषाय त तिमज १० सो॰ क्रीयना ४ लीद त्र्यनंतानुबंधिन त्र्यमत्याष्यानिन मत्याष्यानावरणी संजवन ४ साससाबहल ध सीत्मनाध लेदकोधकमीपूर्णी क०कषायथी जेनुपना तेकषाय मोहनीकमी स० सातप्रकारे पए। क्रिय साहास्य १रति २ त्र्यरित ३ त्मयध सत्तिवहवा नवविहवा । कमानो कसायज ॥११॥ शोक ५ छगंबा६ वेद ७ ए ७ प्रकारना नव लेदकी जी तीप्रकष्वेदर

छ० ५

स्त्री वेद २ नपुसक वेद ३ एम करतां ए। त्रेदनो ए ए नोकषायधी अपना नारकी नुज्यानुषु १ तियेचनु न्यानुषु २ मन्मनुष्य । न्यः ३३ ३ दरसन मोहनी ३१६ कषाय ए नोकषाय १८ मोहनीनी हवे स्त्रानुषाकमेकेले देव्देवतानुं त्र्यानुषु ए चीयी प्रकार त्र्यानुषा कर्म चव च्यारप्रकारें १२ नाव नामकर्म तुव पूरएी ५० वे नामकर्म अशुलनाम आ० कह्यं लगवत स्० स्लनामकमे व० घए।। लंदब ए॰ एमज श्र॰ श्रस्तलनामकमना घणा लेवत सलस्सन नु॰ नंचागोत्रपतित्र्यादिक त्र्याः कह्यं लगवंते जुः नंचगोत्र ८ प्रकारे होए नंची जात १ नंचूकुल २ नंचोबल ३ नंचो ॥ रूप धनुचीतप ५ नचा सिद्धांतना न च त्र्य वावह हा एए। प्रकार नी चगीत्रपटा ट प्रकारें दा वाननेविषे साव सालनेविषे लोगनेविषेपुष्पादिक एवाएतेनेविषे कह्म लगवंते १४ नु नुपत्नीगनेविषे वी व बलवीयने विषे त निम्पं न्यानप्रकारे ऋंतराय कर्म वि कहा लगवत १५ पचावह मतराय

808

803 D-

मूरु मूल प्रकृतिकही या वाली नुत्तरप्रकृति सरवाले हवे इच्यवी सर्व यईने एकसो ने बा प् कर्मना पुदगल जीव केतला बार्थ केतलापदी नुतेरथाएत्र्या॰ कही । नुत्तरान्य स्त्राहिय बंधे होए तेममाण कहिएं खि॰ ते पुद्रगल कीण बेत्र केतिब दिसाना त्र्याच्या होए श्रयवा वली ला॰ लावतेकमेना पुदगल बाध्या ब ते ग्रहीनेपए। कर्मपएों बांधे काव वाली ते कर्मनी के ताला कालनी यिती होए लाववाव लोगववानी केतलाक नुदय त्रावे ए ४ नु स॰ सद्यला श्राव क॰ कर्मना पन्पुदगलबाधैबने त्र्यनंता त्र्यनंता मत्येकर सहासचव कम्मा ग० त्र्यलव्यजीवयी त्र्यनंतगुए। त्र्यधिक सि॰ सि इने त्र्यनंतमे लागे त्र्या॰ एमक ह्यं एतर्स कर्मना पुदगस षंध ऋनंत प्रदेसी जाएावा. वंध ऋनंत स॰ सर्व जीव कम बाधवानेकाजे ते पुदगल सं॰ संग्रह करवाने विषे प्रवर्त बे॰ पूर्व पश्चमलत्तर कतस। दिसना स्त्राव्या पुरगल ते के वे सहजावा सगहबादसागय सब सघलाजीवना प्रदेसनेविषे सब्सवेकॅमेना पुद्गब सब त्र्यापए। जीवना सघला प्रदेस सघाते बंब कमेनी महण

水33

Cle D

ध[ु] ज नेम बांध्यापनी स = सन्कारी गुरु समुद्रसरष नाम सागरी पम अं॰ अंतरमु ह्तर्त जघन्य यिति श्रा॰ ज्ञानावरणीकमत्र्यनंदरसनावरणिकम सबसीतेर **।।** कही लगवंतें २० ति॰ तेत्रीस सागरोपम नु॰ नुत्रशी श्रेष्ट श्रीतमुक्तत ज•जघन्ययिति २१ वि॰ यिति स्राजुषाकर्मनी त्र्यतरमुक्ततं ज॰ २२ ना॰ नाम कर्म अनेगात्रकर्मनीनु॰ नुत्क्रिथिति अर् आव्यक्तिनी ज॰ जघन्य २३ वी॰ वीस कोना को नि

ग्रा:33

មួនប

શુ કુ

सि॰ सर्व सिद्धते अपनंतमें लागे जेतला अपनंता थाए नेतला। अ॰ त्नीगववाना एक समें ल॰ होए एतला लोगवे बे जिवारे क्मेना पुरगलना षघ षंधजैतले परमा एकए थाए ते कहे ने पञ्चता २ परमा एक गएी तो सँ अधिकार अनंत गुएी आधि-का थाए तेलाए। वरतमानकाले त्रमनुलाग लागववाजाग्य त्रमनत प्रदेशिया एके का वंधनेविषेत्रमनता २ परमाएम बे ते परमाएए सर्वजीवधी अनंत हे एतला अनंता है परमाएक लोगवीने निरंजरे हे ए चोधालावनी बोलजाएगो लएति ए॰ एकर्मने बांधनहीं पूरणे विव जाएरिन नाजाए। इ॰ इतिश्रीत्र्यावकर्म प्रकृतिनामा त्र्यध्ययनं तेतीसम् समाप्त ॥ ३३ ॥ तेत्रीसमा त्र्यध्ययनने स्यायकी ते लएगि ३६ मात्रप्रध्य ले॰ संस्थान्त्रध्ययन प॰ कहक्त श्रा॰ त्रानुक्रम यनने विषे ब सेस्या कहिए

₹.3U

धिवर्ष

धर् धर

न्त्रक तेलेस्यानी रस् सुक्सालाल मुजनेक हेब्ते नाक लेस्यानाम । वक लेस्यानावर्ण २ लेस्याना क कर्म लेस्या कर्मनी स्थिति निपजावे ते लिए। ना गंध ध लेस्याना फरस ५ लेस्याना परिएाम ६ ल॰ लेस्याना लन्कए। अ॰ लेस्यानायानक ८ लेस्यानी थिति ग॰ लूंपी लेसाएं इरगति ले॰ ले रुरी लेस्याए सदगति श्राह लेस्यान श्रानुष स्याना ११ बोल सालल हे शिष्य गुरु कहे मे च मुनने कहतायका कि॰ क्रब्एा वेस्या १ नीव वेस्या कार्पान वेस्या ३ तेज वेस्या ७ पद्म वेस्या ॥ २॥ इवेलेस्यानानामकहे वे ाकन्हाना लाका <u>ज</u>ुत्न सार सुकल संस्थावली बर बरु नार संस्थानां एनांम जर जेमबे तेम त्र्यनुक्रमें बीजू दार हर्व संस्थाना जी॰मेघपाए। साहित इत्ति नि॰ चीपनादीस । नामाइत्जहकम्म ॥३॥ वर्ण कहे बे ग॰ पानाना सीगसरवा न्य्रव्यरिंग सरवारवन्यानानु गएाना मेलसरवा न० काजूत सरवात्र्यावनी क० कृष्णलेस्यावर्णी काली आएाबी ध त्सान्य एन नी-नीलोजेबो असोकवृक्त क्रिएतेसरषा चान चाष पंषीना पीन सरषा वे॰ वेमूर्यरत्न जेवं नि॰ चोपहं ही सेतसरपुं नी॰ नीयलंस्या वरुष्यान इसकासा ।नायसंसान नीलासागसकासा चासापञ्चसमप्पला

ऋ.३४

490

धर् धर्

वएियीनीसी जाएावी ५ स्त्र॰ त्र्यससीयाना फूल सरपा पार्वानी श्रीवा कोटसरषा को को इसनी पाष सरबी ५ ल इ द सा च ला तलेस्याव॰ वर्णयीकांइक काली कांइ कराती हि॰ हीगली धा॰ कोइक धातु विशेष त॰ नुगता सूर्य सरवा सर्षीप॰वीवासर्षाते॰ तेजु लेख्याना य॰वएयिकी एतोजाएावो ९ इ० हरित्र्यालनाक टकासर्षी इ॰ह खदना कटका सर्पो हारयाल लदसका सा मावनस्पती वीनु वनस्पतिकु क फूलसरबी पर पद्म लेस्यावर्णियी पीली जाएावी ए संग् संख् स्प्रनेत्र्यक नामा रत्न खी • दूधनी बीर सरबी 11211 सु॰ सकल लेस्या वर्ण थी नुजली जाएवी ए इवेसेस्याना जें जैम क रूया तुबिमानी रस निविषिषमा रिक्रिएगिनामावनस्पति सरीरनी ए एपकीपए स्मनंतगए। रव रसना स्वादक कृष्ण अस्यानी ऋति कमू न जाणवी १० जननी स्वाद जहा

ઇ ધ્ર

तिबिकट् संवरीपर त्र्यने मिस्च ए त्रएानु तिब तीषो जहवी जब्जीम पीपरनी स्वाद क्रए ए॰ एथकी पए। ऋनतरुए। नी॰ नील लेस्यानी जाएावी ११ जिं जीम काची त्र्यांबानी रस स्वादक्षए ए॰ एथकीपए। त्र्यनंतगु एर्रे कसायला रसनी स्वाद कापीत लेख्यानीजाएवो १२ ज॰ जीम पाका त्र्यांबाना रसस्वाद पर पाका कोवना फलनो पए। जार जेवो स्वाद फ्लए एर एयकीपण त्र्यनंत गुए। र० काइक षाट काइक मीव ते विनविविध प्रकारनाजेवोस्वाद फ्लए त्र्यान्त्र्यासवना जेवो स्वाद फ्लए मन्माषी दुनी पायो म ज़र्वस्थानी जाएावी च०प्रधान वा॰ मदनाजीवी रस भ में तासवुक्तना नीपनामदी एवं एथकीपण लेस्यानी पव नुत्ऋषी स्वाद रवन्त्वज्ञर त्र्यने दावनो जेवी स्वाद कूए खीव दूधनी जेवी स्वाद क्रए

For Private and Personal Use Only

र्जः ध१३

रू मीर्ग स्वाद सुरु सुकल लेस्यानी जाएावी १५ जे • जमगाएनाममान खं खारनी साकरनी ए एपकी परा स्मनत गुण सु॰ कूतराना मनानी जि॰ जैम सर्पना मनानी ल• संस्या एयकीपण ऋणत गुणा - सेस्यानी किन्त्रणपण तेजी १ पद्म २ सकस फरस कहरे ए॰ एयकी पए। ऋन तरा ए। कवए करवतनी जेवी फरस एा ऋ ऋमसस्त कृष्णा १ नीत २ कार्पात ३ जञ्जेमबूरु बूरनामा वनस्पतिनो त्र्याते सुद्धायी नञ्माखणानी फसे सरु सरिसनामा 119511 **अपसहा**ण १८

For Private and Personal Use Only

શ્ક હ્યું.

ए॰ एथकी पए। त्र्यनंत गुणोसुहालोफस्स प॰ प्रसस्त ललीपए। वेस्या ति॰ त्रपानोपए। ८ १ लंदपणयाए पूर्व बसेत्रतासीस लंदपण याए लंब वे एम २७ लेंद्रपए। याए एम करता तिवहानवायहावा प॰ पाच स्त्राश्रवनी संवराहार प्रयमकृष्ण पस्यानापुष ताहित्रगुत्त खु - परिएगामेकरी सहित सबीजीवने त्र्याहेतकारी साव जीवघातकरवा पिरानधातनो करणहार ति॰ तीव्रपपो साहसीक मनुष्य २१ त्र्यार लनी ए॰ पूर्व कह्या ते स॰ मनवचनकायाना पापने क॰ कृष्ण सेस्याना पूरणी निन्जाबहणाता सगरहित ऋजितंडी । व्यापारक ६० परनायुणना अए। सहवा अ० घणु कदायहतपरहितलापी त्र्यविद्य विधारहित मायात्र्यहिरियताय।

न्ध्र ध्रुष

सः इषलायसहित सः धुरप्रमादरः रसस्वादनो लंपट साः पोतानागर्वषणाहार २३ श्राः त्रारत्नयको निवरत्यो नहीं म्प्रणविमासा कारजनी ए० एवं पापच्यापार करी ० वांक्रबोले बांकाकार निवनिवन मायासहित जनाकरणहार मनवचन कायायी परजीव नुबल माथ चारवू वचनना बांसए।हार का॰ कापोत्तलेस्याने तु॰ पूरणे प॰ परिएासे २६ हवेतेजीलेस्या ना सन्क्ए इंडीनोदमणहार जो॰ स्वाध्यायादिकना ब्यापार सिहेत विश्वनियं करवाने विषेदं र जागवजव हा एव

ध१५

र्च धश्६

पि॰ धर्म जेनेवसल बे र॰ धर्मने विषे निश्च | य॰ पाप धर्की बी हे हि॰ मो क्नो वांब | जो ॰ जो गे धर्मव्यापारें करी स॰ सहित पदमली पन्पातलां थोनांजीने को न ऋधिमान माया मनव चन कायाना जांग वसे हे जेहनें नुः सिर्द्धांत लए। तां जेतप सक्तम पर थीमा करवी तेतपबंत क्रए२० पदमसंख्यानं परिणामे ने ध्यानवर्जीने धः धर्मध्यान सकलध्यान ध्या ए हे एवा जागगुरा सन्सागर हित्ते वीव वीतसगीक्र ए नजाव

₩36

सर्ध

*घ १*३

सुर स्कल लेस्याने पर परिएामे ३२ हवे लेस्याना थानक अब असंख्यातानुत्सपेणी जिहां समय र चमता २ लाव तेना जिहां समय २ पमता २ लाव फ्राएतना संब् जैतला संब्याता समय धाएन्त्रनी त्राकासमदसयाए वनतेतला वस्या जै॰ जेतला समय थाए त्र्यने ताकना जतला मुक स्रोतरमुक्तते काल तुकपूरी जधन्यस्वितिते कतेत्रीस सागरीपम मुक स्रोतमुक्त ते जपरे अधिक ख्राक्तत्रकृष्ट ना॰ जाएावी क॰ कृष्ण संस्यानी मूर्व त्र्यंतरमुक्तने तुरुपूरेपी जघन्यायिति दव्दसासाग 38 नुत्कृष्टियिति होए आएवी. ना॰ नीस लेखानी त्यने ऋ असंध्यातमें लागे अधिक न न नक्तरी होए स्नित ना ना जाएवी का ने कापीत से स्यानी मुन् आंतरमु क्रते पूरी जधन्यास्ने ति देन वसागता नायशका जससाए

For Private and Personal Use Only

ಕ್ಟರ ವಿ.

पन् नेलपरे त्राव त्रासंव्यातमे लागे त्राधिक छन् नत्रकष्टि होए विति नाव्जाए वी तेव तेजु बेस्यानी ३७ नायधाननुसंसाए ॥ ३७ ॥ द॰ दस सागरीपमन्परहोए त्र्यनरम् हते त्र्यधिक छ॰ नत्रकृष्टि होए ना॰ जाएावी प॰ पदम लेस्यानी स्खित सिसागरीपम नुपरे ऋतिसे क्षते ऋषिक नु॰ नुत्कृष्टि हो इस्बिति ना॰ जाए।वा सु॰ सुकल बस्यानी ३० ए०ए गु॰ समुचेथाति होएकही संस्थाना त्र्यागल कही न चि च्यारगात्नावष ए० हव नरक गति संस्था स्डिति हिए ति॰ त्रिएसागरीपमन्प दग्दसहजारवरस का॰ कापानलस्यापिति जघन्य हो॰ पतनं ऋ ब्र्यसंप्यात लागेन नत्ऋष्टो धर ति त्र त्ररासागरीपमने पर पर्यनोत्र्यस

u9C

ह ६८० नु.

ाचतक्रिष्टि विति नीस संस्यानी दब्दसंसागरीपमं पब्पांच्यनी त्र्यसंख्यातमीत्मागवसी ज**ब्जधन्य हो** ए ए॰ एनारकी संघला तिक तियेचनीमक मनुष्यनी देवतानी न्त्रने तिवियेच त्र्यने समृद्धितं त्र्यनेगलेज्यनुष्यादिकनविषेत्र्यत्ये द्वाते मु॰ त्र्यंतमु इत्तेपूरी जि॰ जघन्य जि॰ जत्कृष्टि स्थिति होए पु॰ पूर्वकोनी न॰ नववरसे छए। नार्वासुर सकल संस्या ते॰ तिवारपंडी कहा स थितिकवसंग्यानी ए० एतियेच ऋनेन० मनुष्यनी से० संस्थानी रिखेति छ० कही होए

ग्र-३६

धर्ए

9. ध२ a

कि कृष्ण दिस्यानी यिति अव जयन्य होए पव पत्यनु अव असंव्यातमे द॰ दससहस्र वरस दबता सघलानी धव लागेए न नत्कि थिति होए क कृष्णवेस्यानी धट जी ने के कृष्णवेस्यानी पिति क पः पत्यनी अस्वयातमीत्मागवि निः नुत्रकि यिति जा॰ जनास HAGH जन्जवन्य कार्पातले स्यानी जाएावी पन पहल्यनी ऋसंव्यातमी लाग ते जवन्य स्वितिनुपे ऋषिकी पालयमसबचन कासा सु देवताना सम्हहने बेतेमकहसुं शिष्या ला लवनपति वा वापाव्यंतर पतियुस के बे प॰ पलनुज्ञधन्य न न न तक हिंपित सेस्यानी यिति कहे वे ५१ पिन्वमं जहन

For Private and Personal Use Only

३६

ਰ तेजी ध नीव नीस कापात पदम सकल ६ कृष्रा' वेस्याधिति जंत्र १ अंतर्ग्यकर्त अंतर्ग्यतर्ग अतमु हार्त ध२१ जिंद श्रीतमुक्तत समुचय जीव त्र्यतमु हात यानमु क्रात १०सा०पत्यत्रमुख्या ३ सा० पट्य ३ सार्पस सागरीपमन्त्रत ३३ सार स्नित्मुह ए पृथव्यादिक र्ति अधिक अत्रथी थे। लाग अधिक पै मा लाग ऋधिकत्रीजें 90 गतित्रभाश्री श्राधिक र देवसोक वुत्तर विमान इजाए ७मीनरके नरक श्रांतर्मु क्षती अर्थनर्पु । र्ऋतर्सुः तियंच (प्रकारें श्रंतमुं क्लरी अत्युक्तते. 20 त्र्यतस्त्रत त्रसमध्या १ श्रसप्या २ त्र ऋंतमुरु त्र्यंतमु क्लत त्र्यतमुन मनुष्यनी ३ प्रकार अंत्यु क्रत श्रांत मुक्तत जि ऋ न 90 ત १० सा ५ संत्नाग ५ भी नरक ||३सा पसन्भव १।३ ξa वरसद्सन्धा हजारवरस नरकगति ज• | लमुचय३ पूरवको िक १० सा० त्र्यसंबर्गी अवन पति 20 ३३ सागर ३ साव पस्य १०६० वरू नीसनी स्वतं उप नु॰ नपरे समान्य १ १०समार ज॰ २० हजाखब ब्यतरन पत्यन् असं । लाग नाजे रखें पट्यप्रम्ना ३ संख्या पट्यनो असे श्री त्तरनी १पध तमा लाग काइकमारेरो मार्ग

बा ३४

धर्

र्ज. ધરર

| | · | नेजो ध | पदम ५ | स्तकस ६ |
|---------|-----|--|--|----------------------------|
| | न् | पत्यनो द्रमोलाग | · | |
| वेमानिक | गुर | १पस्य १ साष वर्षे श्रांतरम् क्षर्त | | |
| | मे | १ पल्योपम प्रथम देवलोकें | तेजूनी छु ० थि १स मयत्र्यक त्रीजेदेव | |
| | £0 | २सागरपट्यनोऽसं ष्यातमात्नाग र्वा ने स्वलो कं | १० सान्त्र्यन ऋषि क ५ में देवसोकें | ३३ सागर ऋंतर मुझर्तऋषिक |

कृष्णलेखा नारकीना ३३ सागर छपर अंतर मुद्धतं अपिक निह अने देवतानी पद्म लेख्या १८ सागर अंतरमुद्धतं अपिक सा धिक ६ अने अक्ल लेख्या ३३ सा० अंतरमुद्धतं अधिक सा माटे पाबला लवनी लेख्या अंतर्गुद्धतं गणीएतो नास्की देव ए बेद्धत ने अंतर्गुद्धते अपिक कहोजो इए इति ॥ अश्वेश्वर अथिनुत्तरं नत्तराध्ययन ३७ मुं मुद्धतार्द्ध तुजहन्त्वा ए गिया ३७ मीथी मां-

कीने ५५ मी गाया साधी लेस्यानी यंत्र ॥१॥

पः पत्यत त्राः त्र संव्यानमे हो हो इते जो बेस्यानी थिति हवे वेमानिक क दससहस्त्र ते के जो बेस्यानी थिति जन जप क्षाग त्र्यपिक त्रात्रीने कहे वे ५२ न्य ए लवनपूतीनी व्याने व्यान पतियम संरवे छोएं। हो इलागेए। ते चए।। प्र।। दसवास सहस्सा इं। ते चए विजहिनियाहो इ।

ध२२

ध ५२३

अ असंध्यातमी लाग अधिक व पूर्ण हर हत्क ही ५३ जा जे ते तेजोलेस्यानी विति पः पद्म संस्थानी थिति दः दससागरोपम स त्र्प्रिक नु॰नत्क्रिते एकसमय ष् कि॰ कृष्ण १ नील २ कार्पात ३ त्रए। पण ते॰ तेजीपद्म सुकल ति॰ त्ररापपा ५॰ इंगती नपज स्या ंति॰ त्रीक्ष लेस्याएं जीव सो॰ सदगति जपजे

अ-३४

For Private and Personal Use Only

धरध धरध

पन परत्नवने विषे न्या नथी कोइ जीवने एट नेविषे मरण वेला त्र्यागला लवनी सेस्या त्र्यावेलेस्या। न॰ नथी कोइ जीवनो पपा परएामती बेलाए सं सघलाएँ चः चर्मवेलाए डेलासमयनेविषे पः सेस्या पर्गी एामति वेलाएं नः नथी कोई जीवनेपए। त्रंब्यंतमुद्भते गर्गएयके त्रंब्यंतमुद्भती से विधी सेव थाक तो हो यतिवारी पंज्यस्या है जी॰ जीव जाए प॰ परस्रिक एतर्स मध्य समयने विषेकाल करे त्र्यक्रम्यन्ता जीवाग जीत पर साथ अब कुर्या १ नील २ का<u>पोत्र क</u>ूर्नापि काली नेजो १ पद्म २ सुकल ३ त्र्याचरे ते सुधीयाए इ॰ इतिश्री क्षेसान्त्रध्ययन चोक्रीसमी संपूर्ण ॥ ३७॥ मां ऋध्ययननेविषे ब क्षेस्यानी इतिसंस्वयणं चन्ती सइमसमन् ॥ ३६॥ गारनागुण क्रएतेलणी ३५मां ऋध्ययननेविषे ऋणगारनागुण कहे ने.

धर्ध

. કરપ

स्त्रियादिकनो संग ते संसारमाहेत् हे संघाए है तः तमजजीवधात श्रु मुषावाद ची विरोत्ती करवी तहवाह स इ० ऋएापामी वस्तूनी इंडा ने काम कहिए लोचपा संव सांधु एतलावाना सर्वेयामकारे मी वस्तूनु र द्पएम स्जन्पारवहा कः कमान सिंहत होए पः स्वेतवस्त्र करी ना॰ पूर्वेक हां नेवा लपाश्रयने विषे

双·34

ì

र्छ धर्

वि वधारण हार ते जपात्रयण सार सम्साननेविवे सु स्तापरनेविवे सा वृत्सने समीपे वृत्त हे वेव अध्याण पशु नपुसक रहित गृहस्बना घरथी ऋलगो नुपा अये या॰ रहि वनु त॰ तिहा समसाननि विष पर नीपजाव्यों हे एवा नपाश्रयनेविषे मनकरा तः तेसमसानादिने पूर्वे कहातेवा नुपात्रयनिष् ऋ नुषड्ब्य रहित नक्एव नाहिज अनेरापास घरसाफ नकराव गिव लू , एकंदियादिजीवने दिश्दीं से वे वश्य त्र ने बेंदियादि त्रसनो थाव पृथवित्रमा समारल सं लाधु पः वर्जे हवे साधुना त्याहार सेवानी विधि सजन परिवद्यए घरना जीव

双.3以

ध२६

न ध२९

पा॰ बेंडियादिकनी पृथिव्यादिकनी दयानी त्र्यरचे न॰ पोतेरांधेनहिन इत्रनेरापा हेर ज<u>़ीत फ़्राए ने</u>धन्धान पुरुष्टेवीनी नेश्राएं त्रसजीव क्राएते कः काष्ट। इन् हुएीं लब् लातपाणीनेविषे धता होए ते अनुमादन्हित विनासनी करए। होर नवनी अने त्र्यानिसरषा सस्त्र बीजाकाइ तन तमजीन श्रामि प्रजाति नही

ಶ _{ಟ೩೮} लि॰ जारी सेवी व॰ मोधे वे चानो न दोवो लि॰ यती एं लि॰ लिन्द्राने मागवें करी व॰ आजीका। क॰ मी स्यवे चातुं दो वूं ते वे च बो गवेषे वन्वांदवी तथा गुण्नीकी र्तिनी करवी पून्वस्त्रा इन्सव धिनी के दिंसन त्र्यनादिक देवेकरी दिकेकरीपूजवी त्राव नियाएग रहित अप धनरहित वी ममताने अखाहीका क्षि॰ ध्याएके

*न्त्र*न्३प

धद्भेष

ع. الادن الادن

निक सदीषणा करवेकरी बांनी तेए जिल्ला कारकाख जाः जां सरी कार मरणातुं मस्ताव ऋगवे तां सरी १० चव बां भीने माव मनुष्यनी सरीर पन्सम्याद्भना घएगे वित मुकाए नात्र्यवसर त्र्यावयक श्रीमहाबीरदेवसमीपे सांत्मस्यू इतु तेम इत्तुजप्रते कङ्ग्रह श्रीस्थमा स्वामी जंबू स्वामी प्रत कहें डे हे जंबू जेममे इति ऋपुरागारनामारगना में ३५ मुं अध्ययन संपूर्ण ॥३५॥ पांत्रीसमा अध्ययननेविबे अपागरनो मार्ग कह्यो ते अपागर जीवना जांए।पए।। पी फूए तेलए। ३६ मा ऋध्ययननेविषे जीवऋजीवना लेदकहे छे. लेदजूरा सार सांलिस ऋहोशिष्य में मुजने कहतायका एर एकाग्री जंर जै जीबादिक जाएरिने स॰ सार्च मुन्नेकरीज । नुस्मकरसज मनयको

ધરણ

ध३० गुः

ए॰ ए लोकने वि॰ क ह्यो त्मगवंते अ॰ अजीव दे॰ एक देस आ कास बे ते विषे च॰ पूरएा का कालधी एनी एतली यिति द॰ इव्यंपी एना एतला लंद खि॰ षेत्रयी प॰ पस्हपएगा जेततो त्र्याकास त्र्यवगाहिनेचे पूरणे तेहनी लाव लावधीएना एतला पर्याय हो नी अधमं जी वास्तिका स्र किप त्राजीव अने त्राव अ॰ अजीव ७० वेप्रकारे क्षए अ॰ अरूपी दसप्रकारे कहा यादिकनी परूपणा हव ऋजीवना उच्येयी त्मेदकहेर्व ऋसपी उव्ययी हवेपहिंखुं १० प्रकारें धः चायवानी स्वलाव हे ते लए। धर्म तः ने धर्मा सिकायनी यो मीस्यो विला श्ररूपी श्रजीवनालेद कहे वे प्रदेस है तेना षंध गर्दस २ ते धर्मास्तिकायनी प्रदेस न्याब्क्यो म्मानकाएतर

์ ย**ล**า ऋ॰ स्विररेहेवानो स्वलाववेतेलएरी ऋघमीस्ति प्रदेसना समूह हे तेना पंध त० ते त्राकासनी **ऋ॰ कालतसमयादिक** यी बीजे बोले कहें बे ऋ ला॰ लाक जनमा प्रमापा व ध्रु धर्मास्तिकाय ए त्रपापपा तीरधंकरें छ सना हो काशास्तिकाय ा स्त्रपद्मवासंयाचेव

479

. કાર

आ। कीएक कार्य करवामांने ए॰धमस्तिकायादिकनीपरे त्र्यादि स॰ समयकालपण स॰ तिवारे तेकार्य आश्रीजोतांकास थाए तिवारेकाल ऋंतसहित पणा है यः यथकी त्र्यवने त्र्यांची त्र्यरसे त्र्यफासे एतले त्र्यरूपीना खं व षंधने षंधनोयोमीसो लेदथया हवे रूपी त्र्यजीवना ध लेद कहे हे प्रथम द्रव्यथी रूपीने विलागदेस लेदकहेवे तपएभातहवय ए त॰ तेमज परमाएम ते षंधवकी त्रप्रलगा रू० रूपीपए। पुद्रगल च० च्यार प्रकार ए॰ एक परमाएतयान एकवा एकना बेन थाए एहवाबी जाएावा जाएावा १० मलवानीपए। स्वतनाव पुर लो न त्र्यापालोकने विषे तथा लोकना देसनै विषे पुरगलना षंधरया ने लान लानना नैषंधन्त्रमने परमाए ने षेत्रत्रप्राश्री लजनाके ताएक त्र्याकासमदे से षंधक्षाएत्र्ययवानहीए त्र्यने परमाएकन १ ऋतकासमदे

74·3E

ध३२

ઇ. ઇ.સ્ટર્ सु सूक्तमपृथवीकायना जीव स सर्व लोकमां व्यापी लो॰ लोकने एक देसे एक विलागंबा॰ बादरपृ रह्या ब सं । जतात्र्यात्री ते पुदगलया स्मादिकालना स्मा ने पुद्रल त्र्यागले स्मनतकालसर्ग द्व थिति त्र्यात्री त्र्यादिस् सि कार्वाधितिनो बेमोत्र्याचे ते त्नएी त्र्यंतसहितबे त्रव त्र्यसंप्यानोकाल एक त्र्यन्त्र्यर्जीव स्तृ जेस्क्षपीपुरगक्षतेनी विन्ए थितिक ही तीर थंकरें अन्त्राकालनु नुत्रस्त्र आतर पन्या श्रक्षक ग्रजीव पुदगस्त्रपीतु इ॰ एकसमयजघन्य स्थातर परिएाम्या बेगंबएगो रव तीषादिरस्थी फाब फरस्यकी तेम

चल्या

घोनानेत्र्याकारे

-भिषुएगार्सि

m

₽. શરૂધ

पंच्यान नकारें १६ यन वर्णा वकी वर्णा ने परिष्णा में परिष्णम्या वे पं रुपांचप्रकारें ते विद्यादिकना कथा पुदगल श्राहर गं॰ गंध्या गंधने प॰ परिएम्या बेजे छ॰ बे लोद ने बतेक ह्या नीयेकरें हां पील घोला श्रं•षाटा मी ग 90 तिर्य निव्तीषाकमूदा कसाया ते फरस कन्ना तीचे | क॰ षर षरा माख् पूर्नि परे मरुसहाला गर्लारीला हर्नापर लच्क्रल्य फार फरसपरी पर परियान्याजन पुरु एक ग्रामलजूदा २ परा सं । सस्बान त्र्याकार परापः प्राप्तान्या बर्जुदगलपः पानप्रकार सस्बान त्र्याकार पराक्र्यालगवर्त

For Private and Personal Use Only

ઇ. ઇકૃષ

व वर्णियी जे जे क्लए कि काल्ये पुद्रगत त न तजना क्लए से व ते बेगंधनी सम्गंध रः तीषादिक ५ रसनी त्नजना ८ फरसनी ल वर्षापासेजन्ध तेराध १।२।१ फान एवं ध संग्रानिह तेपरमाएक लव्लजनाक्ष्रएसंस्बानपांचनी २३ आश्री नु २० लाले २० लाव लाले तेबादर अनंत प्रदेस आश्रीषध र॰ रसमाई जेकोइक तीषादि रसन फासन राताज पुदगल ऋएनमाहेल० लजनात बंगंधनी र० ५ रसनी ८ फरसनी वन वए यको पानपाला जे पुरगवर्तमा लन्नजना क्लएबंगधनी रनपाचरसनी टफ्रसनी लन्नजना क्लए लब्लजना हाएतं बंगधनी २० पाचरसनी पुदग सम्निएत।

ऋ-३६

834

स्ट इह्ड

गंब्गंधयकी जे पुदगस सुब्सुगंधतेमाई लब्दलना क्रएते पाचवर्णनी रबपाचरसनी त्र्यावफरसनी लब्दलनना रसनुफासन्चव गयनुजलवस्रा लब्लजना क्रए ते ५ वर्णनी रब ५ रसनी ८ फरसनी गं॰गंधयकी होए बे द्गए सं ० ५ संस्बाननी २० गधनुज लव्यक्त लइएसनुवनन र रस यकी तीषो सूंग्रनी परे जेला क्लाजना क्लाए ते ५ वएनि। गं बेगं धनी ट फरसानी ला ल्लाजना क्लाए पांच सं गघनुफासनुचव ए। नविय ॥२०॥ रसन्नातत्तनुजन (म इ एस च व न च स्वाननी ३० रसियकी करूयाली बना ऋए तेसरषा लाव लाजना ऋए ५ वर्णनी गंव बेगंधनी ट फरसनी लि लजना क्षाए संस्त गंधन फासन चव लइएस चयन्त्र व ल न न न कर ते पांचवर्णनी गं वेगंधनी त्र्याव फरसनी न पाचनी३१ रवरसथिक कसायलीजे त्न भजना क्रए सण्पाच त्न लजना क्र एते पांच वरणानीगं वेगंधनी ट फरसनी तन लजना क्र एसं ०५ संस्वाननी ३२ संस्वाननी ३२ रव रसंपकी षाटा जो लिइएसे नुवन्त्र ने गर्धन फासन चव।

ग्रः३६

ध३६

843 9

गंच्बेगंधनी त्र्याव फरसनी रु रसयकामीवा ज ल॰ लजना फ्रएते पांचवएनि ल॰ लजना क्रुएपाच संस्वाननी ३६ लइएसनुब्रान पासण्यव फा॰फरसर्यकी पाषाएानी परेकव<u>णावरवराजी</u> त्में लाजना क्लंप तेपाचवएनी गे॰ गेंधयकी रसर्यकी ल॰ लजना क्रए सं॰ संस्वान ५ क्रए३४ लइएसनुवन्नन फा फरसंयकी सुद्दाला भाषणा सरवा जेला ब्लजना क्लएते ५ वर्ण नी ग • वेगंधनी ५ फरसमी अ • त्वजना क्लएपांच संस्वाननी ३६ गघनुरसन् चवा फा॰ फरसयकी सी॰ ताबकमलसरवाजे ला॰ त्राजना क्लए ते॰ पांचवएोनी गं॰बेगंधनी प्रसनी ला॰ लजना क्लए सं॰ संस्थान परों करी त्राजना ल५एसजवन्नन गथन्रसन गंब्बेगंधनी पांच रसनी लिं लजना क्लए ५ संस्वाननी ३८ लब् लजनात पाच वएनि गघन रसान चव फासन साथएजन लभप्सन्दन्नन फार फरसपकी चोपम्याजे पुद्रशा क्राएते लार लजना क्राएते ५ वएनि गर बेगंधनी ५ रसनी लब् लजना क्लएसस्बान पाचनी ३(७ गधन्रसन् चव।

ऋ.३६

ઇરૂવ

ਹ: ਖ੩੮

फा॰ फरसंयकी लु॰ तुषाराषसरषाने ला॰ लजना क्रएते ५ वर्णनी गं॰ वेगंधनी ५ रसनी लन् लजना क्रए सन पाच संस्थाननी धन लइएसन्वन्नन । गधनु रसन्चिव । लइएसवाएानिय सरषाजे त्न । तजना द्वाप ते पांचवर्णनी गं बेगंधनी ५ रसनी लब्लजना क्वए सं नुसंस्वाननी गयन रसन्चवा लंडएस गए। नावय ॥ धर् ॥ प॰ चूमिनिपरं सँ न्संस्बान के जेनो तेपुदगतमाहे ला॰ लजना इतए ते ५ वर्णनी गं०२ गंधनी ५ रसनी लब्लजना इतए फरस ८ नीपए। गधन रसन चव स॰ सस्बानयकी ल॰ क्रएव॰ वालुयानीपरी वे पुद्गलनेमाई ल॰ लजना क्रएते ५ वएनि गि॰ श्राधनीर०५ रसनी लजना क्रएट फर सनी गधन रसन एसनवन्नन मि॰संस्बानयिकि क्राएत • तेसिघोमाने श्राकारेयरे। तेमाई लि॰ लजना क्राएते ५वएनिमि २गघनी लजएसनुवन्नन् । गधनुरसनुचव । लघएफ सं॰संस्वानयकी चनु रसाने त्र्याकारे चनुर सबे जे पुद्गास ते मा हे ला लाजना क्र एते। गं० २गंधनी लंजनाक्रए ५ रसनी ला॰ लाजना क्र ए फरसनी पण गधनुरसन्चय । त्मइएफासल्लिय ॥

अभ्दर

Ì

ઘર્કણ ચું.

जे पुद्गल लाकरी नीपूरे सं क्संस्वान परों नि लजना इति पर्मि गं वेगंधनी पांचरसनी लि लजना इति स्राव फर सनी पर्णा अव .पारिएाम्या वे तेमाहे गचन रसन्यव। असंख्याता काल नु॰ नत्क्र हो आंतर्र ए० एकसमय ज ब्जधन्य आंतर्र अ० अजीव रू करपीपुरगस अंब आंतर्र पने विवक संतिषिकरें धन एकासमनजहन्नय ए॰ ए पूर्व कहीं ने जीवनी विचारणा वोन शिष्य प्रतेयुर कहे वे हा कह सुं सन्संषेपेक हि ए॰एजीवनीविचारए। क ह्या पढी हवे **%प्र• अप्रजीवनी विचार**णा सं एकें डियादिक संसारीजीव सि॰ श्रने। सिंह इ वे प्रकारें अ० अनुकर्म ।बीजाजीव द्विहा ॥ धट ॥ ससारहायांस दीय रक्तवर्णी २० त्नागाः पतिवर्णी २० त्नांगाः स्वेतवर्णे त्नाग २० अलगंधत्नांगा २३ त्रश्चलगंधत्नागा २३ ति चरसे त्नांगा २० कषायरस त्ना गा२० त्र्यंबिसरस लागा २० मफररसे लांगा २० कर्कसफरसे लागा २३ मृडफरसे लागा २३ गुरु फरसे लागा २३ नगफरसेलागा २३ नुसनफरसे त्नागा २३ नसदफरसे त्नागा २३ पुषरसे त्नागा २३ परिमंदल संस्टान त्नागा २० वह संस्टान त्नागा २० विससंस्टाने लागा २०चनुरंससंस्थानलांगा २० त्र्यायनसंस्थान लांगा २० पांचवर्षनालागो १०० गंधेलागा ४६ पांचरसे लागा ६ फरसे त्नागा १८ ४५ ॥ ५सं-स्थानना १०० एवं लांगा स्थास तेणें कहार अन्यधालांगा अनंता ह्रए एक गुण हि गुणात्र्यादि गणतां ॥ छैः ॥

-JT-3E

ध३७

*धस*० चु.

प्रकारें कहा। तं व ते सिद्धना अपनेक सेदनशिष्यप्रते युरु क हे बे मेव सुजने कहता जीव जीव कहा ती र्थेंकरें सिव सिक्ट अब घरो इ. स्त्रीमरीने सिद्ध थाएपुर पुरुषमरीने सिद्ध थाएत । तमज नप् सक मरीने न् न्तुक्ष्यपान्स् धनुष्नि ऋ व्यवगाहनासि द्व यार् अव नयन्यवहा द्व्यस्त जीवपुरुष नवनपुरुकन विषे ज त्रुष्टाएक विव जत् पुरुषनेविषे जत्कष्टा सी के ती अव एक सी । सव छत्क ष्टा समय एव एक सिद्ध थाए सी के चन्छत्कृष्टाच्यार जाव

双35

धधके

ନ୍ଧ କ୍ର

न• जव व्वत्कृष्टासीजती ज्वस्यप्कसमय। १०८ सीम ५४

श्राः३६

ยยว

. 193

तः तिहा तोकने त्र्यतेत्र्ययंज्ञईने सिद्धियाए। बार बारजीजन ॥५९॥ बारसाहजायणाह प्रतिप्रविविज्ञने संरुत्राकारे बेप्ट प्रपचतातीस लाघ जीजन श्राव्सावी ब नार नेतलाज वि• पद्भावि धप् वाषजाजन प्रमाण के ति॰ तेहनीत्रियाणी का पे परिधिकी त्र्यः ट जोजननी जामी के मः माषीना पाष्यकी तः पातली जाएावी ६० जीजन साबापक्त सार्वत्र सर्गत्र्यावजीजननी जानी वि॰ कही पर्व थि मे २ हां शि पांमनी पातली थाती २ श्रव श्रवीन नामाधीलासुर क्वर्णमयसारतप्रयेवी निन्निमेलबेसर स्वलावबेन्समानिता बर्बन्समानार ला विष• पकपमाणाजीयपो तब्ते सि द्वसि लायकी

3E.K

यो॰ योकना त्रांत बेमो वि॰ कह्यो तीर्थिकरें ६२ जो॰ एक जोजनप्रमाएन। ध॰ सहस्मन बकोस थाए त॰ तिहा सिद्धासिवयिकी एतले 115711 जायएास्सनुजातन सि॰ सिद्नी नु॰ त्र्यवगाहना एतल प्रमाणे ह्राए६३ तन तहामी-तक्ते एक कासना बवात्मागनिविष लो॰ सोकना अग्रनेविषे रह्यां वे तिः संसारमाई नारकी प्रसुष त्नवना प्ये विस्तारपकी मूकाए। यका व नु सरीरना न्यपण जर्जमनुष्यत्नवनोजीव जैवीप लंज्मनुष्यत्मवचा बेसात्मवन विषे माए होए तलाग लवे ही एए येया त॰ मनुष्यलवनी दही क्लए सि॰ सिंदनी अवगाहना क्रए ते**वीही**एी**वा**ए सि द्वाणागहए। ्युव्घरा। समस्त सिङ्त्राश्री जोए तो अप्र बेमी पए। नथी राह्नत्व ६६॥ त्रमुक्तवाएग

ऋ ३६

888 2.

ना॰ केवलज्ञान त्र्यने केवलद्रसन तहज स॰ सहित सनसङ्गान त्र्य॰ त्र्यतुलस्कष पास्या छ ॥ श्रयवातं ज्ञानदर-स्प्रतास नाव केवल झानकवलंदरसन तेहज सझा ब नि॰ ससार क्तता ६० इव सञ्ससारमा बेहे संसारीक जीवना स्वरुत्प कहर था॰ धावर जीवाति । त्रिक्त प्रकारें ते त्रस धावरमाहे पुरुष्यवीत्र्याः त्र्यपकायनाजीव तर तेमजवनस्प हल्॥ तीनाजीव वनस्पती३०तेयावरतिब्त्रपापकारे ते० नहना बलदसु॰साललमुजनकहतायकाउष सु॰सूक्तमबादरातिम ए॰ एम ए५॰ बेंग्रकारक ह्या वर्ली तीरपैकरें। प्रथवीना जीव प॰ पजीमा ऋपजीसा वीजीवान

ऋ-३६

ti ti ti

_{คิย}.

बा॰ बादरजे प॰ पर्या प्तापृथविकाय ५० वेपकारे ते कह्या तीर थंकरें क॰राती वसी हा॰पीली सु॰धोली तेमज ऋ ग्रालवा जवकास श्राल्या सहित धूप प्प॰ परवासी यरत २३ म् इत्वकरत्व २६ त्र्यं ब्लांकरत्व २५ फ इफटिक रत्व २६ बाहिता ये मरकतरत्व २८ मे सारगलरत्व २८ तु जनिवक

ยยบุ

688 2

गं॰ गरुक रत्न ह० इंसगलेरत पु॰ पुसकरत्न सोन्सो गंधकरत जाएवो रं चंड्रमल् ३९वै वैद्येरत्व ३८ ज जलकातर्त्व पुलए सागाघएय बायव ए॰ नाम कक सहाला ७ एसर्व ७७ एतेमध्ये ७टावी वैद्या १ विष्ट २ सला ३ इदंत्रएा एक जात वीद्य जातत्र्यस्परस १ त्र्यञ्चवाक १ एकजातएध रासीबाकी लगवते ए॰ एक प्रकारें अरु फेरनथी घर्णा अकारेनथी सु ॰ सू नामपृथिवकायनाजीव तन निहां पृथिविकायना ·स» सव द्यांकमा व्यापी। द्यां • द्यां कर्न एकं करेसविलार्ग बा॰ बादरप्रधिवी रह्या व दिकहेर्वकान्का। तेन् तेकासनो लेद वो वकहे सुरुचन्धम। सन्ए सूच्यवादर पन्प्यविकायना लेद। ऋन्यनादिकासना वेर्धुपूप् विन्या कारे ३० सत इपपपाइय । त्राश्री तसवाचचनाइह ॥३० सन् त्र्यादिसहितसन् त्र्यानुषानो बेगो त्र्यावे तेत्नएरित्रंत बा॰ बाबीस सहस्त्र नुषान्त्राश्री सपचवसियाविय ॥ ८०॥ सहनपण बे ८० बावी ससहसाइ। बासाणुको सियाप्तर्व।

汉.3€

ଧ୍ୟ

ନମ୍ଭ ଇ.

त्रा॰ त्रानुषानी स्बिति पु॰ बादरपृथिवि श्रं॰ त्रांतर्मुक्तर्त अ॰ जघन्य स्बिति ८१ हवे कायस्बिति कहेबे ऋ ग्रसंध्याती काल नु नत्कष्ट ।कायनी त्र्यतामुक्तत्तज्ञहानया ॥ ८१ ॥ त्र्यसंखकालमुकासा त्र्यंतर्मुक्तती जन जघन्यस्विति कान कायस्विति पृथवीनी ति ते पृथवीना त्म व निरंतरकरे ते पृथवीनीकाय स्प्रंब्सू त्र्यातरोपरे पृथवीना ल वपामवात्र्यात्री। त्रातमुक्तते जिञ्जघन्यत्र्यातरु विव्हार्मयायको सव्पत्तिना पृथविकायनाजीव पुरुष्यवीना जीवने त्राव ए॰ एपृथविकायनाजीव वर्णेथी गंधेथी रस्थी फरस्थी संब संस्वाननालेदयकीपए। पृथवीलवपांमवानु त्र्यांनरु पर्न नुत्रक्षेत्र्यनंता **८३॥** कालनु त्र्यांतरु परे पश्हवेल विधितिके वे गथन रसफासन्। सवाए।द **५० वं प्रकारं ऋपकायना** जीव सु । सू-दमबादरतेम वि॰ लेदना सहस्त्रकुए ८३ हवे ऋपकाय इव्ययी कहें ब प॰ परयासात्र इविहा त्र्यानुजावानु । सुरुमाबायरातहा ए ऋष्कायना जीव दु॰ बेमकारपए किहिए: बा॰ बादरजे ऋपकायपन्पयोप्ता पे॰ ५ मकारे पन्कह्या तिर्वे कर्ति हुन् पनिष् एवमएपुहापुणी ॥ ८५ ॥ ५५ बायराजनपद्यती

ग्रा-३६

धध १ सवा *ಎಕ೭*

,रिनीलां हुए। चपरपाणी त्र्यावे हरतए हु० ८६ ५० ऋपहिम एक प्रकार बन्ध पकायना ऋक घणुर नायक लार लोकना एक दसनेविष बार रधार ावे जिलि त्यात्रीत्र्यादिसहित बे सक्तेयितिनो बेमो त्यावे ते लागीत्र्यंतसहितपः त्रात्री वेनीपएनयी एत्रप्रकायनी त्रा त्र त्रानादेना व एत्रप्रकाय स्याविय नो जीव त्रा न त्रानुषानी यिति त्रप्कायनी श्रा न स्नानमुद्धते जन जघन्यस्त्रिति एए हर्व स॰ सात सहस्र वरस उ॰ अनुकारिक्वए काः कार्यस्बेति त्र्याः त्र्यापकायनी अब अनेता कास नुत्रकृष्टि ज्र जघन्य ऋ नमूकायत कायाव५ ऋान एनलाकालरह अ अम्तरमुक्तन विव्वानियक सर्व पोताना त्र्यपकाय त्र्यावत्रपका अन्यनतकाल नुन् सुन्क्षा ज घन्य जी। ७०॥

ऋ ३६

1.161

ક રાળ એ

बाव बादरज वनस्पतिकायबेन्नकारं परावसी जारावा। प॰ पयासा हर् हरिकाय बीर जाएावा

म्बा-३६

ઇ કા હો

છ√

सक्सरीरवंत त्र्यनंतकायने घए। प्रकारें तेक ह्या आकृ कं दशूलनी जातगूलों सिंव आहू त्व तेम जात जा॰ जावकि॰ केयक दली एपए नी जाति वन्यज ्क ब्कुदग ते तमज सा॰ एपए कदमूल कदएपए। कदमूख कं ॰ कदसूरए। त॰ तेमज बा॰ जाएावा ल ल छछ त्र्य वर्ष मकारेए त्र्यादिदेई ने लत्र मुन्यसदिनील हसड एपए। कद 800 11008 सु सूक्तमसर्वाकन **लागदसयबाबरा**

धप्ष

શ્ તે શ્ર

श्रा श्रानीदिकालनो हेर्ना पण्नधी वि॰ त्ववस्त्रिति त्र्यात्री त्र्यादि सहित है सपचवासयावया ब॰ वनस्पति कायनुं श्रानुषु ऋ॰ ऋतमुक्तत ज॰ जघन्य स्टिति का॰ कायस्टिति प॰ नीसफूसनीगादित्रा ए॰ एवनस्पतीना जीव व॰ वर्षायी गं॰ गंधयी रसयी फा॰ फरेसयी संब संस्वानना त्र्यादेस हो दथी लंबना हजार

ऋ३६

धपृष

तेनुकाय वानकायमा जाएावा नुरु मोटा त्रस वेंदियादिक तेम इरुएपूर्वे कहा ने तर त्रसजीव तिरुत्रए मकारे तेन्तेनाले द स्कूर सा । श्र १६ गेष्य मुजक हतियका | द्रव्ययीकेले ५० बेंग्रकार तेनुकाय सुरू सून्हाम बार बादरतिम वसं इ॰ बुसता जाजसमान श्रुगारा मुब्त्य्यगानषाटमा ऋग्साह बा॰ बादरतमुकायना जीवजपयासा ऋब्यए। प्रकार तै ॰ ते कहा सातहवय।। १०॥ तुरंतीकासतिमज १० ए॰ एक जमकार वे बीजी प्रकार नथी सु॰ सून्क्मन्त्राग्नेकाय नु ते वि॰ कह्या 'तीरथेंकर **घलव्यापारया** ए॰ एविचारकद्या पढीहर्व का तिविलाग तै॰ ते त्र्याग्नेनु वी॰ फु तेसिंबी डचना बह लागदसयबायरा । वकाय

. ઇપ્

न न न त्रष्ट्र ति॰ त्रए अहरित पण व अ। नाव ५ तन अव त्रमंच्याताकास नुवनुत्कृष्टि अव त्रातमु इति ज॰ जघन्य कार कायां स्विति तेलकाय तक स॰ पतिनिकाया ज्तुक्षा त्रात्रपर तन सगए। सहस्त्र क्राए हव बानु कायुड्यया के बेंड ० बेमकार वा॰ वालुका पनाजीव सु॰

For Private and Personal Use Only

કૃત્ક એ.

ए॰ एम एकना पु॰ बे प्रकारे वसी बा॰ बादर जेवानुकायनाजीव पं॰ ५ मकारेते कह्या वाय पर्याप्ता जाएावा ए॰ एक । घ॰घनदियिजेहेर्व घनवा । च गु॰ गुजारव शब्द करेतेगुंजावाय सुन्धोंने २ वाए तेशुद्रवाय १ए घएर प्रकारे ए॰ ए आदिदेईने प्रकार व सू-कमवायनी ऋ घपा। सु र सूषम कायना जीवनीवे सो जानगएकाव हवे षेत्रयीक हे बे प्रकार नियी ल्माग बा॰ वानुका सं॰ बताश्राश्री ग्रं॰ वानुकायनाजीव ग्रंनादि यना जीव ए॰ ए विचारकद्या पं बीका त्वानुकायन क्र कहरू च च्यार प्रकारें १२१ सनो विलाग कालना बे वानुकायनाजीवनात्र्यतपण्<u>नियास्</u>द तेसिंवोर्ज्ञंचनुद्धिहं ॥ १२१ ॥

For Private and Personal Use Only

. કપપ विक लविषिति कायिषिति स्त्रानुषानी।स्विति स्त्राश्री सक स्त्रादिसहिन वे त्र्यानुषु पूर्त याए तिवारे वरस श्रीतसहित पण्ड २२ त्र्या॰ त्र्यानुषानी स्विति याच्यानुकायनी त्र्या॰ त्र्यतपुं क्षते ज॰ जघन्य श्र- श्रस्याताकाषुना गुन्न कार काय थिति वार वानेकायनी तेरतेवानकायनीकाया ऋरुऋपरामूकतो थको अन्त्रतमुक्तते जन् जघन्य यकी मुभारातक्त्रसजीय बीड्यादिकन क सब सहस्त

ऋ ३६

धप्प

म् इभ्ध

वे॰ बेंदी जे जीवते **५० बे** मकारें कहा पक्ष ऋध्या सिपी सालता मुजन कहतापका २ए वं वासली नासरपा सुष धरती बाएतमां रहे जा॰ बेडीजात पूरए नाना सषसा श्रयवा तहवयवरा १३९ हवे कासपी संग्वतात्र्यात्री अ॰ अतरहित्वे अनादिना अतरहित्वे.

,

1-//

ध५३ १५३

बार वरस बार स्मानुषानीस्विति स॰ त्र्यानुषुं पूर्व थाए तिवारे त्र्यंतसहित ३२ गु॰ नत्रभावि कही त्र्याव त्रांतमुं इतते अवजघन्य स्विति १३३ सं॰संब्याताकाल नुन्नुत्रिष्ट बेडीना त्र्यानुषानी स्थिति ३४ ऋ॰ ऋनताकालनुनुन्नुत्क्रधा ब॰ बडीकायास्त्रित जि जघन्य फ्रए हव तडी ड्यंपी कहें वे ने नेना लेद सु । सालव सुजने कहता पु • बप्रकारत्त • ते कह्या प॰ पर्यासान्त्रपर्यासा 30

अ धर्ट

तेंडी नी जानि नुदेही मा० ए तेंडी प॰ एपए। तेंडी तः तेम तः तृएगाहार काष्ट्रहार एत् डीनी जान तिं । तिं छुक तकतिवार पढ़ी ये तेंडी सक एतेंडी ЗĠ ५० ममाला स्था ठ जाय हवं फेन्नथी। ला॰ जाकन एकदेस विलागन सघला नि नवी सघला तेंडी वि॰ स्विति त्राश्री श्रादिसहित्वस व्वहमासहितपए। व श्रान्यनादिना विश्रातरहित वे **ऋपरावासयाविय** ए० एगए। पंचास अ॰ दिवस रात्रि नु॰ नत्कृष्टि कही लगवत श्रेन त्रात्मे इत जन्जधन्यास्व त्रादय ऋानावइ स॰ सख्यातीकाल ७० जुनुऋषिकाय स्बिति या ॥ धर्॥ संख्यकालम्कासा

| '

भृत् भृत्

अप्रामुकतोकीप्पा नृत् अरु अनंतकालनी जुरु नुस्कृष्टीत्रातक पर अरु अत्मुक्ति जर्ज्यन्य उ॰ देपकारें कह्या प॰ पयासा ऋपयासा 984 यान त्न लगराकीमा चलरें जीनीजातपता विक ऋंब्चोरिंडीनी जातपण चारेंडी मन मार्थी मन् संसा तम सिंत्र्यविदेहए॥ ४ ८ ॥

₹3E

ध५७

ર્ચે ધ**દ્**ષ્

माचनरदीनीजात जञ्जल एचन्रिंदीनी नीव एचन्रेंद्रीनीजाततः षेत्रधी कहं है लोक लाकना एक विलाग सं चनरें दी जीवबता स्त्राश्री अन्त्र्यादिसाहित स्त्रंतपए। नथी विन स्विति स्त्राश्री ज्ञ जत्कृष्टी कही वीतराग नुप्रमाए। ऋ॰ ऋनतकालुना **इ**त्तक् ष्टीत्र्यानरु पर ऋ० ऋतमुक्कते<u>ज्य</u>न्यकाय

ऋ ३६

धह्र

छ ५६१

ने॰ नारकीतियंच पु॰रत्नप्रलादिकप्रयविसातने विषे र॰रत्नप्रला १ स॰ सकरप्रला २ वा॰वासुकप्रला ३ पे॰ पक प्रत्नाघषू र्वे भूम्प्रप्रता ५ त॰ तमप्रत्ना ६ त॰ तमतमाउ इन एपूर्यवि एएप्रिकरिनारकी सं ० उपकार विक लवस्वितिकायायात त्रानुषानाय

ऋद्

469

ट धह्र

चिक्कही पञ्पहिली नरकनेविषेजधन्य पूर्तं थाएतिवारेत्र । सा० सागरोपमएक ७० जत्कृष्टिस्बिति द॰दसहजावष গ্ৰ रो॰ बीजा नक जघन्य ए॰ एक सागरापम स॰ सान ति त्रए। सागरीपम त्रानुष च नत्त्र छावि कही सागरोपमनु श्रान्षु छ । ज्त्र ष तः त्रीजीनरकं अञ्जघन्य तिन्त्रपासागरीपमतः स्रानुष ६३ दण्दससा च॰ चौंयी नरक जघन्य गरापमनु श्रानुष नु वत्रत्र हो वि क हा स॰ सात सागरापमन सब्सतर सागरापमनु त्रानुषु गु॰ नत्रुष्टो प॰ पाचमानरक दे दस चन्पूरण साव सागरीपम १६५वान जघन्य ति॰ नेत्रास बीवीससागरीपमनुत्रमानुषु नुननुत्कृष्टीकह्या बन्चनानरक जयन्य स॰ सतर सागरापम स्तरस्ससागरावमा ॥ ६६॥

श्र-३६

ધદ્ર

. ઇદ્દર सागरीपमनं त्रानुषु ज- नत्कृशोक हो। बा॰ बावीस सागरापम स॰ सातमी नरके अघन्य जा॰ जेनसी सा॰ तहज ने नारकीने कायस्विति होएज ज्ञाचन्य नुत्कृष्टि कायस्विति होए ६ ट च । पूरणे श्रा । त्रा नुपानी रिकेति ने । नारकीने कहि यत्रानाव5 दि॰ डॉ रेयके नारकीने सके पतिनी कायन अ अनताकालना छ । ज त्कृष्टा त्यातर पर अ । पामवाना एतला त्रातरूपमध्य हवेनारकी । एठएनारकीना लेदवर्एथी गं॰ गंधवी रसवी फरसधी सं• सस्डान ऋदिस्यकी बिवल दन गधनरस फासन सहस्र उ॰ बिक्तमकार वि॰ कह्या गः गलेजतियं च तेच्तम ७१ चनीचनादिक

अ.३६

ઇાદ્દર

કદ્દેશ એ

ते॰ पंचेंद्रीना लोद सुन्सां लात मुजकइतायिका मन्मान लानी जातक न काचनानी जात गान गाह जस चरजीव मन्मगर मनलें जाएाबा. 113211 पा॰ लोकना एकदे सविलागन विषे ते॰ तेस घलाए जलचर जीव सा अघलन यीक ह्या ए॰ एक ह्या पूर्वीकालनी ते ॰ ॥ उध ॥ पंचेंदी कालधी कहे हे विवितित्राश्री त्रादिसहित स॰ त्र्याचुषु पूर्व थाए निवारे सचर जीवनता त्राश्री सन स्मादित्र तरहित ८ ध साषवष एपूर्वागत ८ ध साषगुणाकरिए तोएकपूर्वागधाए तेनासितरसाषकीमवर्ष स्पर्ने वपनसहस्त्र पू॰ पूर्व कोिन पु॰ प्रयक वेयकीध श्रं• श्रंतम्ह्रितं जन्जधन्य गद्दार-नुक्षिकहीत्र्याः त्रानुषानी। 3 ६ त्र्यतामुद्धत्तजहाराया ॥ ३६॥ पूर्वकामिपुर्धतत्तु बिनि जन्जसचरनी स्बिति

श्री ३६

ଷ୍ଟ୍ର

ે ગેં ઘદ્ધ का॰कायितिज॰ जलचर जीवनी त्रंतमुंक्तते ज० जघन्य ३३ थिक सन्पोतानीजलुनुरुनी जन्जलचर जीवने जलचरपएंह पांमवानी एत तो त्र्यांतुरुंपर्ने ७ ८ हवे तिर्येचपंचेंदी। जसचर लावयी कहें है गं॰ गंधवी रसथी फरसंथी सं संस्थान त्र्यादिदेश सन्हजारोगर्भे कुए ३ ए हर्वज वचर इब् १ त्र्यने परिसर्प ए बेप्रकारे येलचर क्लए चनपद च्यार प्रकारे जिने पूरणे गं•हायी प्रमुष गॅनीपद सं• नषसहित पगर्छ जेने इन्घोन **५० बंगकार** फूए रिसप

31.46

ध६५

એ. ઇદ્દ

इ॰ एकेकी जातमां हे ऋ॰ घरी मकारे क्रए हवे षेत्रयी यस लो॰ लोकनाएकदेसवित्नागेनेविषे तेसघला नन्नि ए० एक ह्या तिवारपंजी ते ने भेषाचरनी वो फंकहर्स वियाहिया वि॰ यितित्र्याश्रीत्र्यादिसहित त्र्यव त्र्यनादिनाचे त्र्यंतचे मीपण नयी सन् त्र्यतसहित्र पर्वापम ज्ञन्त्ऋषि कही त्र्यानुषानी यिति ये ब्लास बरनी ऋं श्र्यांतर्य क्षते जन जधन्य १८५ तिं श्रिएमी जन्जन्क षिकायिति कही तिव त्रएानी पन्पस्यापम ्पु पूर्वकिनि पु वृष्यकविषकी नवसर्ग ३ पट्युनुपर पृथक्त पूर्व को मित्रा ये॰ पेसचरेजीवन श्रीतमुङ्गते जन्जधन्य ८६ कान्कायस्त्रित त्र्यतरतासमत्नव । कासमण्त्म कास

ત્રા.3દ

ध६६

*भ*ह्य

विन्वांने थके सम्पोतानी धलचरनी काएपम धलचरने एतर्स त्रांतरं परेहवे धलचर चरनालेद सं । संस्वानधी त्र्यादिदेश फरसंथी तः त्रीजापंषीसः नाबनानु ढाकएमदीयुं होए तेची पाषपन्पंषीमनुष्य विज्पाषसदाए मोकसारह च चमाचीमप्रमुष लोवचिमी चमादि लोम पंषी प्रमुख्यपेत्रबाहिर जांपावाएपंषी न्यार प्रकारेंहवे षेचे वेत्रियी कहे बेलो लोकना एकदेस। ना सघलेखोकमांहेनथी. ए॰एकह्या विलागेनेविषे सद्यसा एना पंषीना कहसुं च॰ च्यारमकारें १०० हवे खेचरका स्थी कहे के सं॰ एपंषी छता तासवा त चल स॰ त्रांत सहितपण्ड त्र्याश्री श्रादि सहित्वे श्रानता बे स्रात्रहित सपद्यवसियाविय वासयाविया

AT.36

ધદ્

म्ह

आ। त्रानुषानी स्थिति ख॰ खेचरनी अं क्रांतरमुक्तर्त ज॰ जघन्य प॰ पस्योपमनो त्नाग श्रुक श्रयं व्यातमी लागकुए श्रा-३६ श्रान्वि इस्वहयराएा त्र्यसंबद्ध इमालव त्र्युव व्यसव्यातमात्मान प्रविपयोपमनात्माग स्व सन्दक्षश साव एतला सुपर व्यवका पुर प्रयक्त व त्रं न त्रंत मुद्धत अ जपन्य पर्वात्नवपामवानु ३० त्र्यागली कावकाल त्र्यनेतान न नत्र ए श्रातरम् जात अ॰ जधन्य विवलेदहजार इवे मनुष्यड्व्या के व गंधवी रसंयी फरसंवी सब् संस्वानना त्र्यादिदेश <u>ए। इ सहस्ससा ॥१९५॥</u> तन्ते सुजने कहतायका सुन्सालाती सन्एक समूबिममनुष्य ग॰ बाजागले जमनुष्य त॰ तेम मः मनुष्यबलदि छ अक करसएगादिकजिहा करबू नयीते **ध**६८

For Private and Personal Use Only

ક**્** કુ.

80

Ø € ते॰ तेमनुष्य संघवाए समूबिमनुष्यबतात्रमात्रा स॰ मनुष्यवतात्र्यात्री **ऋ•ऋ**तर त्र्यपस्वव वि॰ स्बितित्रप्राश्री द्वित्वे स॰ आदसाहत ब *अ*तसाहन <u>ब</u> प॰ पट्यापम त्रए **ভ** 300 पन पह्यापम नत्काष्ट्रक हो मनुष्यनी अ श्रुतमुक्कत जघन्य तिःत्रध ' ए सुधी सात लववर्गे एकेकी

मन् इ

BELLI

gga

द् द्सप्रकार लवनपति त्र्याव प्रकार व श्रमुहुद्ववनमाह इ ० बप्रकार यमानिकदवता तर्गतेम थ॰ थनितकुमार

શ3∂ <u>ગ</u>ુ.

रः राक्तस्य कि कि न्नर ५ किंग्केंपुरुष मन्महोरगं गं गंधर्व ट अन् अन्यान मकारे वाएन व्यानर पि॰ पिसाच१ ल्यूत २ जन्त ३ रक्तसार्वन्तरायकिपुरुसा । महारगायगयभ च वड्मा सू व सूर्य २ छ नन्ते त्र गव अह अवासी तारा समूह तेम विक्रमनुष्यषेत्रबाहिर चार मनुष्यखेत्रमाबन्या कः बारदवासाकना दवता वे वैमानिक देवला <u> इ व देमकार</u> कह्या पं पाचप्रकारे ज्यातिषी देवना जाएवा २००। पुरवहा निवय। वमाणियानुदवा कः नवग्रेवयकना त्र्यनं त्र्यनुत्तरविमाननादेवता तेकस्पातीत तेमजकः दवलाकनुपनाज दवता बारभकार कहा। जाएावा २१० ब्रह्म बाकना देवता सन सातक देवसा कना देवता स॰ सनतकु मारदेव लाकना देवता ३ माहंड ना देवता कना देवता तमज पा॰ प्राप्तना नमन्त्रा॰ स्रार्णादवता स्रन्युतना दवता ६०ए १२ दवसाकनावात श्रानतना त्रप्राच

श्र्य-३६

धउ१

*1*9ર

क॰ कस्पालीत जे बार देवसोकना देवता ते | ५० बेपकारे ने कह्या एतल त्राजा अवयकनादेवता मा मध्यविचाले त्रिकतुं है बहे वसु एतत् ते त्रीया ग्रेवेयक म् । मध्यविचालं त्रिकनो मः मध्यविचल माञ्जमामाञ्चमा चव नुक नुपरसा त्रिकनु मक मध्यविचाल एतले ए मार्थे वे नु नुपरला त्रिकनुं हे । हन्तो एतले सानमा प्रैवेयकना तले बग येवेयकना देवता नवारमाहात्रमाचव द्वता मातहा ज्ञानुपरसा त्रिकतु नु ने नुपरसु एतसे एमात्रैवे यकना ३० ए<u>एनिकार एप्रैवेपी वि वि अधनामा पहिला अमुत्तर</u>विमानना देवता वे वेजयत बीजा श्रवत्तरवीमानना देवता ज् जयंतनामात्रीजात्रमुन्तर विमानदेवता ऋ न्य्रपराजितनामाचीचा श्र सं स्वार्धि सि इदेवता पण् एपाचमकारे ऋनुत्तरिमानना देवता जयंतात्रप्राजिया ॥ २१६ ॥ उत्तरिमानदेश सम्बद्ध सिष्ट्रगाचेव

₹13€

ध9२

ક**ુ**ક

कहेंबे ए॰ कयापबी हवे कालविचार विव वितिन्मादि सहित साव जा अरा साब स॰ त्रातबेश साहित ब लोक लॅवनपति बसेंदादिकनी जन् अधन्यस्थिति दसहजार वरष पण्एस्याप **₹**२ 🛭 अः असुरकुनारद वे॰ वरजीन बाजात्र्यसुरकुमारदेवतादि त्र्यसारदषाच त ज॰ जघन्य द॰ दश हजारवरसनी

JF. IK

กลส์

न ધારુધ

प॰ पल्यपमनी ऋक्षिमीलाग प॰ पट्यापमना ए॰ एक पासन्वमन लाग ज्यात्वी सो॰ सोधर्म बचे पूर्ण सा॰ सागरनी नु ज जुद ऋष्टी वि॰ कही जघन्य यिति एव एक **ज**्जन्किष्टिक ही सा॰ जाऊरा सा॰ सगरा बे पस्यापम च क **अ॰ न**त्कृष्टि सा॰ फाफर पट्यापम सा॰ सागरसानना 774 जघन्यास्थात् ५० ब सागरनी साव फाफरा सार्सागरसातना **ज**•जन्काष्ट्रायात मा॰ माहड साह्यासागरास दं दस पूर्णी सार सागर मु नुत्कष् स्थिति द्वाप योकनीवेषेज्ञघन्य सा० फाफेरा ५० वे सागरनी मार माहद्देवलाकन धनुध **उक्का**सए। । व इ ल ब हियाङ्गानसागरा ॥ २३ ॥ दसचवसामसङ् ।

ઇ. ધ34

नु नत्रृष्टि यितिहोए क ब्रम्हदेव लोकने सा॰ जाजेरा ७० बेसागरनी सा॰ सागर २२८ विषे अघन्य गुक मृत्कृष्टि विति होए विषे जे॰ जघन्ययिति स॰ सातकदव च ॰ चनुद्रस सागरनी स॰ सात सागरनी २२्७ म॰ मोटा शुक्रनजन लोंके देवतानी जन्जघन्यदन दससागरनी स॰ सतर सागरनी च • चत्काष्ट्रायात 330 गहा सम भजह सतस्ससागराङ गुन नुक्षि स्विति हरि ऋ० ऋकार सागरनी सन्सहसारद्वाताक च॰ चनुदससागरनी ३१ जघन्या स्वीत सा॰ सागर ए ने गए। सनी नु अत्कृष्टा स्वात होए **ऋा**॰ऋाएाय जि जघन्यस्थिति सक् सतर सागरीपमनी सागरान्त्रन्या सोकनैविषेदेवतानी जघन्यथिति त्र्या श्राहार सागरनी ३३ वी॰ बीस सागरनी

શ**ે**ફ ગુ.

38 सा॰ सागर एकवीसनी सा॰ सागर एगुएवीसनी घन्ययिति ऋ• ऋच्युतद्वलाकन विषद्वतानीजघ बा॰ बावीस सागरनी नु॰ नत्काष्टास्वात हाए वीव वीससागरीपमनी न्यस्विति सा॰ सागरएकवीसनी ते॰ त्रवीस सागरनी यिति न्यास्त्रितिबा॰ वावीस सागरोपमनी बि॰ बीजायेवयकन विषे जिल चर चोवीस सागरनी नु नत्कृषि स्विति हीए ते॰ त्रेवीस सागरांपम पः पचवीस सागरनी जघन्य स्बिति 280 नः नाबास सागरापम ते॰ त्रेवीससागरापम प॰ पचवीस सागरीयम ज॰ जन्कारे स्थिति क्रए तब्त्री जार्य वयकन विष 30 तेवीससागरीवमा ॥३ए॥ पएविसिसागराइ। निक्रसिएविइलवे

For Private and Personal Use Only

श्र-३६

. Eeb

चोचात्रेवेयकनेविषे देवतानी जन्ज सान सागर पन्ववी सनी **ड- ब**वीस सागर घन्यिपिति प॰ पाचमा श्रेवयक ना जधन्य स्विति सा॰ सागर बदीसनी सा॰सा सा = सागरस ताबी सनी गु॰ गत्कृष्टि स्बेति होए सार सागसता वीसना गरत्रमग्वीसन्। उ० वहा श्रेवयक नोवेष ज = अधन्य २५३ न नत्कृषि स्विति होए र्धध सा॰ सागर नगए। त्रीसनी अन् त्रावमार्यवेयकनेविषे देवतानीजघन्य सिन् सागर नेगए। त्रीस तां तीस सागर **अ॰ नत्कृष्टि स्विति** होए स्बित नु॰ नुकुषि स्थिति देवतानीजघन्यतीः त्रीस सागरीपम सा॰ सागर एक त्रीसनी न्ग्नयम्यवयकनाव्ष

ยรร

9€. ਜੁ∙

च॰ च्यार त्र्यनुत्तरविमाननेविषेक्रिय १ वजयत २ जयंत ३ त्र्यपराजित । ज॰जया नुः नत्कृष्टि स्विति होए तत्रीस सागरनी विजयविमान श्रादिदेई न स्त्रा चषानी यिति सागर एक त्रीसनी मद मोटाविमान स॰ सर्वाय सिद्धनाविमाननेविषे वि॰ त्र्यान स्बिति एकही तानीकायास्वितिज्ञ अधन्य नत्कृष्टि कायस्विति फूर अन्याकालना छ॰ छत्कृष्टि देव रधए न्यात्स पर वि॰ डांमेपके स॰ स्त्रापणीदेवतानीकाया दे॰ देवतानु हो॰ होएएतम दवाए। हा श्रुवर अधन्य त्र्यातरु पन ऋा॰ वासपज्ञसजहन्नय

35:15

_{ମି} ଅନ୍

वा बेवरसथी नववर्ष तरोज ज ज च न्यत्र्यां तरुं परे अ अनुतरिमानना देव सं । संस्वान वि॰ लंदहजा ए॰ एदवताना त्नद व॰वए यका सवन्नग सं= संसारिक जीव त्र्यने सिंव सिद्धना इब एएरी प्रकार जीवक द्या जीव स्त्रा न्य्रजीवकु वेषकारं कह्यातीयकरी इन एएर प्रकारं जीव स्त्रा न्य्रजीवना । सा । गुरूसमी पंसाल सी ने सदहीन जावमजावय । लद संग्संजमनेविषेसाधुप्य तग दान्ता सङ्नावचर निवार पढी बन्चएगवर। साव बारित्र त्रान्स्री संवग तश इ॰ स्प्रागलं कहसंत्र्यनुक्रमंजा॰ तपरूपिया। ऋ॰ स्प्रापणाि स्त्रातमा स॰ दूवलो कर द्वयी शरीर लावधीकषायः। बान्वारवरसला

ऋ ३६

કુ છ

*ब*ट.

सं । एक वरसनी मन मध्यसंसेषना बन बमासनी जघन्य संसेषना पश्पहिला वरस च्यार वि॰ घए प्रकारतपकर बि॰ बीजीवरस ज्यार लगी ए॰ एका तरनपवास करीनस० सवनरब ननु सवदर इत बिस करे लगी कद्वसंववर्णव तः तपत्राचे र न हे तः तिवारपंग साढा १० वर्षपंग सः बमाससगी विः बवुत्रावमादिक પ (ઇ वर्षने विषे जपरला बमास्त्रगा पकरें ज्या । त्र्यांविसकरे ते कोनिसहि २६० ॥ तपकरे २६० कं एतपकरी संव्यकवर्षालगं मुब्सांचु माव मास खमए। करवे ऋषिकमास पमए। करवे करी ततप कहिए

बा ३६

517-

न् धट१

थि कंदपी देवता थाए स्ना॰ मंत्रादिक प्रज्ञनेते सेवक देवता थाए कि॰ केविंदि मो॰ ऋज्ञानपणानी लावना ऋग्रावनिरंतरऋपि । घए।।का सलगे रोष राषे ने कोइक कष्ट कींघायी ऋसुरकुमारनी इब एप्टर्गति एए। । मब्मरएाने ऋवेसरे एवी करलीधकी छरनि यांगी तेलापी ए प्रसाति कही मरणांभिविराहियाहोति ॥ २६२॥ मिन्मियात्ववरसननुपरे रातासः नियापासहित क्रएहिं ज ते ने जीवनवली इलिल दोधी बीज ६३ स सत्यक्त्वने विषे र राती वे सु र सुलत ते ने ने जीवने होए बांध बीज ६७ मि । मि थियात्वना दरसन नु परे राता हे सन नियाए। सहित कि व कृष्ण सेस्या |नापरिएगमनामो॰ध| इ॰ इए।प्रकारेंजेमस्जीव तै॰तेजीवनेवली ७०दोहेसी पुर्लेलबी॰ बीधीबीज जि॰ जिनवचननेविषे ऋ॰राते तेसिंपुणुडुह्महाबोहि ॥२६५ ॥व्यजिएवयए। त्र्राप

धद

धट्ट इट्ट निव सि छा तमा जेम करवो कह्यो है तेमजे करे लाव ला। अविमिट्यात्व रहिपया मह जरहित अविसेसर ब॰ घपा आगमासदान जैपीय स्त्राजी चता जि॰ जिननावचन जे॰ जेरूमाकरीने जाए। ६९ हास्य जपज नवा बाल नवा विषय विकार तः तैवा न्त्राचार सः तैना स्वत्नाव इसवा सर्थो वि विकिपा कहते। पमान तिपको पनपरजीवने कर

ਚ :३

में मंत्रप्रज्ञा जी वसीकरण लावनाकरणीकरे.६ए मताजागकाका साता जपजवाने हते रव ती पादिक ने काइ प्रयुज ना॰ श्वतज्ञानादिपाचज्ञानना त्र्यवर्षा बोलहार के॰ श्रवएविदिना बालए। हार ए चतुर्विवसंघना त्र्यवए वादना मा॰ मायावतत्रप्र॰ त्रवर्षवादन बीसएाहार बिलिए।हार सा॰ साधुना ऋवगए।नी अ॰ घड़ाकाल लगे री॰ रिसनी विस्तारक हरीस लावना करपा कर ७२ स॰ तरवारप्रमुपरास्त्र गान्यह ऋसुरकुमार यावाना पञ्जवना वएाहार

₹¥.3 E.

803

पंसीमरे इ॰ एपूर्व कह्यात पा॰ प्रगटकी धार्व तेऐं

For Private and Personal Use Only

